Postal Regn No.Jaipur City/007/2018-20 || पश्चिमी राजस्थान की आवाज || मूल्य : दो रुपये

दैनिक जलते दीप

संस्थापक स्व. माणक मेहता

www.dainikjaltedeep.com वर्ष: 22 अंक: 344 जयपुर, शनिवार 11 जनवरी, 2020 कुल पृष्ठ: 8 Email : news@dainikjaltedeep.com

चौखी बात

आज के परिणाम अतीत के कर्मो से तय होते है। अपने भविष्य को बदल पाने के लिए आज के फैसलों को बदले

अज्ञात

।। दसवां वेद ।।

दुनिया रंग अनूप है,
दुनिया रूप अनूप।
कद ही मन सूं ऊतरै,
कद ही लागै चूंप।।

(अर्थ व कथा पेज चार पर)

एक नजर

जयपुर एयरपोर्ट पर यात्री से 5 किलो सोना बरामद

जलतेदीप कासं, जयपुर। अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर शुक्रवार को डायरेक्ट्रेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलिजेंस विभाग ने सोने की तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। डीआरआई ने एयरपोर्ट पर तस्करी कर लाया जा रहा 5 किलो सोना पकड़ा है। इस कार्रवाई में एक विदेशी नागरिक को पकड़ा गया है। पकड़े गए सोने की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में दो करोड़ रुपए से ज्यादा आंकी जा रही है। डीआरआई के सूत्रों के मुताबिक पकड़ा गया यात्री दक्षिण कोरिया का रहने वाला बताया जा रहा है। दक्षिण कोरिया से ये यात्री पहले अंतरराष्ट्रीय विमान सेवा से अहमदाबाद आया। अहमदाबाद से यह निजी कंपनी की घरेलू फ्लाइट से जयपुर एयरपोर्ट पर पहुंचा। जयपुर एयरपोर्ट पर डीआरआई को उसके पास भारी मात्रा में सोना होने की जानकारी मिल चुकी थी।

पाकिस्तान ने किया संघर्षविराम का उल्लंघन, दो पोर्टरों की मौत

एजेंसी, श्रीनगर। जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले में पाकिस्तानी सेना ने संघर्षविराम का उल्लंघन किया। इस दौरान भारी गोलाबारी की। गोलाबारी की चपेट में आने से सेना के पांच पोर्टर घायल हो गए। जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं उपचार के दौरान दो पोर्टरों की जान चली गई। घायल अन्य तीन पोर्टरों का उपचार चल रहा है। इसके साथ ही भारतीय सेना पाक की इस नापाक हरकत का माकूल जवाब दे रही है। शुक्रवार को पाकिस्तानी सेना ने पुंछ के गुलपुर सेक्टर में संघर्षविराम का उल्लंघन कर भारी गोलाबारी की। बता दें कि पाकिस्तान आतंकियों को घुसपैठ कराने की फिराक में जुटा है।

ईडी ने जब्त किया चंदा कोचर का घर

एजेंसी, नई दिल्ली। वीडियोकॉन घूस मामले में बर्खास्त हुई आईसीआईसीआई बैंक की पूर्व सीएमडी चंदा कोचर की मुश्किलें खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। ईडी ने पीएमएलए के तहत चंदा और उनके पति दीपक कोचर के घर को जब्त कर लिया है। इसके साथ ही पति के 78 करोड़ रुपये के शेयर भी जब्त किए गए हैं। कोचर दंपत्ति के पास फिलहाल 900 करोड़ रुपये से अधिक की चल-अचल संपत्ति है।

जम्मू-कश्मीर में पाबंदियों की समीक्षा का निर्देश

एजेंसी, नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में इंटरनेट समेत कई पाबंदियों के खिलाफ दायर याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को फैसला सुना दिया है। शीर्ष अदालत ने फैसले में कहा है कि जम्मू कश्मीर सरकार एक सप्ताह के भीतर सभी प्रतिबंधात्मक आदेशों की समीक्षा करे।

कोर्ट ने प्रशासन से अस्पतालों, शैक्षणिक संस्थानों जैसी आवश्यक सेवाएं प्रदान करने वाली सभी संस्थाओं में इंटरनेट सेवाओं को बहाल करने के लिए कहा। साथ ही जम्मू-कश्मीर प्रशासन से प्रतिबंध लगाने के सभी आदेशों की एक हफ्ते में समीक्षा करने और उन्हें सार्वजनिक करने के लिए कहा।

फटकारो...

छात्रसंघ अध्यक्ष आइशी घोष समेत 9 की फोटो उजागर

जेएनयू हिंसा : पुलिस ने जारी किए आरोपियों की पहचान

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके मीडिया को बताए सबूत

जलतेदीप ब्यूरो, दिल्ली

जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) में गत रविवार रात को हिंसा के मामले में दिल्ली पुलिस ने शुक्रवार को 9 लोगों की तस्वीर जारी की है। इसमें जेएनयू छात्र संघ की अध्यक्ष आइशी घोष का भी नाम है। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बताया कि जिनकी पहचान हुई है उनमें चुनचुन कुमार, पंकज मिश्रा, योगेंद्र भारद्वाज, प्रिया रंजन, विकास पटेल, डोलन, आइशी घोष हैं।

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच के डीसीपी जॉय टिर्की ने कहा कि इस मामले में किसी भी संदिग्ध को हिरासत में नहीं लिया गया है, लेकिन जल्द हम उनसे पूछताछ शुरू कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि हिंसा को लेकर तीन केस दर्ज किए गए हैं और हम उनकी जांच कर रहे हैं। वहीं, तस्वीर जारी होने के बाद छात्र संघ अध्यक्ष आइशी घोष ने कहा कि मुझे कानून-व्यवस्था पर पूरा भरोसा है कि जांच निष्पक्ष होगी। मुझे न्याय मिलेगा। लेकिन दिल्ली पुलिस पक्षपात क्यों कर रही है? मेरी शिकायत एफआईआर के रूप में दर्ज नहीं की गई है। मैंने कोई मारपीट नहीं की है। उन्होंने कहा कि दिल्ली पुलिस अपनी जांच कर सकती है। मेरे पास यह दिखाने के लिए सबूत भी हैं कि मुझ पर कैसे हमला किया गया।

क्राइम ब्रांच के डीसीपी जॉय टिर्की ने कहा कि मामले की जांच को लेकर कई तरह की गलत जानकारी फैलाई जा रही है। एक जनवरी से लेकर 5 जनवरी तक रजिस्ट्रेशन होना था। हालांकि एसएफआई, एआईएसए, एआईएसएफ और डीएसएफ छात्र संगठनों ने छात्रों को रजिस्ट्रेशन करने से रोका। रजिस्ट्रेशन करने वाले छात्रों को धमकाया जा रहा था। इसके बाद विवाद लगातार बढ़ता गया और पांच जनवरी को पेरियार व साबरमती हॉस्टल के कुछ कमरों में हमला किया गया। जॉय टिर्की ने कहा कि जेएनयू में हिंसा करने के लिए व्हाट्सऐप ग्रुप भी बनाए गए।

नकाबपोश जानते थे कि उनको किस-किस कमरे में जाना है। हिंसा के सीसीटीवी फुटेज नहीं मिले हैं। हालांकि हमने वायरल वीडियो के जरिए आरोपियों की पहचान की है। इसको लेकर हमने 30-32 गवाहों से भी बातचीत की है।

सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा- बड़ा कदम उठाये सरकार, बंद कर दे जेएनयू को

वरिष्ठ भाजपा नेता तथा राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने शुक्रवार को एक बार फिर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) को बंद करने का सुझाव दिया है।

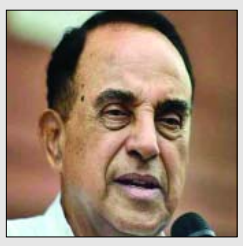

स्वामी ने अहमदाबाद के थलतेज में एक निजी विश्वविद्यालय के कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से कहा कि सरकार को जेएनयू को लेकर बड़ा कदम उठाना चाहिए। इसकी सफाई के लिए इसे कम से कम दो साल के लिए बंद कर देना चाहिए और जब यह शुरू हो तो इसका नाम बदल कर सुभाष चंद्र बोस विश्वविद्यालय कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि बंद करने से पहले अच्छे छात्रों को दिल्ली विश्वविद्यालय या अन्य में स्थानांतरित कर देना चाहिए तथा हुल्लड़बाजों को बाहर कर देना चाहिए। स्वामी ने कहा कि नेहरू के नाम पर पहले से ही कई संस्थान है इसलिए जेएनयू का नाम बदल दिया जाना चाहिए।

जावड़ेकर ने कहा- झूठ का पर्दाफाश हुआ

दिल्ली पुलिस की ओर से जारी संदिग्धों की तस्वीर पर केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर और स्मृति ईरानी का बयान सामने आया है। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि पुलिस सच्चाई को सामने लाई, यह स्पष्ट है कि वामपंथी छात्र संगठन हमले में शामिल थे। जावड़ेकर ने कहा कि जानबूझकर इसका दोष एबीवीपी, बीजेपी और अन्य पर मढ़ा जा रहा था, जो कि सच नहीं था। जावड़ेकर ने कहा कि भाकपा, माकपा, आप जैसे दलों को लोकसभा चुनाव में खारिज कर दिया गया, अब वे अपने निहित स्वार्थों के लिए छात्रों का उपयोग कर रहे हैं। जेएनयू के छात्रों को अपना आंदोलन समाप्त कर शैक्षणिक सत्र शुरू होने देना चाहिए वहीं केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा कि दिल्ली पुलिस द्वारा साक्ष्य जारी किए जाने के बाद जेएनयू में वाम मंसूबे बेनकाब हुए, वाम दल राजनीतिक लड़ाई के मैदान के रूप में परिसर का उपयोग कर रहे हैं।

राजस्थान में भी टैक्स फ्री होगी 'छपाक' फिल्म! सीएम गहलोत ने दिए संकेत

जलतेदीप कासं, जयपुर

बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण की फिल्म छपाक शुक्रवार सिनेमाघरों में रिलीज हो गई। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और पुडुचेरी के बाद अब यह फिल्म राजस्थान में टैक्स फ्री हो सकती है। मुख्यमंत्री गहलोत ने एयरपोर्ट पर मीडिया से बात करते हुए यह बात कही है। सीएम गहलोत ने बातचीत में फिल्म को लेकर यह संकेत दिया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार भी इस बारे में जल्द ही फैसला लेगी। इससे पहले महिला एवं बाल विकास मंत्री ममता भूपेश ने भी फिल्म को राज्य में टैक्स फ्री करने के लिए पत्र लिखा था।

तीनों ही राज्यों में कांग्रेस की सरकार : दरअसल, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और पुडुचेरी राज्यों ने फिल्म छपाक को टैक्स फ्री कर दिया है। तीनों ही राज्यों में कांग्रेस की सरकार है। ऐसे में प्रदेश की गहलोत सरकार की ओर से भी फिल्म को टैक्स फ्रह घोषित किये जाने पर सभी की नज़रें हैं।

गहलोत सरकार का बड़ा फैसला

प्रदेश में नहीं होगी शराबबंदी, चलेगा जागरूकता अभियान

जलतेदीप कासं, जयपुर

गहलोत सरकार प्रदेश में शराबबंदी नहीं करेगी। शराबबंदी के लिए बनाई गई हाई पावर कमेटी के अध्यक्ष ऊर्जा मंत्री डॉ. बी.डी कल्ला ने इसको लेकर प्रदेश में जारी तमाम अटकलों पर विराम लगा दिया है। हाई पावर कमेटी की बैठक के बाद मंत्री डॉ. कल्ला ने कहा कि सरकार का प्रदेश में शराबबंदी लागू करने का कोई इरादा नहीं है। उन्होंने कहा कि शराब के दुष्परिणामों को लेकर प्रदेशभर में जन जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।

उच्चस्तरीय समिति की बैठक

कैबिनेट मंत्री डॉ. बी.डी कल्ला की अध्यक्षता में शराबबंदी को लेकर गठित उच्च स्तरीय कमेटी की शुक्रवार को सचिवालय में बैठक हुई। बैठक के बाद डॉ. कल्ला ने कहा कि गुजरात और बिहार में पूर्ण शराबबंदी लागू है, लेकिन गुजरात में शराबबंदी के अनुभव ठीक नहीं है। वहां पर शराब आसानी से उपलब्ध है। हालांकि फिर भी विभाग और एनजीओ के पदाधिकारी गुजरात और बिहार जाकर स्थिति देखेंगे। लेकिन शराबबंदी की कोई संभावना नहीं है। इसमें एनजीओ का सहयोग भी लिया जाएगा।

छोटे होटलों और भवनों को भी दिया जाएगा शराब का लाइसेंस

नई शराब नीति पर डॉ. कल्ला ने कहा कि ऐसे हैरिटेज होटल और ऐतिहासिक भवन जो छोटी सड़कों पर स्थित हैं और वहां विदेशी मेहमान जाते हैं उन होटलों और भवनों को भी शराब का लाइसेंस दिया जाएगा। इसके अलावा कोई नई दुकान खोलने की अनुमति नहीं दी जाएगी। बैठक में चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा, एससीएस राजीव स्वरूप, आबकारी आयुक्त विष्णु चरण मलिक समेत शराबबंदी मुहिम से जुड़ी पूजा छाबड़ा शामिल रही।

पूर्व विधायक गुरुशरण छाबड़ा ने किया था अनशन : उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती बीजेपी सरकार में पूर्व विधायक गुरुशरण छाबड़ा ने प्रदेश में शराबबंदी की मांग को लेकर आमरण अनशन शुरू किया था और बाद में उनकी मौत हो गई थी। गुरुशरण छाबड़ा की मौत के बाद राज्य में शराबबंदी आंदोलन का बीड़ा उनकी पुत्रवधू पूजा छाबड़ा ने उठाया।

श्वेता तिवारी हत्याकांड का पर्दाफाश

इंडियन ऑयल के मैनेजर ने ही करवाई पत्नी और बेटे की हत्या

जलतेदीप कासं, जयपुर

पुलिस ने शहर की पॉश सोसाइटी यूनिक टॉवर में हुए दोहरे हत्याकांड का खुलासा कर दिया है। इंडियन ऑयल के मैनेजर रोहित तिवारी की पत्नी श्वेता और उसके 21 महीने के बेटे श्रीयम को मंगलवार को बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया गया था। कमिश्नर आनंद श्रीवास्तव ने बताया कि पूछताछ में रोहित ने जुर्म कबूल कर लिया।

उसने बताया कि पत्नी से छुटकारा पाने के लिए साजिश रची। रोहित ने नए सिरे से जिंदगी शुरू करने के लिए पत्नी-बेटे की हत्या की साजिश रची थी। इसके लिए उसने एक जानकार के साले को हत्या के एवज में पैसों का लालच दिया। 3 दिन जांच के बाद शुक्रवार को पुलिस ने मैनेजर और हत्याएं करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक, रोहित ने अपने परिचित के साले सौरभ उर्फ राजसिंह से श्वेता और श्रीयम की हत्या करवाई। साजिश के तहत सौरभ ने फ्लैट में श्वेता और श्रीयम की हत्या की। फिर रोहित ने पुलिस के सामने बेटे के अगवा होने का नाटक किया। उसने गुमराह करने के लिए हत्यारे की ओर से बेटे को छोड़ने के एवज में 30 लाख रु. फिरौती मांगने की झूठी कहानी गढ़ी। इसी दौरान श्रीयम का शव सोसाइटी के पीछे जंगल में मिला। इसके बाद भी फिरौती के लिए मैसेज आने से पुलिस का शक रोहित पर गहराता गया। बाद में उससे सख्ती से पूछताछ और साइबर सेल से मिली जानकारी के आधार पर वारदात की गुत्थी सुलझ पाई। रोहित का पत्नी से मनमुटाव दिनों-दिन बढ़ता जा रहा था। श्वेता के पिता ने भी पुलिस को बताया था कि 5 जनवरी को दोनों (श्वेता-रोहित) के बीच मारपीट हुई थी। इस दौरान रोहित ने पत्नी को मारने की धमकी दी थी। पुलिस को शुरुआत से ही रोहित पर साजिश रचने का संदेह था।

जुबेर खान के बेटे को आर्शीवाद देने आई प्रियंका गांधी

जलतेदीप कासं, जयपुर

कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी शुक्रवार को जयपुर आई। प्रियंका गांधी कांग्रेस के पूर्व विधायक जुबेर खान व रामगढ़ की विधायक जाहिदा जुबैर के बेटे के विवाह कार्यक्रम में शिरकत करने जयपुर आई।

प्रियंका, विशेष विमान से जयपुर पहुंचीं। जुबैर खान के बेटे की शादी होटल रामबाग पैलेस में थी। प्रियंका स्टेट हैंगर से सीधे रामबाग पहुंची। वहां शादी समारोह में शिरकत करने के बाद वे राजस्थान के उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गईं। स्टेट हैंगर पर प्रियंका की आगवानी के लिए प्रदेश कांग्रेस प्रभारी अविनाश पांडे, एआईसीसी सचिव धीरज गुर्जर, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट, चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा, उद्योग मंत्री परसादी लाल मीणा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री रमेश मीणा, परिवहन मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, सरकारी मुख्य सचेतक डॉ. महेश जोशी, मंत्री हरीश चौधरी, मंत्री टीकाराम जूली, खेल मंत्री अशोक चांदना सहित कई मंत्री और कांग्रेस पदाधिकारी पहुंचे।

प्रियंका गांधी का हुआ भव्य स्वागत : स्टेट हैंगर पर विशेष विमान से उतरने के बाद प्रियंका गांधी का कांग्रेस कार्यकर्ताओं जोरदार स्वागत किया गया।

गहलोत से नहीं संभल रही कानून व्यवस्था : कटारिया

जलतेदीप कासं, जयपुर

राजस्थान में वर्ष 2019 में बढ़े आईपीसी अपराधों के आंकड़ों को लेकर पूर्व गृहमंत्री और नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से सवाल पूछा है। एक प्रेस वार्ता में कटारिया ने कहा कि जब मैं गृहमंत्री था, तब मुझ पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत आरोप लगाते थे कि मैं एक चपरासी का भी ट्रांसफर नहीं करवा सकता हूं।

लेकिन अब मैं यह सवाल सीएम गहलोत से पूछ रहा हूं कि अब तक वह सर्व अधिकार संपन्न है, तो क्यों प्रदेश में 31 फीसदी आईपीसी अपराधों में वृद्धि वर्ष 2019 में हो गई।

कटारिया ने मुख्यमंत्री को सलाह दी है कि कानून व्यवस्था को लेकर रोजाना मॉनिटरिंग की जरूरत होती है, इसलिए उन्हें एक गृह राज्यमंत्री अलग से किसी को बनाना चाहिये। जिससे कि रोजाना कानून व्यवस्था की मॉनिटरिंग हो सके। उन्होंने कहा कि जयपुर जिला अपराधों के मामलों में टॉप पर आ गया है। उन्होंने कहा कि ऐसा पहली बार इतिहास में हुआ कि किसी सरकार के आते ही एक वर्ष में इतने अपराधों में वृद्धि हो जाये।

कटारिया ने कहा कि जब वह पूर्ववर्ती वसुंधरा सरकार में गृहमंत्री थे, तब वह रोजाना कानून व्यवस्था की मॉनटरिंग करते थे, साथ ही थानों का ग्रेडिंग सिस्टम था। लेकिन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत गृह विभाग को छोड़कर अन्य कार्यों में लग रहते है। उन्होंने कहा कि आंकड़ों के अनुसार तो राजस्थान डकैती और रेप के मामले में रिकॉर्ड बना रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान अब अपराधों के मामलों में पूरे देश में दूसरे पायदान पर पहुंच गया है।

बलूचिस्तान की मस्जिद में धमाका, 10 की मौत, 16 घायल

एजेंसी, क्वेटा। बलूचिस्तान के शहर क्वेटा के गौसाबाद इलाके में शुक्रवार को एक मस्जिद के भीतर विस्फोट हो गया। इस विस्फोट में एक पुलिस अधिकारी समेत 10 लोगों की मौत हो गई, जबकि 16 लोग घायल बताए जा रहे हैं। विस्फोट में मारे गए पुलिस अधिकारी की पहचान पुलिस उपाधीक्षक हाजी अमानुल्लाह के रूप में हुई है। अन्य लोगों की अभी पहचान नहीं हुई है। बलूचिस्तान के आईजी पुलिस अमजद बट्ट ने बताया कि मगरिब की नमाज के बाद मस्जिद में विस्फोट हुआ। उन्होंने कहा कि डीएसपी अमानुल्लाह और मस्जिद के मुअज्जिन उन लोगों में शामिल हैं जिन्होंने विस्फोट की घटना में शहादत पाई है।

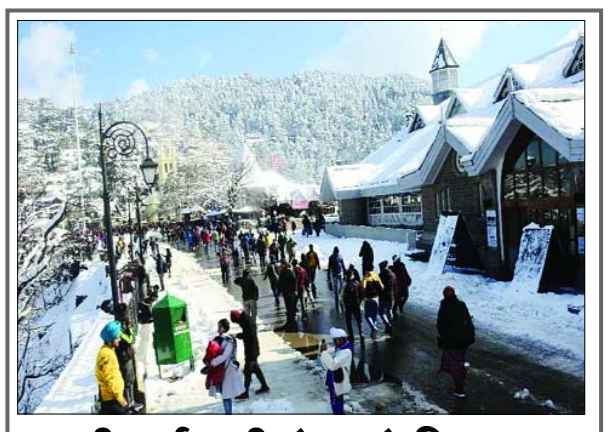

भारी बर्फबारी से आधे हिमाचल में व्हाइट कर्फ्यू जैसे हालात

हजारों पर्यटक फंसे, तीन की मौत

एजेंसी, शिमला

हिमाचल में भारी बर्फबारी से आधे हिमाचल में 48 घंटों से व्हाइट कर्फ्यू लगा हुआ है। हजारों पर्यटक प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फंसे हुए हैं। एक व्यक्ति की ठंड से और एक की फिसलकर गिरने से मौत हो गई। दो दिनों से शिमला, कुल्लू, चंबा, मंडी के कई इलाकों के अलावा लाहौल और किन्नौर जिले देश-दुनिया से कटे हुए हैं। परिवहन, बिजली और पानी सेवाएं ठप हैं।

राजधानी शिमला समेत बर्फीले क्षेत्रों में सड़कें शीशा बनी हैं। पेड़ गिरने से बिजली के सैकड़ों ट्रांसफार्मर जल गए। बर्फबारी के बाद खिली धूप ने लोगों की दुश्वारियां और बढ़ा दी हैं। पाइपों में पानी जमने से पेयजल संकट गहरा गया है। राज्य में पांच एनएच समेत 835 से अधिक सड़कें बंद हैं। शिमला जोन सबसे ज्यादा 642, मंडी 139 और कांगड़ा जोन की 49 सड़कें ठप पड़ी हैं। लोक निर्माण विभाग के नेशनल हाईवे विंग के साथ बीआरओ मार्ग बहाली को सड़कों पर उतर गया है।

कुल्लू-मनाली, शिमला-रामपुर, रामपुर-किन्नौर, चंबा-भरमौर और औट-बंजार-सैंज नेशनल हाईवे पर यातायात ठप रहा। राजधानी शिमला का शुक्रवार को भी यातायात बुरी तरह बाधित है। शहर की मुख्य सड़क पर बसों की आवाजाही अभी भी बहाल नहीं हो पाई है। बीसीएस, खलीनी की ओर बसों की आवाजाही आईएसबीटी टूटीकंडी से हो रही है।

कुल्लू जिले में करीब 350 बिजली के ट्रांसफार्मरों के साथ करीब 100 सड़कें और डेढ़ दर्जन पेयजल स्कीमें जाम हो गई हैं। परिवहन सेवाएं भी पटरी पर नहीं लौटी हैं।

भारत के लिए अमेरिकी एजेंसी की रिपोर्ट **दुनिया की पांच बड़ी भू-राजनीतिक चुनौतियों में भारत**

2020 में दुनिया के बड़े जोखिमों में भारत, मोदी के फैसलों से बड़ी चुनौती

एजेंसी, नई दिल्ली

साल 2020 की शुरुआत दुनिया में बड़ी हलचलों के साथ हुई है। फिर चाहे अमेरिका और ईरान के बीच विवाद हो या फिर भारत में लगातार हो रहे सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन। 2020 में दुनिया के सामने कौन-सी बड़ी चुनौती होंगी इनको लेकर अमेरिका के एक ग्रुप ने रिपोर्ट जारी की है। इनमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी भू-राजनीतिक जोखिम की लिस्ट में शामिल हुआ है। जिसमें देश में सांप्रदायिक एजेंडे, गिरती अर्थव्यवस्था को आधार बनाया गया है। अमेरिकी एजेंसी हर साल इस तरह की लिस्ट जारी करती है। यह अमेरिका की सबसे प्रभावशाली रिस्क असेसमेंट कंपनियों में से एक है। भारत को लेकर इस रिपोर्ट में कहा गया है, 'नरेंद्र मोदी ने अभी तक अपना दूसरा कार्यकाल सामाजिक मुद्दों पर बिताया है, जबकि देश आर्थिक एजेंडा कहीं पीछे छूट गया है। साल 2020 में इसका असर देखने को मिलेगा, ना सिर्फ विदेश नीति बल्कि आर्थिक नीति पर भी ये असर छोड़ेगा।'एजेंसी में लिखा है, 'मोदी सरकार ने बीते दिनों में जम्मू-कश्मीर के स्पेशल स्टेटस को हराया, नॉर्थ ईस्ट में घुसपैठियों को लेकर सख्ती दिखाई, धर्म के आधार पर शरणार्थियों को नागरिकता दी। और इन सभी फैसलों के पीछे सबसे बड़ा हाथ देश के गृह मंत्री अमित शाह का है।'

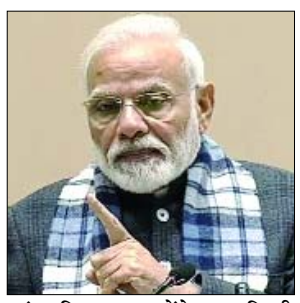

रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि आने वाले साल में देश में धार्मिक मामलों पर राजनीति गर्माएगी, जिसका असर निचले स्तर तक दिखेगा। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर, आर्थिक मोर्चे पर भी सरकार के सामने कई चुनौतियां आएंगी। भारत की इस तस्वीर का असर दुनिया में पड़ेगा और विदेश नीति को घाटा होगा। इस रिपोर्ट में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिंदू राष्ट्र के एंजेडे को लेकर भी बात की गई है। बता दें कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, वहां पर पाबंदियां लागू करना, इसके बाद नागरिकता संशोधन एक्ट पर हो रहे विरोध ने दुनियाभर में सुर्खियां बटोरी हैं।

रिपोर्ट में टॉप 5 बड़ी राजनीतिक चुनौतियां

1. अमेरिका पर कौन राज करेगा?
2. अमेरिका और चीन में टेक्नोलॉजी की लड़ाई
3. अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड वॉर
4. क्लामेट चेंज और उसमें लेफ्ट क्रांति का रोल
5. भारत का मोदीमय होना

आओ-सब मिलकर रोएं...

गजब है भाई। लोगों का दिमाग कहां-कहां चला जाता है। कई लोग सकारात्मक बातों की ओर दिमाग लड़ाते हैं। ज्यादातर लोगों का दिमाग उलटा चलता है। उन का दिमाग कुबद किए बिना नहीं रहता। 'आओ सब मिलकर रोएं' को क्या कहें। इस पर दिमाग लड़ाने को क्या कहा जाए। कोई हंसा रहा है- कोई रूला रहा है। कोई हंस रहा है-कोई रो रहा है। हंसते-रोते जिंदगी कट जाती है। शहर की एक हथाई पर आज उसी के चर्चे हो रहे थे।

हंसना और रोना जीवन के अहम हिस्से है। सिक्के के दो पहलू हैं। जिंदगी दुखों से भरी रेल है जिस में खुशी के स्टेशन लगते हैं। आप ने सफर जरूर किया होगा। यकीनन किया होगा। इस की अपनी प्रक्रिया है। पहले रिजर्वेशन करवाओ। तत्काल में खरीदो या फिर एनटेम पर खरीदो फिर ट्रेन में बिराजो। रिजर्वेशन कंफर्म है तो कूपा ढूंढो। एस-टू-कहां पड़ेगा। एस-फॉर कहां लगेगा। कूपा मिलने के बाद सीट और बर्थ की तलाश। मिलने पर सामान की ठुंसाई। ट्रेन चलने में समय हो तो छोड़ने आए रिश्तेदारों के साथ प्लेटफार्म पर गपशप और टेम नहीं हो तो सीट पर जमाई। ट्रेन रेंगती है फिर धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ती है। ठहराव वाले स्टेशनों पर तय समय तक रूकती है फिर चल देती है। ज्ञानी-विज्ञानी-मनोविज्ञानी ने रेल की तुलना जिंदगी से की। इस के माने ये कि जैसे रेल थोड़ी देर के लिए स्टेशन पर रूकती है वैसे खुशी के क्षण आते हैं। जीवन का ज्यादातर हिस्सा कैसे गुजरता है बताने की जरूरत नहीं।

हम तो कहें कि मानखा जमात को हंसी-खुशी के साथ जिंदगी गुजारनी चाहिए। जिंदा क्यों हैं कि मौत नहीं आती। मौत आनी है तभी आएगी। जीवन हंसते-हंसते गुजारने में हर्ज कैसा। जीना ही है तो आन-बान-शान से जीएं। सिर उठा के जीएं। आत्मसम्मान से जीएं। हंसते-मुस्कराते जीएं। ऐसे जीने का मजा ही कुछ और है।

gda.jaltedeep@yahoo.com

जानने वाले जानते हैं कि कहने और जीने में खासा फरक हैं। हमने तो कह दिया कि हंसते-हंसते जीओ। हम ये भी जानते हैं कि जिन लोगों पर दुख-तकलीफ का पहाड़ पड़ा हो उस से हंसने की उम्मीद कैसे की जा सकती है। वो किस्मत को कोसते हैं। नसीब का रोना रोते हैं। उन के पास रोने के कई कारण हैं। किसी को रोने का शौक नहीं, ना कोई जान बूझकर रोना चाहता है। कारण रूला देते हैं। कुछ कारण घरेलु-कुछ बाहरी। महंगाई का रोना। भ्रष्टाचार का रोना। व्यवस्था का रोना। असफलता का रोना। घर की समस्याओं का रोना। रोजगार का रोना। जुदाई का रोना। मानखे के दुनिया में आने से लेकर अंतिम यात्रा तक रोना-धोना चलता रहता है। बच्चा दुनिया में आते ही रोना शुरू हो जाता है। नहीं रोए तो हलकी सी चपत मार कर रूलाया जाता है। उस के बाद से शुरू हुआ क्रम ताजिंदगी चलता रहा है। रामप्यारा होने के बाद परिजनों को रोना पड़ता है।

रोना-रूलाई भांत-भांत की। कोई सुबक-सुबक कर रोता है। कोई भंभाड़े मार कर कोई ठुसके मार कर रोता है। कोई अकेले में। कोई सार्वजनिक रूप से रोता है। प्रियजन फौत हो जाए तो रूलाई सस्वर-'ओ दा' जी... ओ..।' कोई लोकप्रिय नेता गुजर जाए तो पूरे देश की आंखें भीग जाती हैं। गमी के समय आने वाली महिलाओं की रूलाई सब से अलग। कई बार खुशी में रूलाई फूट पड़ती है। हजारों तरह के ये होते हैं आंसू। अगर दिल में गम हो तो रोते हैं आंसू। खुशी में भी आंखें भिगोते हैं आंसू।

हंसने-रोने के बीच लोचे भी नजर आते हैं। कोई कहता है-'रोते-रोते, हंसना सीखो, हंसते-हंसते रोना..।' कोई कहता है-'किस-किस को याद रखें, किस-किस को रोएं..आराम बड़ी चीज है, मुंह ढक के सोएं..।' समझ में नहीं आता कि बंदा क्या करे। हंसते-हंसते रोए या रोते-रोते हंसे या फिर मुंह ढक के सो जाए।

विशेषज्ञ मानते हैं कि जीवन में रोना उतना ही जरूरी है जितना हंसना। खाली-पीली मीठा खाओगे तो गले में 'गुचळ्की' आ जाएगी। लिहाजा नमकीन भी जरूरी है। जिंदगी भी वैसी। कभी खुशी कभी गम। शायद इसी वजह से 'आओ मिल कर रोए' की शुरूआत की गई। पहले सामूहिक ठहाके गूंजते थे-अब सामूहिक रूदाळी का बिस्मिल्लाह हो गया।

हमने लाफ्टर थैरेपी के बारे में सुन रखा है। मानखे पार्क में जुटकर जोर-जोर से हंसते हैं। ठहाके लगाते हैं। हा..हा..हा..के सुर बिखेरते हैं। कई स्थानों पर लाफ्टर क्लब बने हुए हैं। अब रोना-धोना क्लब की शुरूआत हो गई।

सूरत में देश का पहला-'क्राइंग क्लब' खुला है। वहां हर रविवार को लोग जुटते हैं और सामूहिक रूप से रोते हैं। इसके लिए उन्हें जीवन के सब से बुरे पलों को याद करने को कहा जाता है। उन लम्हों की याद दिलाई जाती है जब उन्होंने भावुकता की पराकाष्ठा दिलाई लांघ दी थी। जैसे ही उन दुखद पलों की याद आती है। रूलाई फूट पड़ती है। हैरत की बात ये कि 'रोवणिए क्लब' की स्थापना एक लाफ्टर थेरेपिस्ट ने की। उनका कहना है कि रोने से मन हलका हो जाता है। तनाव दूर हो जाता है।

हथाईबाजों का कहना है कि कोई रोते-रोते हंसे या हंसते-हंसते रोए या कि आराम बड़ी चीज है मुंह ढक के सोएं। उस की मरजी।

राज्यस्तरीय जीवन कौशल बाल मेले में संभागियों को किया पुरस्कृत

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सांगानेर में 16वें राज्यस्तरीय जीवन कौशल बाल मेले का शुक्रवार को समापन हुआ। तीन दिवसीय मेले का आयोजन स्थानीय विद्यालय में आरएससीईआरटी एवं एनसीईआरटी की ओर से किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक बंशीधर गुर्जर मुख्य थे।

समारोह में आरएससीईआरटी के उपनिदेशक तेजपाल उपाध्याय, एडीईओ विकास मीणा भी मौजूद थे। मेले में विभिन्न प्रतियोगिताओं में 25 छात्र एवं 63 छात्राओं सहित कुल 88 संभागियों ने भाग लिया। समारोह में राज्यस्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए गए। संयुक्त निदेशक ने मेला प्रभारी डॉ. भवनिष्ठ अवस्थी एवं मेला सचिव गिरी नरेन्द्र शर्मा का सम्मान किया। अंत में संस्था प्रधान राकेश कुमार शर्मा ने सभी का आभार जताया।

उल्लेखनीय है कि बुधवार को मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि शिक्षा राज्य मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा ने किया। उद्घाटन समारोह के विशिष्ट अतिथि समाजसेवी पुष्पेन्द्र भारद्वाज थे।

बालाजी कॉलेज उद्योग इंटर फेश 2019 अवॉर्ड से सम्मानित

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

बालाजी ग्रुप ऑफ कॉलेज को वर्ष 2019 के उद्योग इंटर फेश अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। यह संस्थान विगत कई वर्षों से बी.टेक व एम.टेक के छात्रों को नई तकनीक से अवगत कराने के हर संभव प्रयास कर रहा है।

कॉलेज के प्राचार्य चेतन खेमराज के अनुसार इस वर्ष एमटेक के छात्रों द्वारा एक ऐसा ऐप तैयार किया जा रहा है जिसके माध्यम से शहर की यातायात व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि छात्रों के द्वारा पहले भी कई प्रकार के शोध पत्र पढ़े गए है।

संस्थान के चेयरमैन भागीरथ पूनियां व प्रबंध निदेशक जगदीश पूनियां ने पत्रकारों को बताया कि संस्थान के द्वारा 24 जनवरी को यामाहा मोटर्स सॉल्यूशंस द्वारा पूल कैंपस का अयोजन किया जा रहा है। तथा 13 जनवरी को राष्ट्रीय सम्मेलन ''इंजीनीयरिंग विज्ञान बाँर प्राद्योगिकी में उभरते रुझान'' सेमीनार का आयोजन किया जा रहा है।

जिसके 300 से ज्यादा छात्र पत्र वाचन करेगें यह सभी पत्र विभिन्न चरणों में प्रकाशित होगें।

इस कार्यक्रम की सफलता के लिए एक समिति का गठन किया गया है, जिसमें विभिन्न विषयों से जुड़े विद्वानों को शामिल किया गया है।

नई पीढ़ी सजगता के साथ करे सोशल मीडिया का उपयोग : अशोक गहलोत

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सोशल मीडिया के दुरूपयोग पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि यह एक क्रांति है, लेकिन दुख की बात है कि इसका उपयोग दूषित विचारधारा को थोप कर युवा पीढ़ी को गुमराह करने में भी किया जा रहा है। नई पीढ़ी पूरी सजगता एवं रचनात्मक सोच के साथ सोशल मीडिया को अपनाए।

गहलोत बिड़ला सभागार में कायस्थ जनरल सभा के जनसेवा अभियान एवं वार्षिक अधिवेशन को सम्बोधित कर रहे थे। कायस्थ जनरल सभा की ओर से इस अवसर पर गहलोत का ईडब्ल्यूएस आरक्षण की जटिलताएं दूर करने के लिए अभिनंदन किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कायस्थ समाज कलम का धनी है। इस समाज ने स्वतंत्रता संग्राम और देश के निर्माण से लेकर सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि सभी समाज मिलकर देश एवं प्रदेश के हित में एकजुटता के साथ भागीदारी निभाएं।

उन्होंने कहा कि हमें हमारे गौरवशाली इतिहास को नई पीढ़ी तक पहुंचाना चाहिए।

गहलोत ने कहा कि सेवा के संकल्प के साथ ही मैं तीसरी बार प्रदेश का मुख्यमंत्री बना हूं। प्रदेश की सेवा ही मेरा एकमात्र एजेंडा है। मेरा धर्म यही है कि 36 की 36 कौम की समर्पित भाव से सेवा करूं। यही मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी पूंजी है।

आम रास्ते की भूमि से अतिक्रमण हटवाकर रास्ता खुलवाया

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

उच्च न्यायालय के आदेशों की पालना में हवामहल जोन पूर्व उपायुक्त रामकिशोर मीणा के नेतृत्व में जोन टीम एवं सतर्कता दस्ते ने कार्यवाही करते हुए शांति कॉलोनी में आम रास्ते की भूमि पर हुए अतिक्रमण को ध्वस्त करवाया। गौरतलब है कि आम रास्ते पर निर्माण होने के कारण आमजन को काफी परेशानी होती थी।

हवन करने से देवता प्रसन्न होते है : बालकृष्ण भूपेंद्र महाराज

जयपुर (जलते दीप)। प्रताप नगर सेक्टर 8 स्थित शिव महादेव मंदिर पार्क में आयोजित की जा रही श्रीमद् भगवत कथा का शुक्रवार को विधिवत समापन हुआ। इस दौरान पूर्णाहुति, हवन, गुरु दीक्षा, महाभोग का आयोजन किया गया। स्थानीय श्रद्धालुओं ने इस मौके पर हवन में आहुतियां दीं।

भारतीय मजदूर संघ ने अपने संस्थापक अध्यक्ष दतोंपत ठेंगड़ी के जन्म शताब्दी के अवसर पर शुक्रवार को शहर के प्रमुख मार्गों से शोभायात्रा निकाली

जयपुर में 18 से 20 जनवरी को आयोजित होगा जयपुर फिल्म फेस्टिवल

फिल्मों पर होंगी चर्चाएं, संवाद और बहुत कुछ

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

12 वर्षों से जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के लगातार सफल आयोजन के चलते, राजधानी जयपुर फिल्म नगरी बन चुकी है। जिफ के कुछ कार्यक्रम तो इतने सार्थक रहे हैं, कि इन्हें अब बड़े पैमाने पर करने की आवश्यकता बन पड़ी है। जिफ का ऐसा ही एक हिस्सा है। जयपुर फिल्म मार्केट। जयपुर फिल्म मार्केट का आयोजन 18 से 20 जनवरी तक सुबह 11 से शाम 5 बजे तक होगा। जयपुर फिल्म मार्केट बनने से राजधानी में पर्यटन, सिनेमा उद्योग और अर्थव्यवस्था को बहुत लाभ पहुँचेगा। जयपुर फिल्म मार्केट व्यापक पैमाने पर आयोजित होगा, जहाँ 100 से अधिक इंडस्ट्री प्रोफेशनल्स हिस्सा लेंगे। अनेक प्रोडक्शन कंपनियाँ और लगभग 200 से अधिक नई फिल्मों और नए प्रोजेक्ट्स पर कार्य किया जाएगा। आपको जानकर अचरज होगा कि जयपुर फिल्म मार्केट के ज़रिए एक ही मंच पर जहाँ कई फिल्मों की स्क्रीनिंग होंगी, वहीं 21 से ज्यादा मीट्स, वर्कशॉप्स होंगी, जहाँ 25 से ज्यादा वक्ता और विशेषज्ञ दर्शकों से मुखातिब होंगे। जयपुर फिल्म मार्केट फिल्म बनाने वालों के लिए ऐसी जगह है, जहाँ वे फिल्मों के खरीदारों से सीधा मिल सकते हैं। यहाँ उन्हें परिवार जैसा माहौल मिलेगा, जहाँ वे नए सम्पर्क बना सकेंगे। यह एक ऐसा मंच होगा, जहाँ क्षेत्रीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय सिनेमा एक ही छत के नीचे मौजूद होगा।

18 को होगा उद्घाटन

18 जनवरी को 11 बजे उद्घाटन सत्र होगा, जहां अभिनेत्री दीया डे मंच संचालन करेंगी, वहीं जेएफएम डायरेक्टर प्रज्ञा राठौड़ स्वागत भाषण से सत्र की शुरुआत करेंगी। सत्र में सिने जगत के जाने माने लोग शिरकत करेंगे। उद्घाटन सत्र की अगली कड़ी में दोपहर 12 बजे जर्नी एण्ड चैलेंज - इंडियन एंड ग्लोबल फिल्म इंडस्ट्री पर अगला सैशन होगा।

चौथ का बरवाड़ा स्टेशन पर 11 जोड़ी एक्सप्रेस रेलसेवायें ठहराव करेगी

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

रेलवे द्वारा चौथ माता मेले के अवसर पर यात्रियों की सुविधा हेतु चौथ का बरवाड़ा स्टेशन पर 12 जनवरी से 14 जनवरी तक 11 जोड़ी एक्सप्रेस रेलसेवाओं का ठहराव दिया जा रहा है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी अभय शर्मा के अनुसार 11 जोड़ी एक्सप्रेस रेलसेवायें ठहराव करेगी।

दोहरीकरण कार्य के लिये नॉन इण्टरलॉकिग ब्लॉक-गाड़ियॉ रहेगी प्रभावित :

रेलवे प्रशासन द्वारा अजमेर मण्डल के अजमेर-पालनपुर रेलखण्ड पर दोहरीकरण कार्य किया जा रहा है जिसके कारण भीमाना-मावल स्टेशनों के मध्य नॉन इण्टरलॉकिग कार्य 10 जनवरी से 6 फरवरी तक किया जायेगा, जिसके कारण रेल यातायात प्रभावित रहेगा।

उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी अभय शर्मा के अनुसार उपरोक्त कार्य के कारण 54804 अहमदाबाद-जोधपुर रेलसेवायें प्रभावित रहेगी।

राजस्थली पब्लिक फ्रेण्डली व हस्तशिल्प के प्रमुख केन्द्र के रुप में विकसित: डॉ. अग्रवाल

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

राज्य सरकार द्वारा राजस्थली को पब्लिक फ्रेण्डली बनाने के साथ ही प्रदेश के हस्तशिल्प का प्रमुख केन्द्र बनाया गया है। उद्योग आयुक्त व राजसिको के प्रबंध संचालक मुक्तानन्द अग्रवाल ने बताया कि देशी-विदेशी सैलानियों के साथ ही प्रदेशवासियों खासतौर से जयपुरवासियों की राजस्थली तक सहज पहुंच बनाने के लिए जहां अधिक और बेहतर उत्पादों के प्रदर्शन की व्यवस्था की गई हैं वहीं 31 जनवरी पर राजस्थली पर उपलब्ध उत्पादों पर 20 प्रतिशत की छूट दी गई है। आयुक्त अग्रवाल ने राजस्थली को नई दिशा देने के संबंध में अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि राजस्थली को प्रदेश के हस्तशिल्प उपलब्ध होने की प्रतिनिधि संस्था के रुप में विकसित करने की दिशा में कदम बढ़ाए गए हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थली में प्रदेश के हस्तशिल्पियों, दस्तकारों, बुनकरों आदि के उत्पादों को आकर्षक और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। आने वाले समय में राजस्थली देशी-विदेशी पर्यटकों और जयपुरवासियों की पहली पसंद होगी।

अग्रवाल ने बताया कि हस्तशिल्प प्रेमियों, जयपुर में आने वाले पर्यटकों और जयपुरवासियों को उचित मूल्य पर हस्तशिल्प उत्पाद उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती वर्ष और नए साल के अवसर पर राजस्थली पर उपलब्ध सभी उत्पादों पर बीस प्रतिशत छूट का प्रावधान भी किया गया है। आयुक्त अग्रवाल ने बताया कि राजस्थली को हस्तशिल्पियों की पहचान स्थल बनाने के प्रयासों से राजस्थली के नए लुक से देशी विदेशी पर्यटकों का रुझान और अधिक बढ़ेगा और हस्तशिल्पि व बुनकर बिचौलियों के शोषण से बच सकेंगे। बैठक में राजसिको के महाप्रबंधकों में दिनेश सेटी, वित्तीय सलाहकार आकाश आल्हा, सहायक निदेशक उद्योग पीआर राजेन्द्र शर्मा आदि उपस्थित थे।

नींदड के किसानों के प्रतिनिधियों से वार्ता के लिए कमेटी गठित

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

जयपुर विकास आयुक्त टी.रविकांत ने आदेश जारी कर नींदड आवासीय योजना के संबंध में किसान प्रतिनिधि मण्डलों, कृषकों, खातेदारों व हितधारियों से वार्ता हेतु उनकी विभिन्न मागों व प्रस्तावों के संबंध में विचार-विमर्श करने के लिए कमेटी का गठन किया है। उन्होंने बताया कि प्रतिनिधि मण्डलों, कृषकों, खातेदारों व हितधारियों से कमेटी 13 जनवरी, 2020 को दोपहर 3.00 बजे जेडीए के मंथन सभागार में वार्ता के लिए समय निर्धारित किया है। कमेटी में अतिरिक्त आयुक्त एलपीसी गिरीश पाराशर, अतिरिक्त आयुक्त पीआरएन अवधेश सिंह, मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन रघुवीर सैनी, संयुक्त निदेशक विधि अनंत कुमावत, एसटीपी ओ.पी. पारीक, अतिरिक्त निदेशक (राजस्व) देवेन्द्र अरोड़ा, अधीक्षण अभियन्ता एवं जिला कलक्टर के प्रतिनिधि सदस्य होंगे एवं उपायुक्त जोन-12 मनीष फौजदार नोडल अधिकारी होंगे।

आम रास्ते की भूमि से अतिक्रमण हटाया

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

उच्च न्यायालय के आदेशों की पालना में हवामहल जोन पूर्व उपायुक्त रामकिशोर मीणा के नेतृत्व में जोन टीम एवं सतर्कता दस्ते ने कार्यवाही करते हुए शांति कॉलोनी में आम रास्ते की भूमि पर हुए अतिक्रमण को ध्वस्त करवाया। गौरतलब है कि आम रास्ते पर निर्माण होने के कारण आमजन को काफी परेशानी होती थी।

जेकके में प्रदर्शित की जा रही है तिजी फेस्टिवल की पौराणिक कथाएं व पंचतंत्र की कहानियां

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

जवाहर कला केंद्र द्वारा इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स के सहयोग से दो एग्जीबिशन आयोजित की जा रही है, जो 20 जनवरी तक चलेंगी। केंद्र की अलंकार आर्ट गैलरी में तिजी फेस्टिवल ड्राइविंग आउट डेमन्स एग्जीबिशन में फोटोग्राफ व मास्क प्रदर्शित किए जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि तिजी नेपाल का सबसे प्रमुख त्योहार है। तिजी शब्द 'तेनपा छिरिम' का संक्षिप्त नाम है, जो अक्सर तेंची फेस्टिवल के रूप में जाना जाता है।

इस फेस्टिवल के जरिए भगवान बुद्ध के दोरजी सोनू अवतार की मन ताम रू नामक राक्षस पर जीत को याद किया जाता है। मन ताम रू इंसानों को खाने वाला और तूफान व सूखे की स्थिति उत्पन्न करने वाला दुष्ट राक्षक था। इस एग्जीबिशन में प्रदर्शित की जा रही पेंटिंग्स के जरिए बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक तिजी त्यौहार की प्राचीन पौराणिक कथाओं को दर्शाया गया है। इसी प्रकार सुरेख व सुदर्शन आर्ट गैलरी में 'पंचतंत्र एग्जीबिशन' आयोजित की जा रही है। इसमें आदिवासी व लोक कला पर पेंटिंग बनाने के लिए प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार हक्कू शाह की पेंटिंग व कलमकारी कार्य को प्रदर्शित किया जा रहा है। कलमकारी हाथ से पेंटिंग बनाने की प्राचीन शैली है, जिसमें इमली की कलम व प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके सूती या रेशमी कपड़े पर पेंटिंग बनाई जाती है। इस एग्जीबिशन में 'द वीवर एंड द डेमन', 'द सिंगिंग डॉन्की', 'द लोनली डियर' और 'द स्टोरी ऑफ द वल्चर' जैसी कई कहानियों के फोटो प्रदर्शित किए जा रहे हैं। पंचतंत्र को भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक सीमाओं को पार करने वाले सबसे शुरुआती कार्यों में से एक माना जाता है।

ये दोनों एग्जीबिशन 20 जनवरी तक सुबह 11 बजे से शाम 7 बजे तक चलेगी।

पतंगों से दिया ग्रीन-क्लीन जयपुर का संदेश

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

नारी शक्ति और स्वच्छता से जुड़े विषयों पर जयपुर शहर में विभिन्न तरीकों से जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। उसी कड़ी में राजस्थान जाट महासभा की ओर से भी जागरूकता संदेश लिखी पतंगे वितरित कर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और ग्रीन-क्लीन जयपुर सिटी, चायनीज मांझे का उपयोग नहीं का मैसेज दिया जा रहा है। राजस्थान जाट महासभा के प्रदेश महासचिव मदन चौधरी ने बताया कि पतंग वितरण अभियान के प्रथम दिन 15 सौ पतंगों का निःशुल्क वितरण सांगानेर रेल्वे स्टेशन पर कच्ची बस्ती क्षेत्र में किया गया। उन्होंने बताया कि महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राजाराम मील व प्रदेश महासचिव मदन चौधरी के नेतृत्व में कुल 5100 पतंगों के वितरण का लक्ष्य रखा गया है। अध्यक्ष राजाराम मील ने बताया कि पतंगों के साथ ही लोगों को स्वच्छता का संकल्प भी दिलाया जा रहा है। मदन चौधरी ने बताया कि ये पतंगे असहाय, गरीब व फुटपाथ पर जीवन बसर करने वाले बच्चों को वितरित की जा रही हैं तथा उनके साथ मकर संक्रांति पर्व तिल के लडडू व फीणी खिलाकर मनाया जाएगा।

रामगढ़ शेखावाटी में वेदारण्य हेरिटेज एंड हीलिंग फेस्टिवल का होगा आयोजन

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

राजस्थान सरकार के पर्यटन, कला एवं संस्कृति मंत्रालय तथा श्रुति फाउंडेशन द्वारा मिलकर दिसंबर 2016 में वेदारण्य हेरिटेज एंड हीलिंग फेस्टिवल (वीएचएएच) की शुरूआत की गई थी। यह फेस्टिवल रामगढ़ शेखावाटी में 17 से 19 जनवरी को आयोजित किया जाएगा। यह फेस्टिवल के इस चौथे वार्षिक संस्करण में उत्तरी आयरलैंड की आर्ट्स काउंसिल का सहयोग भी प्राप्त हुआ है। वीएचएएच फेस्टिवल की संयोजक, श्रुति पोद्दार ने जयपुर में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। पोद्दार ने आगे जानकारी दी कि फेस्टिवल में भारत व अन्य देशों के 50 नामी कलाकार, विचारक, डॉक्टर, डिजाइनर, उद्यमी, सरकार एवं संस्थाओं के प्रमुख तथा सैकड़ों वैश्विक एवं स्थानीय प्रतिभागी शामिल होकर सेलीब्रेट करेंगे और सिखेंगे। इस फेस्टिवल के दौरान इस शहर की खास विशिष्टता को भी सेलीब्रेट किया जाएगा। उन्होंने आगे बताया कि हेरिटेज इंडिया साइक्लोथोन का दूसरा संस्करण 1 और 2 फरवरी को रामगढ़ में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर अतिरिक्त निदेशक पर्यटन, डॉ. मनीषा अरोड़ा; फेस्टिवल आयोजन समिति के सदस्य, सुनील गुप्ता और संयुक्त निदेशक पर्यटन, आनंद त्रिपाठी भी उपस्थित थे। इसमें शामिल होने के लिए जिन कलाकारों की ओर से पुष्टि की जा चुकी है, वे हैं - पद्मश्री गीता चंद्रन, प्रसिद्ध कलाकार मधुप मुद्गल, पुंगचोलम - अग्नि के साथ शानदार कलाबाजियां, मांगणियार एवं कालबेलिया नर्तक, प्रसिद्ध 'कबीर कैफे', प्रसिद्ध राजस्थानी इतिहासकार डॉ. रीमा हूजा, इन्डिजिनस नॉलेज सिस्टम के लिए विश्व प्रसिद्ध क्लॉड अल्वारिस, उत्तरी आयरलैंड के जेसन ओरोर्के, आदि। इनके अलावा डॉ. रीमा हूजा, एम्बेसेडर वीणा सीकरी जैसे वक्ता, विभिन्न सरकारी अधिकारी, विश्व प्रसिद्ध हीलर, मेंटोर, भारतीय मेडिसन एक्सपर्ट, क्राफ्ट एक्सपर्ट एवं कई शिक्षाविद भी इसमें शामिल हो रहे हैं।

रील द्वारा ग्रिड कनेक्टेड रूफटॉप पर कार्यक्रम का आयोजन

■ जलतेदीप नसं, जयपुर

रील द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में सरकारी भवनों के लिए भारत सरकार के राष्ट्रीय सौर मिशन के अनुरूप, कंपनी ने नएडीडीबी,आरसीडीफी के विभिन्न अधिकारियों की मौजूदगी में आरईएससीओ मॉडल पर रूफटॉप सोलर पर स्टेकहोल्डर डेलीगेशनश पर 10 जरवरी 2020 को रील के नव निर्मित कार्यालय मे एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन रील के प्रबंध निदेशक डॉ. एके जैन द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर रील के उच्च अधिकारियों एवं रील के स्टॉक हॉलडर्स ने सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी निभाई तथा कार्यक्रम में आये प्रतिभागियों द्वारा विस्तृत से ग्रुप ग्रिड कनेक्टेड रूफ टॉप सोलर और कुसुम योजना पर चर्चा की गई। डॉ. एके जैन ने बताया कि रील को विशेषज्ञ सीपीएससी के तौर पर भारत सरकार द्वारा मान्यता दी गई है। डॉ. जैन ने बताया कि 40 जीडब्ल्यू ग्रिड कनेक्टेड रूफटॉप सोलर को प्राप्त करने के लिए ई.मोबिलिटीए स्टोरेज आदि के एकीकरण के साथ सौर ऊर्जा को स्थायी बनाने पर अपने विचार साझा किए और उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए सौर उत्पादकों की विश्वसनीयता के महत्व पर ध्यान ध्यान देने पर ज़ोर दिया। इन ग्रिड कनेक्टेड सोलर रूफटॉपश सिस्टम्स के सफलतापूर्वक इंस्टॉलेशनए ऑपरेशन एंड मेनटेनेंस के लिए प्रशिक्षित मैनपावर की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है। उन्होने बताया कि सौर ऊर्जा के क्षेत्र मे असीम सम्भावनायें है। इस अवसर पर रील के अधिषाशी निदेशक, परियोजनाद्ध पीयूष पालीवाल ने बताया की रील ने एक्सपर्ट सीपीएससी के तहत कार्य करते हुए एमएनआरई की अचिवमेंट लिंक इंवेस्टीव स्कीम मे 10 मंत्रालयों के कार्यलयों की छतों पर लगभग 32 डॅ के श्रिग्रड कनेक्टेड सोलर रूफटॉप की स्थापना की है। इस कार्यशाला में रील के महाप्रबन्धक, अक्षय ऊर्जा द्वारा एक प्रस्तुतिकरण के माध्यम से कुसुम योजना का विवरण भी साझा किया गया।

कार्यशाला मे सम्मिलित लगभग 40 प्रतिभागियों ने इंटरएक्टिव सत्रों के माध्यम से हितधारकों के बीच ग्रिड कनेक्टेड आरटीएस परियोजनाओं के कार्यान्वयन में चुनौतियों के बारे मे बताया और प्रतिभागियों के बीच सफलतापूर्वक चर्चा करने का मंच प्रदान किया।

उत्सव में उमड़ी भीड़, एकता, अखंडता और विकास की शपथ तथा सम्मान करते राजस्व मंत्री हरीश चौधरी।

जलतेदीप

हस्तशिल्प उत्सव में प्रतिभाओं का सम्मान

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। जिला प्रशासन, जिला उद्योग केन्द्र, उद्यम प्रोत्साहन संस्थान एवं नोडल एजेंसी मरूधरा इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे 30 वें पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव में शुक्रवार को स्कूली विद्यार्थियों के लिए बाल दिवस एवं क्विज प्रतियोगिता, पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी का सूचना तकनीक में योगदान एवं प्रतिभाओं का सम्मान समारोह का आयोजन राजस्व मंत्री हरीश चौधरी के मुख्य आतिथ्य एवं राजस्थान राज्य बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती संगीता बेनीवाल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

राजस्व मंत्री हरीश चौधरी ने कहा कि राजीव गांधी का देश की आर्थिक वृद्धि व आईटी का बहुत बड़ा योगदान है। वर्तमान में देश में जो तकनीकी विकास हो रहा है वह स्व. राजीव गांधी का सपना एवं उनकी देन है। उन्होंने आईटी उद्योगों के विकास पर प्रकाश डाला।

उन्होंने बच्चों को योग्य बनने एवं 21 वीं सदी के राजीव गांधी के लक्ष्य को पाने की प्रेरणा दी। उन्होंने बच्चों को गांधीजी के 150 वीं जयंति के अवसर पर शांति, अहिंसा और सदभाव की भावना व देश के विकास में भागीदार बनने के लिए शपथ दिलाई।

साथ ही सेंट्रल पण्डाल के बाहर स्थित चरखे के पास देश एवं प्रदेश में अमन एवं शांति की कामना साथ गुब्बारे छोडे। राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती संगीता बेनीवाल ने भी अपने विचार रखे।

उत्सव संयोजक सुनील परिहार ने बताया कि क्विज प्रतियोगिता में जेसीआई जोधपुर सनसिटी की अध्यक्ष जूही वर्मा, उमेश लीला, योगेश माहेश्वरी, निलेश संचेती व दीपक सेठिया ने सहयोग किया। प्रतियोगिता में रामावि इंदों की ढाणी, गाजनावास, बालेसर के कक्षा दस के छात्र धनराज चौधरी, पूर्ण सिंह, जसराज, खूमाराम, सनसिटी पब्लिक सी.सै. स्कूल की रेणु एवं मनीषा, राबाउमावि, रातानाडा की हिमानी कंवर, खुशबू प्रजापत, रेणु प्रजापत, उर्वशी कुमावत, डॉ. बीआर राआउमावि, मण्डोर से हितेशकुमार, पंकज फुलवारिया, रावलराम, मयंक पंवार, श्री साईनाथ बाल सी.सै. वि. से मोनिका सरगरा, पूजा, हरीश बोराणा, पूजा, राउमावि, सिवांची गेट से निर्जला, हर्षिता सांखला, साक्षी प्रजापत, पिंकू, राउमावि, जाजीवाल जाखड़ा से हेमलता, मनीषा चौधरी, पूजा, रिंकू, महर्षि भारद्वाज माध्यमिक विद्या मंदिर, सांगरिया से रेवाराम, ललित, ईबजहां, मुस्कान, राबाउमावि, राजमहल से दीक्षा अरोड़ा, सुमित्रा, क्षमता, कनिष्का माथुर, विद्या बाल निकेतन, विजय चौक से अकीला, सुलताना, शाहीन बानो छीपा, दीक्षा खीची, विद्या पब्लिक सी.सै. स्कूल से मुस्कान खान, नेहा सुथार, चंदू कंवर, अभिषेक सिंह, हनी खीची, पूजा कंवर ने भाग लिया। प्रतियोगिता में स्कूली शिक्षा के संयुक्त निदेशक प्रेमचंद सांखला सहित शिक्षा विभाग के प्रहलादराम गोयल, हिंगलाजदान, ललित जुगतावत, भंवरराम जाखड़ की सेवाएं सराहनीय रही। कार्यक्रम के आरंभ में एमआईए के अध्यक्ष ज्ञानीराम मालू ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन एमआईए के पूर्व अध्यक्ष योगेश माहेश्वरी ने किया एवं अंत में एमआईए सचिव मुकेश खत्री ने आभार जताया।

क्विज और बालदिवस प्रतियोगिता में उत्साह झलका

इस अवसर पर एमआईए के पूर्व अध्यक्ष कमल मेहता, एसके शर्मा, कमल सिंघवी, उमेश लीला, उपेन्द्र भंसाली, योगेश माहेश्वरी, उपाध्यक्ष नीरज सुराणा, सहसचिव पंकज राठी एवं नरेन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष निलेश संचेती, कार्यकारिणी सदस्य दिलीप सोनी, राजेश सोलंकी, गणेश चौधरी, मोहनसिंह सोलंकी, नरेन्द्र छाजेड़, श्रीकांत शर्मा सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

'जोधाणा रत्न' सम्मान समारोह 12 को

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। ओझा लॉ एसोसिएट द्वारा 12 जनवरी को जोधाणा रत्न सम्मान सम्मारोह स्वामी कृष्णानंद सभागार सिवांचीगेट गड्डी में अपरान्ह 4 बजे आयोजित किया जाएगा। इसके साथ देश भक्ति, पुराने नगमे और भजन गायन किया जाएगा।

आज सुनील ओझा की अध्यक्षता में मीटिंग की गई जिसमें समारोह की तैयारियां पूर्ण की गई। समारोह में समाज के विभिन्न क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 51 प्रतिभाओं को जोधाणा रत्न से सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में गुरु गोविंद कल्ला, महेश पवार व जबरसिंह उपस्थित रहेंगे।

ओझा और सांखला कल जयपुर में राज्यपाल के हाथों सम्मानित होंगे

जोधपुर जिले के स्काउट व गाइडस भी सम्मानित होंगे

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व

गाइड जोधपुर मंडल के प्रधान एवं पूर्व महापौर घनश्याम ओझा और पूर्व सहायक राज्य संगठन आयुक्त नारायणसिंह सांखला लीडर ट्रेनर एवं सचिव स्थानीय संघ जोधपुर का सम्मान 12 जनवरी को जयपुर में कलराज मिश्रा एवं स्टेट चीफ कमिश्नर जेसी महान्ति के द्वारा धन्यवाद बैज तथा मेडल आफ मैरिट प्रदान किया जाएगा। सीओ गाइड सुश्री सुयश लोढा ने बताया कि ओझा को गत 15 वर्षों में संगठन के सुदृढीकरण में किये गये सहयोग एवं मंडल मुख्यालय शिविर केंद्र चौपासनी के विकास में योगदान के लिये और स्काउट सचिव सांखला को उनके द्वारा सैंकडों स्काउट गाइड नवयुवक युवतियों के व्यक्तित्व निर्माण और योग्यतावृद्धि में अग्रणी भूमिका निर्वाह करने के उपलक्ष में प्रदान किया जा रहा है। सुयश ने बताया कि राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में राज्य पुरस्कार अवार्ड रैली एवं राज्य स्तरीय पर्यावरण मेले का आयोजन 13 जनवरी को राज्यपाल कलराज मिश्र द्वारा राज्य पुरस्कार अवार्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। समारोह में रेंजर विभाग में पुष्टिकर महिला महाविद्यालय से रेंजर सेजल पंवार, मरूधर ओपन रोवर क्रू से प्रदीपसिंह चौहान, सरस्वती बाल वीणा भारती उमावि सूरसागर से स्काउट उम्मेदसिंह, राधेश्याम, राजूसिंह, राजेन्द्र खिलेरी, राउमावि चाढी से रावलसिंह, आसूसिंह एवं राउमावि सजाडा से गाइड पूनम, किरण, प्रियंका, संगीता और मनीषा प्रतिनिधित्व करेगी। 11 सदस्यों का यह दल गाइड कैप्टिन श्रीमती कांता शर्मा एवं स्काउट मास्टर गणपतराम तथा रामरख चौधरी के नेतृत्व में कल जयपुर के लिए रवाना हुआ। नेशनल ग्रीन कोर समन्वयक एवं सीओ स्काउट छतरसिंह पिडियार ने बताया कि राज्य स्तरीय पर्यावरण संरक्षण मेले में प्रदेश के 33 जिलों के सर्वश्रेष्ठ ईको क्लबों में जोधपुर के राउमावि सजाडा और सरस्वती बाल वीणा भारत उमावि सूरसागर का चयन किया गया है। पर्यावरण संरक्षण एवं जन चेतना हेतु दोनों ईको क्लब राज्य स्तरीय मेला और क्षमतावर्धक शिविर में पर्यावरण संरक्षण एवं सवेर्द्धन हेतु मॉडल पीपीटी पर फोटो वीडियो समाचारों एवं प्रदर्शनी के द्वारा किये गये कार्यों का जीवन प्रदर्शन करेंगे।

भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता प्रवीण का निधन

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता प्रवीण

जैन लोढ़ा का कल मध्यरात्रि को हृद्यघात से निधन हो गया। भाजपा शहर जिलाध्यक्ष देवेन्द्र जोशी, पूर्व जिलाध्यक्ष नरेन्द्रसिंह कच्छवाह, प्रसन्नचंद मेहता, गणेश बिजाणी, महेन्द्र मेघवाल, मुकेश लोढा, नरेश सुराणा, विजय राजोरिया, युधिष्ठिर कटारिया, आनन्दसिंह सोलंकी, किशन लड्ढा, श्यामसुन्दर गौड सहित कई भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता अन्तिम शवयात्रा में शरीक हुए।

प्रवीण ने सोशल मीडिया के माध्यम से भाजपा को एक अलग पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भुमिका निभायी। साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से आमजन को भाजपा से जोडने का काम किया। वे सोशल मीडिया के माध्यम से भाजपा के सभी कार्यकर्ता एवं पदाधिकारियों को प्रचार-प्रसार के लिये प्रेरित करते थे। सोशल मीडिया के प्लेटफार्म पर उन्होंने अपनी जबरदस्त छाप छोड़ी थी इसी कारण भाजपा कार्यकर्ता उनसे मार्गदर्शन लेते रहते थे। भाजपा परिवार ने उनके कार्य के प्रति लगन को देखते हुए चुनावों में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी सौंपी। वे राजनैतिक पार्टी के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी रहे और अपने जीवनकाल में ही आपनी आंखों को दान करने का फैसला लिया था। परिजनों ने उनकी आंखे दान कर दी।

शेखावत ने स्व. लोढा के परिवार बंधाया ढाढस : केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को लोढा के निधन का समाचार मिलने पर वे अपने सभी कार्यक्रमों को रद्द करते हुए उनके प्रताप नगर स्थित निवास पर पहुंचे जहां पर उन्होंने शोक संतप्त परिवार को ढाढस बंधाया।

जैन समाज में शोक : उधर कई संस्था संगठनों से जुड़े लोढ़ा के आकस्मिक निधन पर जैन समाज में शोक की लहर छा गई। तपागछ संघ जैन गौरव समिति चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर तीर्थ सहित कई संस्थाओं ने शोक जताते हुए लोढ़ा को भाव भरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

भैरूबाग जैन तीर्थ के ट्रस्टी धनराज विनायकिया ने कहा कि उनके द्वारा किये गए सक्रिय सेवा कार्य हमेशा याद आते रहेंगे। चिंतामणि पार्श्वनाथ गुरों का जैन मंदिर ट्रस्टी ओमप्रकाश चौपड़ा ने कहा कि लोढा द्वारा किए सेवा कार्य सभी संस्थाओं द्वारा याद किए जाएंगे।

भागवत कथा में कृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। प्रतापनगर 'के' सेक्टर स्थित पुलिस चौकी के पीछे जय अंबे मां पार्क में चल रही श्रीमद् भागवत कथा में शुक्रवार को भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। लोगों ने पटाखे छोड़कर खुशियां बांटी। महिलाओं ने भगवान कृष्ण को झूले में झूला कर मंगल गीत गाये। इस अवसर पर कथा स्थल को विशेष रूप से सजाया गया। कथा सुनने हैं आज बड़ी संख्या में भक्तजन पहुंचे।

भक्तों को संबोधित करते हुए पंडित दामोदर महाराज ने कहा कि भारत की भूमि पर जब जब किसी भक्त ने भगवान को भाव से पुकारा है, भगवान तुरंत दौड़े चले आए। भगवान तो आज भी इस धरती पर अवतार लेने को आतुर है मगर आवश्यकता है किसी यशोदा और कौशल्या जैसी माता की। उन्होने कहा मनुष्य जब अच्छे कर्मो के लिए आगे बढता है तो सम्पूर्ण सृष्टि की शक्ति समाहित होकर मनुष्य के भले में लग जाती है और हमारे सारे कार्य सफल होते है। ठीक उसी तरह बुरे कर्मो की राह के दौरान सम्पूर्ण बुरी शक्तियॉ हमारे साथ हो जाती है। इस दौरान मनुष्य को निर्णय करना होता कि उसे किस राह पर चलना है। छल ओर छलावा ज्यादा दिन नहीं चलता। छल रूपी खटाई से दुध हमेशा फटेगा। छलछिद्र जब जीवन में आ जाए तो भगवान भी उसे ग्रहण नहीं करते है- निर्मल मन प्रभु को स्वीकार्य है। छलछिद्र रहित ओर निर्मल मन भक्ति के लिए जरूरी है। उन्होने भगवान के जन्म उत्सव का मार्मिक वर्णन किया। इसे सुन श्रद्धालु भाव-विभोर हो गए।

भजन, गीत व संगीत पर श्रद्धालु देर तक झूमते रहे। पंडित दामोदर महाराज ने कहा कि आप जीवन में जो कुछ भी चाहते है, वो प्राप्त कर सकते है, बस आप खुद पर भरोसा करना शुरू कर दे। तुम्हारा भरोसा ही है जो तुम्हारे हर संकल्प को साकार बनता है। इसके जरिये हम मुश्किल से मुश्किल कार्य को आसान बना सकते हैं। मनीष कुमार चितारा ने बताया कि वृंदावन वाले पंडित दामोदर भारद्वाज 13 जनवरी तक कथा वाचन करेंगे। श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के अवसर पर आज मोहल्ला विकास समिति के अध्यक्ष गोविंद लाल दैया, अमोलकचंद सोनगरा, गोपाल जादूगर, दौलत राज डाबी,राजेश गुप्ता, खेताराम सोनगरा, रेखा वैष्णव तथा शोभा देवी सहित अनेक भक्तजनों ने मंगलाचरण आरती में भाग लिया।

पंडित सुमित नारायण दवे व पंडित मोहनलाल भारद्वाज ने मंत्रोचार से पूजा करवाई।

ईश्वर से एकाकार होना ही मुक्ति का मार्ग है: कृष्ण मुरारी- उधर दुर्गा पार्क विकास समिति और कृष्णमुरारी प्रेम परिवार की तरफ से चल रही भागवत कथा में रास महालीला का वर्णन करते हुए कृष्ण मुरारी महाराज ने कहा कि ईश्वर से एकाकार होना ही मुक्ति का मार्ग है। गोपी विरह में अक्रूर गोपियों को समझाते हैं कि ईश्वर कहीं गया नही है, अपने हृदय में झांको और प्रतिपल उसकी उपस्थिति को महसूस करना सीखना है। गोपी विरह के मार्मिक प्रसंग से पूरा पांडाल भावुक हो उठा। उन्होंने कहा कि माता-पिता की सेवा सबसे बड़ी सेवा है। माता-पिता को बच्चों की धन दौलत आदि कुछ नहीं चाहिए उन्हें आपके समय में से थोड़ा सा समय चाहिए। आज रूकमणी विवाह का अति सुंदर प्रसंग सजीव झांकी सहित सजाया गया। कथा में भागवताचार्य राधेश्याम ओझा की विशेष उपस्थिति रही। संचालन नटवर थानवी ने किया।

चौपड़ा जेमडा के अध्यक्ष और कोठारी सचिव निर्वाचित

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। जोधपुर इलेक्ट्रिकल मशीनरी डीलर्स

एसोसिएशन जेमडा के वर्ष 2020-22 के चुनावों में पुष्पचंद्र चौपड़ा अध्यक्ष, सुनील कोठारी सचिव, अनिल गोयल वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अशोक माथुर उपाध्यक्ष, विनोद जैन कोषाध्यक्ष, आशीष मेहता सह कोषाध्यक्ष, एवं विमल जैन आम राय से पीआरओ चुने गए। कार्यकारिणी सदस्य में दिनेश संकलेचा, गोविंद परिहार, लखन सोनी, नरेश जैन, नवीन लोढा, प्रफुल्ल मेहता, रमेश कपूरिया, सुनील बाहेती, सुशील बैंगानी, विजय भंडारी चुने गए है। शपथ ग्रहण समारोह 12 जनवरी को लद्यु भारती उद्योग भवन में होगा।

राष्ट्र स्तरीय जिम्नास्टर साबिर का निधन

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। राष्ट्र स्तर के जिम्नास्ट मोहम्मद

साबिर का कल निधन हो गया। उनके निधन पर आज चेतनसा जिम्नास्टिक प्रशिक्षण केंद्र उम्मेद स्कूल गुलाब सागर पर श्रद्धांजलि सभा रखी गई । साबिर उदयमान और उत्कृष्ट राष्ट्रीय स्तर का मेडलिस्ट जिम्नास्टर था। वह जेएनवीयू में बीए प्रथम वर्ष का छात्र था। मनोहर सिंह दैया, नरेश सिंह चौहान सहित अन्य प्रशिक्षकों और साथी जिम्नास्टरों ने साबिर को भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

गांधी मैदान में लगा हाट बाजार

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। तारघर के बाहर लगाया जा रहा हाट बाजार इस बार गांधी मैदान में लगाया गया। तारघर के बाहर आज किसी भी हाथ ठेला चालक व अन्य विक्रेता को नहीं बैठने दिया गया।

दरअसल कामर्शियल और रहवासीय इमारतों में पार्किंग रिस्टोर करने और फुटपाथ पर अतिक्रमण को लेकर राजस्थान हाईकोर्ट ने चिंता जताई थी। इस पर नगर निगम ने हर माह की दस तारीख को तारघर के आसपास लगने वाले हाट बाजार को गांधी मैदान पर शिफ्ट कर दिया था। आज यह हाट बाजार गांधी मैदान में लगाया गया। सुबह कुछ हाथ ठेला चालक यहां तारघर के बाहर आकर खड़े हुए लेकिन पुलिस व निगमकर्मियों ने उन्हे गांधी मैदान भेज दिया।

विद्यार्थियों ने आफरी भ्रमण किया

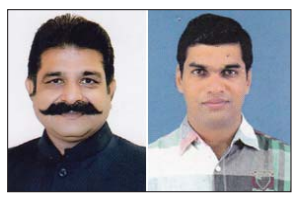

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। जीडी मेमोरियल कॉलेज ऑफ साइन्स के बीएससी (द्वितीय वर्ष) तथा एमएससी (पूर्वार्द्ध) प्राणी विष्व

एवं वनस्पति विज्ञान विद्यार्थियों ने आज शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर का शैक्षणिक भ्रमण कर वानिकी शोध की जानकारी हासिल की। इस अवसर पर आफरी निदेशक एमआर बालोच ने विद्यार्थियों को भारतीय वन सेवा एवं अन्य सेवाओं हेतु लगन से कार्य करने को कहा। इस अवसर पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. उत्तर कुमार तोमर ने आफरी को शोध गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में डॉ. सरिता आर्य, डॉ. जी. सिंह, डॉ. महेष्वर हेगडे एवं डॉ. एन.के. बौहरा ने विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। दल में डॉ. धनपतराज बौहरा, नीतू कुमारी, प्रदीप, हर्षिता एवं जिज्ञासा भी विभागीय फैकल्टी के रूप में उपस्थित थे।

कीटनाशक के असर और झुलसी महिला की मौत

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। दो दिन पहले खेत में काम करते समय कीटनाशक के असर से बेहोश हुई एक महिला ने शुक्रवार सुबह इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। ओसियां थाने के एएसआई जयमलराम ने बताया कि बड़ला बासनी के बड़ेबेरा निवासी तेजू पत्नी हिम्मताराम जाट गत आठ जनवरी की दोपहर को अपने ससुराल में खेत में काम कर रही थी। तब खेत में छिड़के कीटनाशक के कारण उसको उल्टियां होने लगी और तबीयत बिगड़ने पर परिजन इलाज के लिए एमडीएम अस्पताल लेकर पहुंचे जहां देर रात उसने दम तोड़ दिया। मृतका के एक बच्ची है।

अलाव से झुलसी महिला की मौत : जैसलमेर जिले में अलाव तापते आग से झुलसी एक महिला की यहां महात्मा गांधी अस्पताल की बर्न यूनिट में उपचार के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने दोपहर में कार्रवाई कर शव परिजनों को सौंपा। पुलिस ने बताया कि जैसलमेर के फलसूंड क्षेत्र में गत वर्ष 21 दिसंबर अलाव तापते कपड़ों में लगी आग से झुलसी महाराष्ट्र के अकोला निवासी शमा (66) पत्नी सावतराम पारसी को जैसलमेर से रैफर करने पर परिजनों ने इलाज के लिए एमजीएच की बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया था लेकिन उसकी आज सुबह उपचार के बीच मौत हो गई।

सामाजिक सरोकार के कार्यों का शुभारंभ

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। अदाणी फाउडेशन वर्तमान में 18 राज्यो में कार्य कर रहा है जिसमें कुल 2250 गांवो एवं कस्बों के पांच लाख से भी ज्यादा परिवारों के साथ काम कर रहा है। अदाणी फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ प्रीति अदाणी के तत्वावधान में अदाणी फाउंडेशन शिक्षा, सामुदायिक स्वास्थ्य, आजीविका विकास एवं बुनियादी निर्माण कार्यो के क्षेत्र में कार्य कर रहा है, इसके साथ ही उड़ान, सुपोषण, सक्षम एवं स्वच्छाग्रह जैसे कार्यक्रम भी चलाये जा रहे है। अदाणी अक्षय उर्जा पार्क राज. लि. एवं अदाणी फाउंडेशन द्वारा सामाजिक सरोकार के कार्यो का शुभारंभ ग्राम पंचायत सनावड़ा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं आंगनवाड़ी केंद्र के बच्चों को सर्दी से बचने के लिए स्वेटर वितरण कर किया गया। स्वेटर वितरण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सतीश राठौड़ व संजीव कुमार गुप्ता एवं अदाणी के अन्य कर्मचारी सुशील शर्मा, श्रीनिवास व्यास, मल्य बोहरा व दिनेश शर्मा, साथ ही स्थानीय विद्यालय के अध्यापक एवं ग्रामवासी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में विद्यालय के द्वारा स्वागतगीत गाकर अथितियों का स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि संजीव कुमार गुप्ता ने बताया कि अदाणी अक्षय ऊर्जा पार्क के आस पास के गांवों में सामाजिक सरोकार के माध्यम से अदाणी फाउंडेशन के द्वारा कुल 3200 स्वेटरों का वितरण किया जाएगा जिसमें नेड़ान, रासला, द्वाडा, सनावड़ा, मदासर, माधोपुरा,रावरा एवं अन्य दर्जन भर गांव शामिल है। अदाणी फाउंडेशन के सीएसआर हैड गोपाल सिंह देवड़ा ने बताया कि आने वाले समय मे कई विकास कार्य किये जायेंगे जिसमे शिक्षा, आरोग्य, आजीविका विकास, बुनियादी निर्माण कार्य से जनहित को फायदा पहुचेगा साथ क्षेत्र का विकास होगा।

महाकालेश्वर महादेव मंदिर में पौष बड़ा व रूद्राभिषेक आज

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। मलमास पर शनि पुष्य नक्षत्र के उपलक्ष में शनिवार को पौष बड़ा व रूद्राभिषेक का आयोजन होगा। मदिर पुजारी पंडित प्रभाकर श्रीमाली थैलोजी ने बताया कि श्री महाकालेश्वर महादेव मंदिर शास्त्रीनगर में केसर अतर मिक्षित गंगा जल से लघु रुद्राभिषेक होगा। इस अवसर पर भगवान महाकालेश्वर महादेव के हलवा, दाल के बड़े का भोग लगाया जाएगा। साथ ही महादेव का ऋतु पुष्पों से श्रृंगार किया जाएगा।

शर्मा कांग्रेस ओबीसी प्रकोष्ठ के महासचिव

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। उद्यमी नरेन्द्र शर्मा को राजस्थान प्रदेश अन्य पिछड़ा वर्ग विभाग के प्रदेशाध्यक्ष श्रवण तंवर एवं शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सईद अंसारी की अनुमति से शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अन्य पिछड़ा वर्ग विभाग के जिला महासचिव पद पर नियुक्त किया गया है।

एनएसएस शिविर के तहत पौधे रोपे

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। जेएनवीयू वाणिज्य संकाय के राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के पांचवे दिवस को वृक्षारोपण अभियान के रूप में मनाया गया। डॉ उम्मेदराज तातेड ने स्वयंसेवकों को वृक्षारोपण के महत्व बताए। उन्होंने कहा कि पौधे पर्यावरण को शुद्ध करते है, तापमान को सामान्य रखते है। वृक्षों से ऑक्सीजन मिलता है, जो प्रत्येक जीव, जंतु एवं प्राणी को जीवित रखने के लिए आवश्यक है। इस मौके स्वंसेवको ने अलग अलग समूह बनाकर 25 पौधों का रोपण किया।

शिवराज अध्यक्ष व विकास कटारिया सचिव निर्वाचित

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। स्टूडेंट्स फ़ेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) के रातानाडा कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई जिसमें सर्वसम्मति से 13 सदस्यीय कमेटी का चुनाव किया गया। जिसमें शिवराज को अध्यक्ष, मुकेश कटारिया व कुणाल कड़ेला को उपाध्यक्ष, विकास कटारिया को सचिव, मगराज, पूंजाराम को संयुक्त सचिव तथा भोमाराम, टेलाराम, सुनील, त्रिलोक, तरुण सिंह, भोमराज सेजु व गौतम को सचिव चुना गया।

होम्योपैथिक डॉक्टर के अकाउंट से 96 हजार रुपए पार

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। ठगों ने होम्योपैथिक डॉक्टर के अकाउंट से करीब 96 हजार रुपए पार कर लिए। जिनमें से पेटीएम खाते से 5 व 2 हजार रुपए शामिल है। धोखाधड़ी के शिकार डॉक्टर की रिपोर्ट पर उदयमंदिर थाना पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ धोखाधडी व आईटी एक्ट के तहत मामला दर्ज करते हुए जांच शुरु की है। इस मामले की जांच उदयमंदिर थानाप्रभारी प्रदीप कुमार शर्मा कर रहे है। पुलिस ने बताया कि पटवा हवेली, अरुण होटल के सामने सोजती गेट निवासी डॉक्टर महेंद्र पटवा पुत्र राजमल ओसवाल ने उदयमंदिर थाने में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया है कि गत 7 जनवरी की रात करीब 9 बजे उनके मोबाइल फोन पर पेटीएम के केवाईसी नंबर अपडेट करने का मैसेज आया था, साथ ही कस्टमर केयर का नंबर भी दिया गया था। उक्त नंबर पर संपर्क करने पर अज्ञात व्यक्ति ने पेटीएम केवाईसी अपडेट करने का झांसा देकर उनसे एक एप डाउनलोड करवा लिया। एप डाउनलोड करने के साथ ही डॉक्टर पटवा का मोबाइल को हैकर ने हैक कर लिया। बाद में उनके पेटीएम खाते से 5 हजार व 2 हजार रुपए निकाल लिए। देखते ही देखते डॉक्टर पटवा के बैंक ऑफ बडौदा के खाते से अलग-अलग पांच किश्तों में 39 हजार 390, 9 हजार 980, 25 हजार 293, 9 हजार 999 व 5 हजार रुपए निकल गए। पुलिस को दी रिपोर्ट में डॉक्टर पटवा ने बताया है कि उनके बैंक व पेटीएम खाते से करीब 96 हजार 662 रुपए की निकासी की गई है।

इसी तरह चौपासनी हाउसिंग बोर्ड 18 ई/109 निवासी मनजीत सिंह राठौड़ पुत्र विक्रम सिंह ने सीएचबी थाने में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया है कि गुरुवार की शाम करीब 5 बजे शातिर ठग ने पेटीएम केवाईसी अपडेट करने सहित अन्य बातों का झांसा देकर उनसे एक एप डाउनलोड करवा लिया और उनका मोबाइल फोन हैक करते हुए ओटीपी नंबर की जानकारी लेने के साथ ही उनके खाते से करीब 1 लाख 39 हजार 900 रुपए की निकासी कर ली। स्वयं के साथ हुई धोखाधड़ी का अहसास होने पर पीड़ित ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ चौपासनी हाउसिंग बोर्ड थाने में धोखाधडी व आईटी एक्ट के तहत मामला दर्ज कराया है।

एसबीआई का आवास ऋण मेला आज और कल

जोधपुर, 10 जनवरी (कासं)। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा आवास ऋण के लिए 11 व 12 जनवरी को सुबह 10 से सांय 5 बजे तक भारतीय स्टेट बैंक जालोरी गेट शाखा के सामने आवास ऋण मेला आयोजित किया जाएगा। भारतीय स्टेट बैंक के प्रशासनिक कार्यालय के उप महाप्रबंधक सुजीत कुमार एवं आवास ऋण विपणन टीम के सहायक महाप्रबंधक सुनील गर्ग ने बताया कि आवास ऋण को रेपो रेट से लिंक करने के पश्चात आवास ऋण की ब्याज दरों में आई कमी के कारण ग्राहकों के भारी उत्साह को देखते हुए यह मेला आयोजित किया जा रहा है। जिसमें आवास ऋण की विभिन्न योजनाओं की संपूर्ण जानकारी एवं इन योजनान्तर्गत प्राप्त नए ऋण आवेदनों के संबंध में सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि मेले में भारतीय स्टेट बैंक के आवास ऋण विशेषज्ञों के द्वारा सेवाएं प्रदान की जाएंगी। इसके अतिरिक्त अन्य बैंक एवं वित्तीय संस्थानों से पूर्व से जारी आवास ऋणों को भी भारतीय स्टेट बैंक में स्थानान्तरित टेकओवर करने हेतु विशेष रियायती ब्याज दर की सुविधा सुलभ करवाई जाएगी जिसमें आमजन को भारतीय स्टेट बैंक की कम ब्याज दरों का लाभ प्राप्त हो सके।

दैनिक
जलते दीप

जयपुर, शनिवार 11 जनवरी 2020

अदालत का कड़ा रुख

नागरिकता संशोधन कानून कई स्तरों पर समाज को मथ रहा है। इतने दिन बीत जाने के बाद भी न तो इसका विरोध करने वालों के तेवर कम हुए हैं और न ही इसका समर्थन कर रहे लोगों के उत्साह में कहीं कोई कमी दिखी है। संसद में बना यह कानून जब सड़क से लेकर साइबर मीडिया तक हर जगह नित नए दृश्य पेश कर रहा है, तो दूसरी तरफ न्यायपालिका को भी इसकी कई जटिलताओं से जूझना पड़ रहा है। कानून की सांविधानिक वैधता को चुनौती देने वाली 59 याचिकाएं पहले ही अदालत के दरवाजे पर पहुंच चुकी हैं। इनमें कांग्रेस नेता जयराम रमेश की याचिका भी है और भारतीय मुस्लिम लीग की भी। इनमें से कुछ याचिकाओं में कानून पर स्थगन आदेश देने की मांग की गई थी, हालांकि अदालत ने तुरंत कोई स्थगन आदेश तो नहीं दिया, लेकिन अगली सुनवाई के लिए 22 जनवरी की तारीख मुकर्रर कर दी है। लेकिन इस बीच देश के तमाम उच्च न्यायालयों में भी ऐसी ही याचिकाएं दायर हो गई हैं, जिसे लेकर केंद्र सरकार को चिंता है कि एक साथ कई जगह मामला चलने से आने वाले फैसलों में अंतर्विरोध हो सकता है। इस मुद्दे को लेकर केंद्र सरकार ने प्रधान न्यायाधीश एसए बोबडे की अगुवाई वाली पीठ के सामने यह याचिका पेश की है कि इन सभी मामलों की सुनवाई सुप्रीम कोर्ट में एक साथ हो। पीठ शुक्रवार को इस मामले की सुनवाई करेगी। लेकिन इस बीच इसी पीठ के सामने एक अलग किस्म की याचिका पहुंची, और वह भी इस अनुरोध के साथ कि मामले की तुरंत सुनवाई की जाए। यह मांग तो पूरी नहीं हुई, लेकिन इससे सुप्रीम कोर्ट को अपना रुख स्पष्ट करने का मौका जरूर मिल गया। याचिका दायर करने वाले वकील विनीत ढांडा का कहना था कि सुप्रीम कोर्ट नागरिकता संशोधन कानून को सांविधानिक घोषित करे। इसके अलावा याचिका में एक मांग यह भी थी कि इस कानून के खिलाफ आंदोलन कर रहे लोग और मीडिया संस्थान तरह-तरह की अफवाहें फैला रहे हैं, जिन पर तुरंत रोक लगाई जाए। अदालत ने याचिका को न सिर्फ खारिज कर दिया, बल्कि उसे इस बिना पर निरर्थक भी बताया कि जिस कानून को संसद पास कर चुकी है, वह पहले ही सांविधानिक है, उसे अदालत कैसे सांविधानिक घोषित कर सकती है। लेकिन इसके साथ ही प्रधान न्यायाधीश ने इस मौके पर एक और बात कही, जो ज्यादा महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि देश इस समय कठिन दौर से गुजर रहा है, इस समय पहली प्राथमिकता हिंसा रोकने की होनी चाहिए। जब तक हिंसा नहीं रुकती, अदालत इसकी सांविधानिक वैधता पर विचार नहीं कर पाएगी। वैसे यह पहली बार नहीं है, जब सुप्रीम कोर्ट ने इस तरह की बात की है। इसके पहले जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में हुई हिंसा के बाद जब एक याचिका सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई थी, तब भी अदालत ने हिंसा को तुरंत खत्म करने की बात कही थी। वैसे यह मंशा सिर्फ सुप्रीम कोर्ट की ही नहीं, कुछ तत्वों को छोड़कर तकरीबन पूरे देश की ही होगी।

नहर में क्लोजर के मद्देनजर

अब जबकि इंदिरा गांधी नहर में मार्च में प्रस्तावित 70 दिन के क्लोजर का काउंट डाउन शुरू हो चुका है, प्रदेश के दूसरे बड़े शहर जोधपुर के समक्ष जल संकट आशंका उत्पन्न होती दिखाई दे रही है। जोधपुर शहर में पानी की सप्लाई करने वाले कायलाना व तखतसागर में 225 एमएसीएफटी पानी भरा हुआ है। इसमें से 100 एमसीएफटी डेड स्टोरेज को निकाल दिया जाए तो सिर्फ 155 एमसीएफटी पानी पीने योग्य है। इससे शहर में मुश्किल से 12 दिन ही पानी की सप्लाई हो सकती है। ऐसे में 70 दिन के क्लोजर में क्या होगा? उल्लेखनीय है कि क्लोजर के दौरान शहर में संभावित जल संकट से उबारने के लिए पीएचईडी पिछले छह माह से जुटा हुआ है। लेकिन पीएचईडी की तैयारियों को लगातार धक्का लग रहा है। कायलाना व तखतसागर का जल स्तर बढाने के लिए लगातार शहर व गांवों में शट डाउन लिया जा रहा है। दूसरी ओर राजीव गांधी लिफ्ट नहर साथ नहीं दे रही हैं। पिछले छह माह में यह नहर दो बार क्षतिग्रस्त हो चुकी है। इस कारण शहर में पानी का स्टोरेज बढाने में दिक्कत आ रही है। गत 16 अगस्त को बालरवा के पास राजीव गांधी लिफ्ट नहर की दीवार टूट गई थी। इसके कारण तीन से चार दिन तक नहर में पानी की आवक ठप रही। इसका असर जलाशयों में एकत्रित पानी पर पड़ा। पीएचईडी को यहां से 35 एमसीएफटी से ज्यादा पानी का उपयोग करना पड़ा। इससे उबरने के लिए लगातार शहर में हर पखवाड़े व गांवों में हर हफ्ते कटौती शुरू की गई। लेकिन इसके बावजूद जलाशयों में पानी का लेवल नहीं बढ पाया। गत 2 जनवरी को देर रात लोर्डिया गांव में राजीव गांधी लिफ्ट नहर का पाइप फट गया। इसमें से पानी बहकर लोर्डिया गांव में घुस गया, जिससे घर जलमग्न हो गए। पीएचईडी ने नहर की मेंटनेंस करने वाली कंपनी से इसकी रिपेयरिंग शुरू करवाई जो दोपहर तीन बजे तक चली। तब तक पानी बहता ही रहा। इससे शहर को 10 एमसीएफट पानी का नुकसान हुआ। इस तरह क्लोजर से बचने के प्रयासों को धक्का लगता रहा है। अब शटडाउन से भी आखिर पानी का लेवल कितना बढाया जा सकता है? अब एक ही रास्ता बचता है और वह यह कि 70 दिन के क्लोजर की अवधि कम हो। लेकिन आईजीएनपी ने अभ तक 70 दिन के क्लोजर की अवधि कम करने का संकेत नहीं दिया है। हालांकि यह मामला सीएम के स्तर पर भेजा गया है। अभी तक पंजाब ने अवधि कम करने के लिए कोई पहल नहीं की है। क्लोजर की अवधि कम हो तो बात बन सकती है। इंदिरा गांधी नहर में क्लोजर तो होते रहते ही हैं। सवाल यह है कि क्लोजर के मददेनजर पानी स्टोरेज के लिए नई वैकल्पिक व्यवस्थाओं के प्रयास अब तक क्यों नहीं शुरू किये गए।

।। दसवां वेद ।।

-जुगल परिहार

दूहो दसमों वेद समझै तेनै सालै

8762. दुनिया रूप अनूप

दुनिया रंग अनूप है, दुनिया रूप अनूप।
कद ही मन सूं ऊतरै, कद ही लागै चूंप।।

दुनिया का रंग बड़ा अनूप है, दुनिया का रूप भी बड़ा अनूप है। कभी यह बेमानी होकर मन से उतर जाती है, तो कभी यह बड़ी सुंदर लगने लगती है।

दो मित्र थे। एक बहुत हंसमुख, दूसरा उतना ही गंभीर। पहला मित्र अपने घर में जाता तो घर में हलचल मच जाती। कभी इस बच्चे को लेकर ऊपर उछाला तो कभी उस बच्चे को। वह भी बच्चों के साथ बच्चा बन जाता और कहकहे लगते रहते। अपनी स्त्री से भी वह तरह तरह की हंसी मजाकें करता रहता। सारे घर में अच्छी खासी रेल पेल मची रहती। लेकिन दूसरा मित्र इसके विपरीत आचरण करता। वह अनावश्यक न किसी से बोलता,न मजाक करता। कोई काम होता तो अपनी स्त्री या बच्चों से धीरे से कह देता। जब तक वह घर में रहता, एक दम शांति बनी रहती। बच्चे भी उछल कूद नहीं मचा सकते थे। एक दिन दोनों मित्रों की पत्नियां आपस में मिली तो बातचीत के सिलसिले में पहली ने कहा कि बहन, तुम्हारे देवर घर में आते हैं तो आसमान सिर पर उठा लेते हैं। बच्चों के बराबर वे भी बच्चे बन जाते हैं और जब तक घर में रहते हैं, न शांति से खुद बैठते हैं और न दूसरों को बैठने देते हैं। इस पर दूसरी ने कहा कि बहन, हमारे तो उनका स्वभाव एकदम इसके विपरीत है। घर में आते हैं तो सारे बच्चे चुप हो जाते हैं। न मुझसे हंसकर बोलते हैं, न बच्चों से। ऐसे भी भला क्या आदमी होते हैं। लेकिन एक दिन अचानक ही दोनों मित्रों के स्वभाव में परिवर्तन हुआ। पहला मित्र बहुत गंभीर बन गया और दूसरा बहुत हंसमुख। अब दोनों के घरों में विपरित क्रियाएं होने लगी। अगली बार जब दोनों सहेलियां आपस में मिली तो पहली ने कहा कि बहन, क्या बताऊं? कहने की बात नहीं, लेकिन न जाने आजकल तुम्हारे देवर को क्या हो गया है? पहले जब वे घर में आते तो बच्चे किलकारियां मारकर उनके सामने दौड़ते और वे भी बच्चों को खुशी से उठा उठा कर उछालते। मेरे साथ भी बात बात में मजाक करते रहते और घर में चहल पहल मची रहती। लेकिन आजकल तो जब वे घर में आते हैं तो न किसी से बोलते हैं, न हंसते है। इस पर दूसरी ने कहा कि बहन, मैं तो आजकल बहुत ही परेशान हूं। हले जब वे घर में आते तो शांति से बैठकर भोजन करते और अपने काम में लग जाते। लेकिन आजकल न जाने उनको क्या हो गया है जो घर में आते हैं तो किसी को शांति से बैठने ही नहीं देते। बच्चे भी उनके बहुत मुंह लग गए हैं। कोई उनके कंधों पर चढ जाता है तो कोई उनकी उंगली पकड़ कर अपनी ओर खींचता है। जब तक घर में रहते हैं मुए भी शांतिसे बैठने नहीं देते। उनके घर में आते ही खीं-खीं, ही-ही मच जाती है। मैं तो बहुत परेशान हो गई हूं।

निर्णायक बनेगा त्रिकोण का तीसरा कोण!

दिल्ली में विधानसभा चुनावों का बिगुल बज चुका है। राजनीतिक दलों-नेताओं ने तो यह बिगुल पहले से बजा रखा है, पर चुनाव आयोग ने चुनाव कार्यक्रम की घोषणा सोमवार को ही की है। इसके मुताबिक 8 फरवरी को दिल्ली की सभी 70 विधानसभा सीटों के लिए मतदान होगा और 11 को मतगणना। लोकसभा और सभी विधानसभा चुनाव एक साथ कराये जाने की बहस के बीच यह तथ्य काबिलेगौर है कि झारखंड और दिल्ली विधानसभा चुनावों के समय से इस दिशा में किसी गंभीर कोशिश का संकेत नहीं मिलता। पिछले साल अक्तूबर में हरियाणा और महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव हुए तो दिसंबर में झारखंड, और अब दिल्ली विधानसभा चुनाव फरवरी में होंगे। अगर एक साथ चुनाव के मुद्दे पर गंभीरता और स्पष्टता है तो ये चारों चुनाव साथ कराये जा सकते थे। बहरहाल अब दिल्ली विधानसभा चुनाव की बात करें तो पूर्ण राज्य न होते हुए भी वहां के परिणाम किसी भी अन्य राज्य से कम महत्वपूर्ण नहीं होंगे। सच तो यह है कि देश की राजधानी होने के नाते दिल्ली के विधानसभा चुनाव परिणामों में कुछ ज्यादा ही दिलचस्पी रहेगी। इसका एक कारण दिल्ली का राजनीतिक मिजाज और समीकरण भी है। सत्ता पर अराजनीतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों का दल आप काबिज है तो देश के दोनों राष्ट्रीय दलों की हैसियत, खासकर विधानसभा में हास्यास्पद ही है। 70 सदस्यीय विधानसभा में आप के 67 विधायक हैं तो भाजपा के सिर्फ तीन, तो कांग्रेस की उपस्थिति भी नहीं है।

यह सही है कि अतीत में राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के मतदाताओं ने भी लोकसभा और विधानसभा चुनाव में परस्पर विरोधी जनादेश दिया, जिसे भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता भी माना गया। पर वर्ष 2014 की मोदी लहर को पलट कर एकदम विपरीत जनादेश देने का पहला करिश्मा दिल्ली ने फरवरी, 2015 में ही कर दिखाया था। बेशक दिल्ली ने वर्ष 2013 में हुए विधानसभा चुनावों में भी चौंकाने वाला परिणाम दिया था, जब एक नवजात दल–आम आदमी पार्टी (आप) को 28 सीटों के साथ दूसरा बड़ा दल बना दिया। बाहरी दिल्ली के कुछ क्षेत्रों को अपवाद मान लें तो दिल्ली की राजनीति दो ध्रुवीय रही है। एक ध्रुव कांग्रेस और दूसरा जनसंघ (अब भाजपा)। दिल्ली में पहले विधानसभा चुनाव वर्ष 1993 में हुए थे। उस समय दिल्ली भाजपा में केदारनाथ साहनी, विजय कुमार मल्होत्रा और मदनलाल खुराना की तिकड़ी की तूती बोलती थी। भाजपा ने मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में तो किसी को पेश नहीं किया, पर बहुमत मिलने के बाद लॉटरी खुराना की लगी। सरकार कैसी चली, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि पांच साल में तीन मुख्यमंत्री बदलने के बावजूद भाजपा अगले चुनाव में जनादेश नहीं पा सकी और कांग्रेस ने उससे सत्ता छीन ली। कांग्रेस का मुख्यमंत्री चयन भी कम चौंकानेवाला नहीं था। उत्तर प्रदेश से सांसद और केंद्र में मंत्री रह चुकीं शीला दीक्षित को कांग्रेस ने मुख्यमंत्री बनाया तो दिल्ली में राजनीतिक प्रतिक्रिया बहुत सकारात्मक नहीं थी। आखिर दिल्ली के दिग्गज आस लगाये बैठे थे, लेकिन शीला दीक्षित का करिश्मा एक नहीं, लगातार तीन कार्यकाल तक सिर चढ़ कर बोलता रहा।

दरअसल भाजपा और कांग्रेस की क्रमशः पंजाबी और गैर

– राजकुमार सिंह

पंजाबी समुदाय केंद्रित रही राजनीति में उत्तर प्रदेश-बिहार के समीकरण का संभवतः यह पहला प्रयोग था, जो जबर्दस्त हिट रहा। अनेक कद्दावर नेताओंवाली भाजपा ने अपने तरकश के तमाम तीर आजमा लिये, पर शीला दीक्षित के करिश्मे से पार नहीं पा सकी। इस बीच भाजपा ने सुषमा स्वराज को भी मुख्यमंत्री के रूप में पेश कर देख लिया और डॉ. हर्षवर्धन को भी। हां, वर्ष 2013 के विधानसभा चुनाव में हर्षवर्धन के चेहरे के सहारे भाजपा 31 सीटें जीत कर सबसे बड़ा दल अवश्य बनने में सफल रही, पर उसे सत्ता से दूर रखने की खातिर 8 सीटोंवाली कांग्रेस, आप की बैसाखी बन गयी। कांग्रेस के भ्रष्टाचार के विरुद्ध अन्ना हजारे के आंदोलन से उभर कर

आप बनानेवाले अरविंद केजरीवाल ने भी कांग्रेस के समर्थन से सरकार बनाने में कोई संकोच नहीं किया। चंद महीने बाद ही केजरीवाल ने जिस तरह अचानक इस्तीफा दे दिया, उससे उनकी राजनीतिक परिपक्वता पर सवाल भी उठे, लेकिन दिल्लीवालों ने बड़ा दिल दिखाते हुए न सिर्फ उनकी वह भूल माफ कर दी, बल्कि फरवरी, 2015 में हुए विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक बहुमत देकर कांग्रेस-भाजपा की परंपरागत राजनीति को पूरी तरह नकार दिया। लगातार तीन कार्यकाल राज्य में सरकार चलाने वाली 100 साल से भी पुरानी पार्टी विधानसभा में खाता तक न खोल पाये, चंद महीने पहले देश भर में मोदी लहर के चलते तीन दशक बाद लोकसभा में स्पष्ट बहुमत पाने का करिश्मा करने वाली भाजपा तीन सीटों पर सिमट जाये, और एक नवजात दल 70 में से 67 सीटें जीत ले–ऐसी मिसाल शायद ही मिल पाये। तब आप को 54.5 प्रतिशत मत मिले थे।

इन आंकड़ों से इतर दिल्ली की राजनीति को जो बात खास बनाती है, वह है इसी बीच हुए लोकसभा चुनावों के परिणाम। वर्ष 2013 में 28 विधानसभा सीटें जीतने वाली आप अगले साल हुए लोकसभा चुनाव में अपना खाता तक नहीं खोल सकी और मतदाताओं ने दिल्ली की सभी सात सीटें भाजपा की झोली में डाल दीं। लोकसभा चुनावों से शुरू होकर हरियाणा, महाराष्ट्र, झारखंड विधानसभा चुनावों में भी बरकरार दिखी मोदी लहर के चलते उम्मीद की जा रही थी कि 2015 में दिल्ली की सत्ता भाजपा से दूर नहीं। आखिर उसे पिछली विधानसभा की 31 सीटों में बहुमत के लिए 5 सीटें ही तो और जोड़नी थीं, लेकिन दिल्ली के दिल में कुछ और ही था। उत्तर प्रदेश-बिहार के जिस समीकरण के सहारे कांग्रेस ने दिल्ली पर 15 साल तक राज किया, केजरीवाल ने उसे और विस्तृत-मजबूत किया। नतीजा यह निकला कि आप तो 28 से 67 पर पहुंच गयी, पर भाजपा 31 से 3 पर सिमट गयी, जबकि कांग्रेस 8 से शून्य हो गयी। बेशक मुख्यमंत्री के रूप में किरण बेदी को पेश करने से भाजपा में उपजी अंतर्कलह भी इस दुर्गति का कारण रहा होगा, लेकिन शायद सबसे बड़ा कारण रहा कांग्रेस का रसातल को चला जाना। आंकड़े बताते हैं कि 2013 के मुकाबले 2015 में भाजपा का मत प्रतिशत एक प्रतिशत से कम ही सही, पर बढ़ा, लेकिन कांग्रेस का मत प्रतिशत 24.7 से घट कर 9.7 पर आ गया। आश्चर्य नहीं कि कांग्रेस का यह वोट आप के खाते में गया, जिसका मत प्रतिशत 29.5 से उछल कर सीधे 54.5 प्रतिशत पर पहुंच गया।

अभी पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव में दिल्लीवालों ने भाजपा को 56.9 प्रतिशत के साथ सातों लोकसभा सीटें सौंप दीं, लेकिन ज्यादा हैरत की बात यह रही कि मत प्रतिशत में कांग्रेस, आप से आगे निकल गयी। आप के हिस्से 18.2 प्रतिशत मत ही आये, जबकि कांग्रेस को 22.6 प्रतिशत मत मिले। हालांकि हरियाणा में किसी तरह सत्ता बरकरार रखनेवाली भाजपा को महाराष्ट्र और झारखंड में जोरदार झटका लगा है, लेकिन दिल्ली विधानसभा चुनाव में उसकी उम्मीदें कांग्रेस के प्रदर्शन पर भी निर्भर करेंगी। मुख्यमंत्री के रूप में किसी को न पेश करना प्रदेश नेतृत्व के मामले में भाजपा की सीमाओं के साथ ही मोदी पर निर्भरता का भी संकेत है। फिर भी मानना चाहिए कि पार्टी अपने परंपरागत जनाधार को बनाये रख सकती है, लेकिन उसकी चुनावी सफलता इस पर निर्भर करेगी कि कांग्रेस, आप से अपना परंपरागत जनाधार कितना वापस छीन पाती है। ध्यान रहे कि शीला दीक्षित के निधन के बाद कांग्रेस भी दिल्ली में नेतृत्व संकट से रूबरू है। उधर काम के आधार पर वोट मांगना केजरीवाल के आत्मविश्वास का ही संकेत है। पिछले दिनों दिल्ली की डेढ़ हजार से भी ज्यादा अवैध कालोनियों को वैध कर केंद्र की भाजपा सरकार ने भी बड़ा चुनावी दांव चला है। मुफ्त पानी, सस्ती बिजली और मोहल्ला क्लीनिक सरीखे चुनावी वायदों पर अमल से केजरीवाल अपने जनाधार में अगले कार्यकाल में और बेहतर की उम्मीद जगाने में सफल दिख रहे हैं। ऐसे में त्रिकोण के तीसरे कोण कांग्रेस का प्रदर्शन इस चुनावी जंग में एक बार फिर निर्णायक साबित हो, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

जल तरंग

नन्हे-मुन्ने की मुट्ठी में चंद सांसें

दूर कहीं बज रहे गाने 'नन्हे-मुन्ने तेरी मुट्ठी में क्या' को सुनकर सरकारी अस्पताल में भर्ती एक बच्चे के मुंह से बेसुधी की स्थिति में निकला 'चन्द साँसें'। ये शब्द सुनकर पैर थम गए, मन भारी हो गया, हृदय के भीतर कुछ रिसता-सा महसूस हुआ। सोचने लगा– 'क्यों पड़ते हैं गरीब के बच्चे बीमार असमय मरने के लिए– क्या उन्हें पता नहीं है कि इस संवेदनहीन व्यवस्था में उनकी उखड़ती सांसों को पूरी तरह उखाड़ फेंकने की भलीभांति व्यवस्था की गई है। उनकी मौत किसी को झकझोरेगी नहीं अपितु एक आंकड़े के रूप में कागजों में दर्ज हो जाएगी। जब जरूरत होगी तो व्यवस्था उन कागजों को हाथ में लहराते हुए बताएगी कि गत वर्ष इन्हीं महीनों में 101 बच्चों की मौत हुई थी जबकि इस साल यह आंकड़ा मात्र 99 है। पिछले एक साल में स्वास्थ्य सेवाओं में लगातार किए गए सुधार से इस वर्ष शिशु मृत्यु दर में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज हुई है।'

इसके बाद कोई प्रश्न नहीं और न कोई उत्तर दिया जाएगा। किसी की जिम्मेदारी तय होने का सवाल ही नहीं। यदि ज्यादा बवाल मचा तो मजिस्ट्रीयल जांच के आदेश हो जाएंगे। प्रथम तो इस जांच की रिपोर्ट आएगी नहीं और यदि आ भी गई तो उसी निर्धारित फार्मेट में आएगी, जिसमें पहले भी अनेक प्रांतों से सैकड़ों रिपोर्ट्स आ चुकी हैं। बताया जाएगा कि बच्चे बहुत खराब स्थिति में लाए गए थे, उन्हें बचाने की पूरी कोशिश की गई। यह कोई रिपोर्ट नहीं बताती कि अस्पताल में उपलब्ध उपकरणों और स्टाफ की स्थिति क्या है। बच्चे वेंटिलेटर या वार्मर नहीं मिल पाने से मरे या अस्पताल में आक्सीजन के सिलेण्डर उपलब्ध न होने की वजह से। उनको मरना था सो मर गए। मंत्री जी सही ही तो फरमाते हैं कि जीवन-मरण ऊपर वाले के हाथ है। मां कसम, यह डायलॉग है बहुत काम का। समय पर लाज रख लेता है। जितना महत्वपूर्ण यह डायलॉग है उससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण कागज होते हैं। पांच साल पहले कितने बच्चे किस कारण से मरे थे यह तो कागज ही बता पाएंगे। कागज हों तो बात की विश्वसनीयता बढ़ जाती है, बात को मनवाने का आत्मविश्वास आ जाता है, डंके की चोट पर पुरानी सरकारों पर निष्क्रियता का आरोप मढ़ सकते हैं, संवेदनहीनता को भी संवेदनशीलता सिद्ध कर सकते हैं। उस बच्चे के शब्दों से व्यथित हुए हृदय के साथ बच्चे के सिर पर हाथ फेरा– 'बेटे ऐसा नहीं कहते, तुम देश का भविष्य हो।'

वह नींद में फिर बुदबुदाया–'भविष्य, यहां से बच भी गया तो कोई दरिंदा शोषण करके गला घोंट देगा। या फिर छिपकली गिरने से जहरीला हुआ मिड डे मील खाकर फिर यहीं आ जाऊंगा, हमें भविष्य मानता कौन है–हम एक आंकड़े भर हैं जिंदा रहने के साथ भी और जिंदा रहने के बाद भी।'

सेना के साये में इमरान का नया पाक

कहने को तो भारत को कराची स्थित अपना महावाणिज्य दूतावास वर्ष 1994 में अयोध्या प्रकरण पाकिस्तानियों के उग्र तेवरों के मद्देनजर बंद करना पड़ा था, इसका मूल कारण भारत के विभाजन में छिपा था। तब 1947 में भारत में रहते आए लाखों मुस्लिम कराची, सक्खर और हैदराबाद (सिंध) के इलाके में बसने की खातिर हिजरत करके गए थे। जाहिर था उनके अंदर नए देश में, जो मुस्लिम बहुल है, वहां अपने लिए बेहतर जिंदगी की आस थी। इन परिवारों ने इस उम्मीद में जिन्नाह के पाक में बसना कुबूल किया था जो उसके मुताबिक नई 'जन्नत' था। लेकिन समय के साथ उन्होंने पाया कि चार दशक बीत जाने के बाद भी उन पर लगा 'मुहाजिर' (शरणार्थी) का ठप्पा ज्यों का त्यों बरकरार है!

उस वक्त बतौर महावाणिज्यिक दूत कराची और अन्य जगहों में रहने वाले इन 'मुहाजिरों' और इनके रिश्तेदारों के हित पूर्वजों के देश भारत में फिर से बनाना दिलचस्प अनुभव था। कुछ ऐसे अवसर होते थे जब हमें आम लोगों से खुलकर मिलने की आजादी मिला करती थी, खासकर उन मौकों पर जब भारत से कोई टीम खेलने को पहुंचे, खासकर जब भारतीय क्रिकेट टीम ने वर्ष 1982 और 84 में पाकिस्तान दौरा किया था। तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री एनकेपी साल्वे, जो भारतीय क्रिकेट से काफी जुड़े हुए थे और पाकिस्तानी गायिका नूरजहां के मुरीद भी थे, उन्होंने सुझाव दिया कि मैं भी भारतीय टीम के साथ पाकिस्तान के दौरे पर रहूं। इससे मुझे दोनों ओर के क्रिकेटरों से मिलने और मेजबानी का मौका मिला था। उस वक्त सुनील गावस्कर भारत के तो इमरान खान पाकिस्तानी टीम के कप्तान थे।

हालांकि, उस दौरे में भारत की ओर से गावस्कर और मोहिंदर अमरनाथ ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया था लेकिन इमरान खान ने भारतीय बल्लेबाजों को अपनी रिवर्स स्विंग गेंदबाजी से उखाड़कर रख दिया था। यहां रोचक बात यह है कि दोपहर के खाने और चाय विराम के समय गेंद पाकिस्तानी अंपायरों की जेब में रहने के बाद और आश्चर्यजनक रूप से ज्यादा रिवर्स स्विंग पकड़ लेती थी! लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इमरान खान वाकई एक टेलेंटेड बॉलर थे, जिन्होंने पाकिस्तान को विश्व कप में अप्रत्याशित विजय दिलवाई थी। मेरे जहन में जो ज्यादा याद है, वह है इमरान का कमेंट, जिसे बाद में एक पाकिस्तानी कमेंटेटर ने मेरे साथ साझा किया था। उक्त कमेंटेटर ने जब इमरान से पूछा था कि भारत के खिलाफ खेलते वक्त आपकी गेंदबाजी आसामान्य ढंग से तीव्र, स्विंग और चाल पकड़ लेती है, इसकी वजह? इस पर इमरान ने कहा, 'जब भी मैं भारत के विरुद्ध उतरता हूं तो मेरे लिए यह महज क्रिकेट नहीं होता है, तब मैं कश्मीर के बारे में सोचता हूं और इसे जिहाद की तरह लेता हूं!' उनके यह विचार हम हमवतन तेज गेंदबाजों वसीम अकरम, वकार यूनुस और शोएब अख्तर से अलहदा थे, जो भारत के प्रति काफी हालांकि सख्त गेंदबाजी किया करते थे, लेकिन उन्होंने कभी भी अपने खेल को जिहाद से नहीं जोड़ा था!

इमरान खान के राजनीतिक गुरुओं में कुछ फौज से हैं, इनमें एक

– जी. पार्थसारथी

उनकी तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी का संस्थापक सदस्य भी है, नाम है ले. जनरल हमीद गुल, घोषित कट्टर मुस्लिम सोच वाला यह शख्स कुख्यात आईएसआई का पूर्व मुखिया रह चुका है। गुल कश्मीर और भारतीय मुसलमानों के प्रति काफी हैरतअंगेज विचार रखता है। साफ

दिखाई दे रहा है कि इमरान खान सेना के पिछलग्गू हैं और इसको पाकिस्तान के राज-काज में और ज्यादा से ज्यादा भूमिका देने को सदा तत्पर रहते हैं। यूं तो पाकिस्तान में विदेश और सुरक्षा संबंधी नीतियों में सेना अपनी बात मनवाती आई है, खासकर भारत, चीन, अमेरिका, रूस और महत्वपूर्ण इस्लामिक देशों जैसे कि सऊदी अरब और ईरान के मामलों में। अब पिछले कुछ समय से वह आर्थिक प्रबंधन में भी दखल देने लगी है।

सेनाध्यक्ष कुमर बाजवा और उनके मातहत आईएसआई मुखिया ले. जनरल फैज हमीद प्रधानमंत्री इमरान खान के साथ अमेरिकी दौरे पर गए थे, जहां ये लोग राष्ट्रपति ट्रंप से मिले थे। यह पहली मर्तबा था जब सेना के उच्च अधिकारी व्हाइट हाउस में हुई बैठक में शामिल हुए थे। इस मुलाकात से पहले जनरल बाजवा चीन और ईरान के साथ संबंधों पर अपनी मुहर लगा चुके थे। परंतु यह करतारपुर कॉरीडोर खोलने की मार्फत है कि जब बाजवा ने सार्वजनिक रूप से भारत के साथ रिश्तों के मामले में अपनी महती भूमिका का इजहार किया था, जब एक समारोह में भारतीय पंजाब के मंत्री के साथ गलबहियां डालते हुए इस निर्णय के बारे में जानकारी दी थी। विदेशी मुल्कों जैसे कि यूके और कनाडा में रहने वाले आप्रवासी सिख समुदाय के दीगर तत्वों का इस्तेमाल करते हुए आईएसआई हिंदू-सिख में रार डालने का लंबे समय से प्रयास करती आई है। जनरल बाजवा ने इमरान खान का इस्तेमाल करते हुए देश के आर्थिक नीति निर्धारण में भी घुसपैठ कर ली है, उन्होंने खुद को शीर्ष आर्थिक संस्था में शामिल करवा लिया है। इस नई जमात को राष्ट्रीय विकास परिषद का नाम दिया गया है।

इमरान प्रशासन का इससे भी ज्यादा चौंकाने वाला काम यह है कि खैबर-पख्तुनवा प्रांत के मुख्य न्यायाधीश वकार सेठ के खिलाफ सेना ने जो कुप्रचार चला रखा है, उसकी ताईद करना। वकार सेठ उस विशेष अदालत की सदारत कर रहे थे, जिसने पूर्व सैन्य तानाशाह जनरल परवेज़ मुशर्रफ को वर्ष 2007 में तख्तापलट के बाद न केवल निर्वाचित सरकार को हटाकर बल्कि देश के मुख्य न्यायाधीश सहित सर्वोच्च न्यायालय के अनेक न्यायाधीशों को पदच्युत कर आपातकाल घोषित करने के दोष में और संविधान से छेड़छाड़ के जुर्म में 'सजा-ए-मौत' का फरमान सुनाया है। इस तानाशाही के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो का रहस्यमयी कत्ल भी हुआ था। इंसाफ पसंद जज के रूप में जाने जाते न्यायमूर्ति सेठ इससे पहले भी सेना के हाथ में गैर-संवैधानिक ताकत बने रहने को चुनौती देते आए हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण फैसले में न्यायमूर्ति सेठ ने एक सैन्य अदालत द्वारा 74 लोगों को दी गई मौत की सजा को रद्द कर दिया है, जबकि जनरल बाजवा ने उक्त फैसले की ताईद की थी। जनरल मुशर्रफ पर आए फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए सेनाध्यक्ष बाजवा के पिट्ठू दो स्टार वाले मेजर जनरल गफूर ने दावा किया : 'आज आया फैसला, खासकर इसकी शब्दावली, इनसानियत- मजहब और हमारे मूल्यों के खिलाफ है।' उन्होंने इसे देश के खिलाफ काम करने वाले तत्वों, अंदरूनी और बाहरी, की शैतानी साजिश ठहराया है, जिसे नाकाम किया जाना चाहिए।

उच्च स्तर के न्यायाधीश के आए फैसले पर आए जनरल गफूर के उक्त बोल यदि किसी अन्य सभ्य प्रजातंत्र में दिए गए होते तो वह बंदा सलाखों के पीछे होता। लेकिन उनकी भर्त्सना करने की बजाय इमरान खान के मंत्री सार्वजनिक तौर पर उलटे न्यायमूर्ति को कोसते हुए दिखाई दिए। अब बहुत कुछ पाकिस्तानी सर्वोच्च न्यायालय के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश मुहम्मद चौधरी पर निर्भर करता है कि क्या वे भी पूर्व में अपने समकक्ष इफ्तिखार मुहम्मद चौधरी जैसा जिगरा दिखाएंगे, जैसा उन्होंने वर्ष 2007 में मुशर्रफ द्वारा घोषित किए राष्ट्रीय आपातकाल को चुनौती देने वाले फैसले में कर दिखाया था।

बिना डेटा सर्विस ऐसे लें जानकारी...

अगर आप अपने स्मार्टफोन पर विकिपीडिया, ट्विटर और गूगल मैप जैसी वेबसाइटों से जानकारी लेना चाहते हैं तो उसके लिए डेटा सर्विस होना जरूरी है, लेकिन अगर आपने सही ऐप डाउनलोड किया है तो बिना डेटा सर्विस के भी इन वेबसाइटों से कुछ जानकारी ले सकते हैं। बस थोड़ी सी मेहनत करनी होगी और आपको ये समझना होगा कि किन किन चीजों के बारे में आप जानना चाहते हैं। अगर आपको दुनिया भर से जुड़ी टेक्नोलॉजी की खबरें पढ़नी हैं तो गूगल प्ले स्टोर से फीडमी नाम के आरएसएस फीड पर आपको सब कुछ मिल जाएगा।

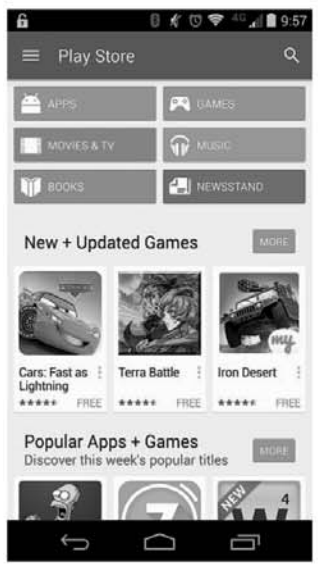

इस ऐप की सेटिंग में जाकर इसको फुल ऑफलाइन सिंक पर सेट कर लीजिए। उसके बाद सभी टेक्स्ट और तस्वीरें आपको फोन पर ऑफलाइन भी मिलेंगी। यानी बिना इंटरनेट कनेक्शन के आप अपने आरएसएस फीड को पढ़ सकते हैं। ताजा खबरों के बारे में अगर आपको जानना है तो इसके लिए भी डेटा सर्विस जरूरी नहीं है। एसएमएसमार्ट नाम के ऐप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर लीजिए। उसके बाद आपको एसएमएस भेजने पर ताजा खबरें आपके इनबॉक्स में आ जाएंगी। इसी तरह सभी ताजा ट्वीट भी अपने इनबॉक्स में मंगा सकते हैं।

अगर आपके पास काफी एसएमएस भेजने वाला प्लान है और डेटा प्लान नहीं है तो ये आपके लिए बहुत बढ़िया विकल्प है। अगर आपको विकिपीडिया पर कुछ ऑफलाइन पढ़ना है तो किविक्स नाम का ऐप आपके काम आएगा। ये पूरा विकिपीडिया आपकी जरूरत के लिए ऑफलाइन रखता है। गूगल मैप को भी आप ऑफलाइन इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन ये आप सिर्फ एक महीने के लिए ही कर सकते हैं। उसके बाद आपको मैप को फिर से डाउनलोड करना होगा। गूगल मैप के अलावा साइजिक, वेज, नोकिया हियर, मैपक्वेस्ट, मैपफैक्टर जैसे विकल्प भी हैं।

लाइट पर आधारित प्रोसेसर...

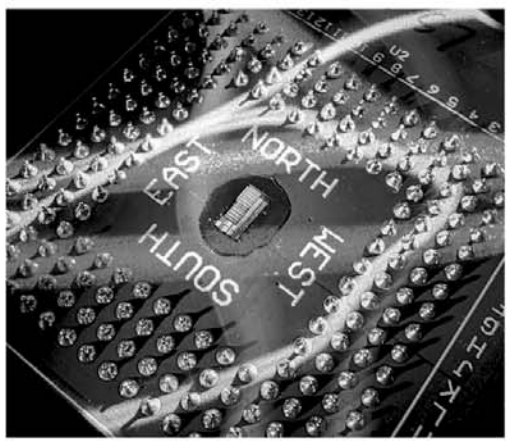

यह वर्ष वैज्ञानिक सफलताओं से भरा रहा है और इस बात पर ध्यान देते हुए यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो ने वर्ष के अंत में विज्ञान के क्षेत्र में धमाल कर दिया है। यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो के वैज्ञानिकों ने इलेक्ट्रिसिटी की जगह पूरी तरह लाइट से डाटा ट्रांसमिट करने वाला पहला प्रोसेसर बनाया है जो आम इस्तेमाल किए जाने वाले प्रोसेसर की तरह ही काम करता है। यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो द्वारा विकसित किया गया यह प्रोसेसर सिर्फ 2 कोर से बना है जो कि अभी ज्यादा पावरफुल नहीं है। हालांकि इस प्रोसेसर को कंप्यूटिंग क्षेत्र में एक बड़ा सुधार कहा जा सकता है क्योंकि आने वाले समय में प्रोसेसर कोर्स बढ़ाने से पावर बढ़ेगी जो प्रोसेसिंग में स्पीड देने के साथ ज्यादा एक्यूरेसी देगी।

नए साल में ताकतवर ब्लूटूथ...?

ब्लूटूथ तकनीक के जरिए मोबाइल फोन समेत कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में तस्वीरों और अन्य डाटा का आदान-प्रदान हो रहा है। भले ही इस तकनीक का दायरा कम हो, लेकिन तकरीबन मुफ्त होने के कारण यह काफी लोकप्रिय है। अब नए साल में इसे व्यापक तौर पर अपडेट करने और ताकतवर बनाने की तैयारी हो रही है, जिसमें इसका दायरा काफी बढ़ जाएगा।

दुनिया को एक ग्लोबल विलेज में तब्दील करने का श्रेय इंटरनेट को दिया जाता है। इंटरनेट ने ढेरों ऐसे प्लेटफॉर्म मुहैया कराए हैं, जिसका उपयोग कर अब मीलों दूर बैठे इंसान हर पल एक दूसरे से जुड़ा हुआ महसूस करने लगे हैं। फेसबुक, ट्विटर, जीमेल, व्हॉट्स एप आदि दर्जनों ऐसे टूल हैं, जिन्होंने न सिर्फ तकनीक की दुनिया को एकदम से बदल दिया है, बल्कि मानव जीवन के कार्यव्यवहार में क्रांतिकारी बदलाव का हर क्षण गवाह बन रहे हैं। यह तो हुई हम इंसानों के एक-दूसरे से जुड़ने की बात, लेकिन जिन इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स या उत्पादों को अपनी सहुलियत के लिए हमने बनाया है, क्या वे भी ऐसे ही एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं? इसमें कोई दो राय नहीं कि वैज्ञानिक उस दिशा में बहुत आगे निकल गए हैं, जहां तमाम इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं जैसे कार, टीवी, फ्रिज, एसी, मोबाइल, रोबोट, स्वचालित मशीन, हेल्थ उपकरण आदि घरेलू व औद्योगिक उपकरण एक-दूसरे से जुड़े होंगे और आपस में आसानी से संदेशों का आदान-प्रदान कर सकेंगे। इस विचार को इंटरनेट ऑफ थिंग्स नाम दिया गया है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स में वे तकनीकें भी शामिल हैं, जो उपकरणों को एक सीमित दायरे में जोड़ देती हैं, जिससे विभिन्न तरह के संदेशों का आदान-प्रदान आरंभ हो जाता है। ब्लूटूथ भी उनमें से एक है, जिसका इस्तेमाल हम आए दिन तस्वीर या अन्य प्रकार का डाटा दूसरे किसी के मोबाइल फोन या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण में भेजने के लिए करते हैं। हालांकि, समय के साथ ब्लूटूथ तकनीक को उन्नत नहीं बनाया गया। लोकप्रिय होने के सालों बाद भी इसके नेटवर्क का दायरा सीमित ही है और गति भी धीमी।

ब्लूटूथ का नया रूप: डिजिटल तकनीक के विस्तार के दौर में इंटरनेट ऑफ थिंग्स का चलन दिनों-दिन बढ़ रहा है। ऐसे में ब्लूटूथ स्पेशल इंटरेस्ट ग्रुप ने ब्लूटूथ को भी तकनीकी रूप से ज्यादा दक्ष बनाने का फैसला लिया है। माना जा रहा है कि अगले साल ब्लूटूथ हमें एक नये रंग-रूप में नजर आएगा। बताया गया है कि इससे नेटवर्क की रेंज कई गुना अधिक होगी और स्पीड तेज होगी। साथ ही यह नेटवर्क का ऐसा जाल फैलाने में सफल होगा, जिससे दूसरे कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी एक-दूसरे से कनेक्ट हो सकेंगे।

क्या है ब्लूटूथ तकनीक: ब्लूटूथ दो इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, मसलन मोबाइल फोन, कंप्यूटर, लैपटॉप, डिजिटल कैमरा, प्रिंटर आदि, के बीच बिना तार के संपर्क स्थापित करने की एक तकनीक है। यानी यह ऐसी वायरलेस तकनीक है, जो विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को बिना तार के कनेक्ट करती है, वह भी बिना इंटरनेट के। इसके तहत शॉर्ट-वेवलेंथ रेडियो ट्रांसमिशन या तरंगों का इस्तेमाल करते हुए डाटा को एक उपकरण से दूसरे उपकरण में ट्रांसफर किया जाता है। इसके जरिये उपकरणों को आपस में कनेक्ट भी किया जा सकता है। 1994 से हुई शुरुआत ब्लूटूथ शब्द डैनिश या स्वीडिश शब्द ब्लाटांड का अंग्रेजी रूपांतरण है। इसके लोगों में दसवीं सदी में डेनमार्क के राजा हेराल्ड के दस्तखत के अंश भी लिए गए हैं। इस तकनीक का जन्म 1994 में टेलीकॉम कंपनी एरिक्सन द्वारा हुआ था। मूल रूप से इसे कंप्यूटर से अन्य उपकरणों को जोड़ने वाले तारों की संख्या कम करने के लिए विकसित किया गया था।

यह होगा फायदा: ब्लूटूथ को सूचनाओं के लेनदेन का सुरक्षित तरीका माना जाता है। हालांकि, इसके इस्तेमाल की एक सीमा है और अब तक इसे महज कुछ मीटर के दायरे में ही उपयोग में लाया जा सकता है। इसकी खासियतों का विकास करने और लाइसेंस देने की जिम्मेवारी ब्लूटूथ स्पेशल इंटरेस्ट ग्रुप की है। इस ग्रुप में 13 हजार कंपनियां शामिल हैं। हर साल तीन अरब ब्लूटूथ उपकरण दुनिया के विभिन्न भागों में भेजे जाते हैं। आज यह विभिन्न गैजेट का जरूरी हिस्सा हो गया है। जाहिर है इस तकनीक के अपडेट होने से इसे इस्तेमाल करनेवाले सभी लोगों को इसका फायदा होगा।

चार गुना होगी रेंज: ब्लूटूथ स्पेशल इंटरेस्ट ग्रुप ने एक खाका पेश किया है, जिसमें यह बताया गया है कि 2020 में ब्लूटूथ तकनीकी रूप से अपग्रेड हो जाने के बाद किस तरह का हो जाएगा। इसे इस तरह अपडेट किया जाएगा, जिससे इसकी रेंज में चार गुना बढ़ोतरी हो जाएगी। इसकी डाटा ट्रांसफर की गति सौ गुना बढ़ जाएगी और यह कई दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को एक वायरलेस नेटवर्क से जोड़ देगा। यह स्मार्ट घर यानी घरेलू और बाहरी वस्तुओं को कनेक्ट करने में काफी उपयोगी साबित होगा। इसके लिए अतिरिक्त बिजली की खपत नहीं होगी। तेजी से डाटा ट्रांसफर करने में सक्षम होने के बाद यह स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भी लाभदायक हो जाएगा। संबंधित विशेषज्ञ डॉक्टरों को तत्काल डाटा ट्रांसफर करते हुए उनसे बीमारी के इलाज के बारे में सलाह ली जा सकती है।

जुड़ेगा मेश नेटवर्किंग: अपग्रेड होने के बाद ब्लूटूथ का दायरा बढ़ जाएगा और यह एक बड़े से बिल्डिंग को अपने नेटवर्क की रेंज में लेने में सक्षम हो जाएगा। नए ब्लूटूथ में मेश नेटवर्किंग नाम से एक अलग से फीचर जोड़ा जाएगा। मसलन इससे एक ऐसा नेटवर्क जोन बनेगा, जिसके संपर्क में आने के बाद कई उपकरण आपस में जुड़ जाएंगे, जो एक दूसरे को डाटा भेज सकेंगे। इस नेटवर्क क्षेत्र में अलग-अलग उपकरणों को चलाया जा सकेगा। अभी तक यह मोबाइल फोन, कंप्यूटर, कुछ प्रिंटर आदि यदाकदा उपकरणों में देखा जाता है, लेकिन अपग्रेड होने के बाद यह विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों, वाहनों, स्वचालित यंत्रों, हेल्थ उपकरणों, स्मार्ट घरों व औद्योगिक परिसरों आदि में भी लग सकेगा।

इंटरनेट ऑफ थिंग्स : ब्लूटूथ में यह बदलाव इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उत्पादकों, विभिन्न सेवा प्रदाताओं और हार्डवेयर निर्माणकर्ताओं के लिए संभावनाओं के नए द्वारा खोल सकता है। वे अपने उत्पाद ब्लूटूथ से सुसज्जित कर सकेंगे, जिससे इंटरनेट ऑफ थिंग्स का मकसद आनेवाले दिनों में जोर पकड़ सकेगा। इस तरह ब्लूटूथ की अगली यात्रा मोबाइल, कंप्यूटर या प्रिंटर से बहुत आगे निकलने वाली है। इसका उद्देश्य तकनीक से संचालित होनेवाले स्मार्ट घरों, औद्योगिक इकाइयों, स्थान विशेष सेवाएं, स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर और दूसरे इंटरनेट ऑफ थिंग्स संबंधित कामकाज में खुद को उपयोगी बनाना है।

तेजी से बढ़ रहा बाजार: ब्लूटूथ की ओर से कहा गया है कि इंटरनेट ऑफ थिंग्स का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। अभी इससे संबंधित तकनीक का वैश्विक कारोबार दो ट्रिलियन डॉलर है और उम्मीद की गई है कि दस साल बाद यानी 2025 तक इसका कारोबार 11 ट्रिलियन डॉलर को पार कर जाएगा। ऐसे में तकनीक की दुनिया और बाजार में बने रहने के लिए आवश्यक है कि अभी से ही इसमें सुधार के रास्ते पर कदम बढ़ा दिए जाएं।

हर चीज पर कंट्रोल

महज किसी एक इलेक्ट्रॉनिक उपरकण के इंटरनेट या ब्लूटूथ जरिए जुड़े होने पर ही हम फैक्टरी में उत्पादन को नियंत्रित कर सकते हैं। नीदरलैंड में कुछ गायों में खास तरह के सेंसर लगाए गए हैं, जो समय-समय पर किसानों को उनकी सेहत के बारे में सूचना देते रहते हैं। सूचना जल्दी मिलने से बीमार गायों को किसान समय पर उपचार करा सकते हैं। इस तरह बीमारी फैलने से रुक जाती है। इसी प्रकार किसी मशीन के हालात जानने हों, किसी पुल की संरचना पर नजर रखनी हो या ओवन का तापमान जानना हो, तो यह सेंसर उसे बखूबी कर सकता है। इससे हम अपने आसपास की वस्तुओं को आसानी से नियंत्रित कर सकते हैं।

क्या है तकनीक

वायरलेस नेटवर्क तकनीक जैसा कि नाम से ज्ञात होता है यह बिना तारों की नेटवर्किंग तकनीक है। इसके द्वारा डाटा का आदान-प्रदान बिना तारों या केबल के होता है। इस तकनीक के प्रयोग से केबल में होने वाले खर्च की भी बचत होती है। इस तकनीक में केबल के स्थान पर इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगें, माइक्रोवेव, इन्फ्रारेड आदि के द्वारा डाटा का आदान-प्रदान होता है। वायरलेस तकनीक में टेलीविजन रिमोट, मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, वाइ-फाइ आदि आते हैं। यह तकनीक एक वायरलेस रेंज एरिया के अंदर ही काम करती है। अगर आपका मोबाइल, कंप्यूटर या लैपटॉप व दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण इस रेंज में हैं, तभी वह इंटरनेट या ब्लूटूथ आदि से जुड़ पाएंगे।

तीन तरह के नेटवर्क

आम तौर पर वायरलेस नेटवर्क तीन तरह के होते हैं-वायरलेस लोकल एरिया नेटवर्क यानी डब्ल्यूएलएएन, यह वायरलेस नेटवर्क होता है, जो रेडियो तरंगों का इस्तेमाल करता है। इस तरह के नेटवर्क की रेंज एक कमरे से लेकर पूरे कैंपस तक हो सकती है। वाइ-फाइ इसी के तहत काम करती है। दूसरा वायरलेस पर्सनल एरिया नेटवर्क यानी डब्ल्यूपीएएन। इस नेटवर्क की रेंज काफी कम होती है और यह ब्लूटूथ तकनीक पर काम करता है। इसकी रेंज करीब 30 फीट तक ही हो सकती है। इसमें मोबाइल जैसे उपकरण का काम होता है। तीसरा है वायरलेस वाइड एरिया नेटवर्क यानी डब्ल्यूडब्ल्यूएएन। इस तरह का नेटवर्क मोबाइल सिगनल्स से चलाया जाता है। यही वजह है कि आम तौर पर इस तरह की नेटवर्क सुविधा मोबाइल सेवा प्रदाताओं द्वारा मुहैया करायी जाती है। अगर आप अन्य प्रकार के नेटवर्क की पहुंच से बाहर हैं, तो इस नेटवर्क के जरिये आप इंटरनेट से जुड़ सकते हैं। आजकल वायरलेस कीबोर्ड व माउस भी आ रहे हैं। इनकी मदद से दूर बैठ कर ही कंप्यूटर को चला कर सकते हैं।

नई भूमिका की मांग

ब्लूटूथ को नई भूमिका में लाने की मांग हाल के दिनों काफी बढ़ी है। ज्यादा प्रासंगिक दरअसल, इंटरनेट ऑफ थिंग्स के लिए ब्लूटूथ अधिकांश लोगों की पहली पसंद रही है। यही वजह है कि बाजार में खुद को बरकरार रखने के लिए इसे और उन्नत बनाने की जरूरत महसूस की गई। कहा भी जाता है कि जो समय के साथ नहीं चलता या मांग के अनुरूप अपनी क्षमताओं का विकास नहीं करता, उसे प्रतियोगिता से बाहर होते देर नहीं लगती। चूंकि आज बाजार में इसके अनेक विकल्प आ चुके हैं, ब्लूटूथ इसी सूत्र वाक्य पर काम कर रहा है। यदि ब्लूटूथ अपनी योजना के अनुसार तय समय में क्षमताओं में इजाफा करने में सफल हो जाता है, तो खुद को वायरलेस नेटवर्किंग के टूल के रूप में हर व्यक्ति के जीवन का हिस्सा बन जायेगा। घर और बाहर इसका उपयोग तेजी से बढ़ेगा। यदि यह ऐसा करने में विफल रहा, तो दूसरे प्रतियोगी इसका स्थान ले सकते हैं।

जीवन बदलने का विचार

इंटरनेट ऑफ थिंग्स एक ऐसा विचार है, जो आनेवाले दिनों में हमारे दैनिक जीवन, कारोबार और वैश्विक अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बदल देगा। हालांकि, रोजाना की तमाम चीजों में इसकी शुरुआत हो चुकी है। दरअसल, यह उन भौतिक चीजों का नेटवर्क है, जो इलेक्ट्रॉनिक्स, सॉफ्टवेयर, सेंसर्स और नेटवर्क कनेक्टिविटी से जुड़ी होती है। कनेक्टेड होने से ये डाटा का संग्रह और उनको आपस में शेयर कर पाती हैं। यह एक ऐसी नेटवर्किंग है, जिसमें आपके उपयोग की सभी चीजें यानी माइक्रोवेव से लेकर घड़ी तक इंटरनेट या दूसरे रेडियो तरंग या सेंसर से जुड़ी होती हैं। जैसे अगर आप इंटरनेट ऑफ थिंग्स के दायरे में हैं, तो आपका उपकरण आपके घर और किचेन में रखे अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को कमांड देता है। इसके जरिए डाटा ट्रांसफर किया जा सकता है।

हेल्थकेयर में फायदेमंद

हेल्थकेयर की गुणवत्ता में सुधार के लिए इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। इस तकनीक की मदद से दूर बैठा डॉक्टर अपने टैबलेट या मोबाइल फोन से मरीज की सेहत पर नजर रख सकता है। लाइव मॉनीटरिंग की वजह से डॉक्टर से रुटीन चेक-अप के लिए मरीज को बार-बार हॉस्पिटल जाने की जरूरत भी नहीं रहेगी। बताया जा रहा है कि केंद्र सरकार द्वारा बनायी जानेवाली स्मार्ट सिटी में इस तकनीक का व्यापक स्तर पर इस्तेमाल किया जाएगा। मसलन एक घर या औद्योगिक परिसर इंटरनेट ऑफ थिंग्स के नेटवर्क के दायरे में है, तो उसका मालिक वहां मौजूद सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों या वस्तुओं की निगरानी कर सकेगा या कोई निर्देश दे सकेगा। हालांकि आज 99 फीसदी वस्तुएं एक-दूसरे से जुड़ी हुई नहीं हैं, लेकिन आने वाले दिनों में ऐसा नहीं रहेगा। भविष्य में अधिकांश वस्तुएं और उपकरण इंटरनेट के जरिये नियंत्रित होने लगेंगे। वर्ष 2020 तक दुनिया में 50 अरब वस्तुएं एक-दूसरे से जुड़ जाएंगी।

बिजनेस शुरू करने से पहले समझें...

बिजनेस की शुरुआत करने के लिए आप में सिर्फ जुनून होना ही काफी नहीं है। व्यापार की कुछ जमीनी सच्चाइयां भी होती हैं। उन्हें भी समझना जरूरी है। और भी कई बातें हैं, जो बिजनेस की शुरुआत और उसमें सफलता के नजरिए से बहुत महत्वपूर्ण हैं। बिजनेस में कदम रखने से पहले उन्हें जान लेना जरूरी है, क्योंकि छोटी-छोटी गलतियां ही विफलताओं की वजह बन जाती हैं। आज का दौर उद्यमिता का है। अच्छे कॉलेज से ऊंचे स्तर की व्यावसायिक शिक्षा लेने वाले छात्र भी आजीविका के लिए नौकरी की बजाए बिजनेस को चुन रहे हैं। कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं, जिनमें मल्टीनेशनल कंपनियों के सफल अधिकारियों ने नौकरी छोड़ अपना बिजनेस शुरू किया है। कुल मिला कर हर दूसरा व्यक्ति बिजनेस में हाथ आजमा रहा है, जिसमें से कुछ के हाथ सफलता लग रही है तो कुछ अपने खुशहाल वर्तमान से हाथ धो बैठे हैं।

जमीनी सच्चाई

करियर के विकल्पों और आय की नजर से देखा जाए तो बिजनेस बढ़िया सौदा लगता है, लेकिन अगर इसमें छिपी अनिश्चितता पर गौर किया जाए तो यह खतरों से भरा काम नजर आता है। इस मामले में सोच की जो स्पष्टता जरूरी है, अधिकतर बिजनेस शुरू करने वालों में उसका अभाव देखने को मिलता है। यही कारण है कि व्यापार की जमीनी सच्चाइयों के सामने नौसिखिए बिजनेसमैन घुटने टेक देते हैं। इसीलिए यदि व्यापार करने की सोच रहे हैं तो इसकी जमीनी वास्तविकताओं के लिए खुद को तैयार कर लें।

शर्तें क्या हैं?

यह जरूर पता कर लें कि आप जिस चीज से संबंधित व्यापार करना चाह रहे हैं, उसकी शर्तें क्या हैं? उसकी प्रतिष्ठा, डिमांड और उसका बाजार कहां और कैसा है? प्रतियोगिता क्या, कैसी और कहां-कहां से मिलेगी? उस उत्पाद का भुगतान मार्केट में किस तरह से होता है? यानी भुगतान मिलने की शर्तें, पैटर्न आदि के बारे में भी पता कर लें। आपको उस व्यापार से संबंधित कुशल कारीगरों, आवश्यक मशीनों और ना जाने ऐसी ही कितनी अन्य गहरी बातों का पता पहले ही लगा लेना चाहिए। उसमें छिपे खतरों और बाधाओं की जानकारी जरूर लें। इस तरह आपको कई ऐसी बातों की जानकारी हो जाएगी, जो सफलता की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

कानूनी पक्ष समझें

आप कैसा भी व्यापार करें, उस पर कुछ कानून भी लागू होंगे। उनके बारे में अच्छी तरह पढ़े। उस इंडस्ट्री के क्या मानक हैं, उससे संबंधित सरकारी नीतियां क्या हैं, बैंक सेक्टर उस उद्योग क्षेत्र के बारे में क्या नजरिया दर्शाता है, यह जानने के साथ-साथ पूंजी से संबंधित नियम अच्छी तरह से जान-समझ लें। जो भी व्यापार करने जा रहे हैं, उससे जुड़ा हुआ हर एक नियम अच्छी तरह पढ़ें।

मार्केट को समझें

अमूमन लोग अपने सफल व्यापारी दोस्त या संबंधी को देख कर व्यापार करने के लिए प्रेरित हो जाते हैं। लेकिन यह जरूरी नहीं कि उसके तौर-तरीके अपनाने और भारी-भरकम पूंजी लगाने के बाद भी आप अपने व्यापार में उतने ही सफल हों, जितना कि आपका परिचित। दरअसल यह तो इस बात पर ज्यादा निर्भर करेगा कि आपको अपने दोस्त की तरह ही बाजार की समझ है या नहीं, जिसके लिए आपको मार्केट रिसर्च करनी होगी।

पहले अपनी सुरक्षा

दरअसल कोई भी व्यापार शुरू होने के कम से कम दो साल बाद लाभ देना शुरू करता है। ऐसे में अगर आप व्यापार की सोच रहे हैं तो कम से कम दो-तीन साल तक के लिए अपने रोज के खर्चों के लिए आवश्यक धन की आमद सुनिश्चित करें। कोई इमरजेंसी आने पर उस खर्च से कैसे निपटेंगे, उसका इंतजाम करें। अगर आपकी कुछ जिम्मेदारियां हैं तो अपने घर पर पहले विचार-विमर्श कर लें।

दिमाग से काम लें

चूंकि आपके दोस्त ने अपना ऑनलाइन बिजनेस जमा लिया है, इसका मतलब यह नहीं कि आप भी उसी में सफल होंगे। खुद से पूछिए कि आप जो करना चाहते हैं, उसमें होने वाले लाभ को देख कर आप प्रेरित हुए हैं या यह आपका जुनून है? उस व्यापार से संबंधित योग्यताओं को लेकर खुद से ईमानदार रहें। उस क्षेत्र की कठिनाइयों पर नजर डाल कर अपने धैर्य और हिम्मत की गहराई परखिए, फिर फैसला कीजिए।

कमर कस लें

अकसर व्यापार के लिए कदम बढ़ा रहे लोग तर्क देते हैं कि अब वे अपने मातहत खुद होंगे। अगर आप भी इस जुमले को पसंद करते हैं तो कुछ और बातों पर भी ध्यान दें। माना कि अपने व्यापार में आप ही बॉस होते हैं, लेकिन तब आपके हिस्से में ही सबसे ज्यादा मेहनत आती है। कुछ वक्त तो ऐसा गुजरता है, जिसमें हफ्ते की एक छुट्टी भी आपको नसीब नहीं होगी। अगर दो दिन बैठ गए तो व्यापार भी दो दिन पीछे चला जाएगा। अगर आप दो-तीन साल नॉन-स्टॉप काम करने के लिए तैयार हैं तो फिर कदम आगे बढ़ाएं।

यथार्थवादी बनें

कई बार नए बने उद्यमी शुरुआती सफलता से अपनी आगे की गणनाओं में अति उत्साह दिखाते हैं। लेकिन वक्त एक सा नहीं रहता। अपने लाभ और आय को हमेशा कम करके ही आंकें तो ही आप किसी भी बाधा के लिए तैयार होंगे। याद रखें कि व्यापार में आपको किसी दूसरे को प्रभावित करने की शर्त नहीं होती, इसलिए खुद को धोखा से बेहतर है, सच्चाई समझते हुए आगे बढ़ें।

व्यवस्थित रहें

अपना बिजनेस शुरू करते ही आप उसके सीईओ भी होते हैं और स्टेनोग्राफर भी। अगर आप व्यवस्थित रहने की आदत नहीं डालेंगे तो बिजली, फोन, डेस्क की सफाई, ईमेल्स का उत्तर और अन्य कई छोटे-छोटे, लेकिन अधूरे पड़े काम आपके बिजनेस की गति को प्रभावित करेंगे।

दो महीनों में जापान में पहुंची भूतहा नावें

पिछले दो महीनों से जापान में लकड़ी की करीब 11 छोटी भूतहा नावें पहुंच चुकी हैं। भुतहा इसलिए क्योंकि इनमें 25 लोगों की क्षत-विक्षत लाशें पड़ी हैं। नावों पर कोरियाई अक्षर लिखे हैं, ऐसे में जापानी पुलिस इस बात का अंदाजा लगा रही है कि ये नावें उत्तर कोरिया से आ रही हैं। टूटी-फूटी नावों में आ रही इन लाशों के बारे में जांचकर्ताओं का मानना है कि या तो वे मछुआरे होंगे, जो अपने पोर्ट पर नहीं पहुंच पाए या दमनकारी शासन से भागने की कोशिश करने वाले ये लोग रहे होंगे। कोस्टगार्ड के एक प्रवक्ता ने बताया कि एक नाव में कोरियन पीपुल्स आर्मी नंबर 325 लाल रंग से लिखा था, जबकि अधिकांश नावों में मछली पकड़ने के उपकरण रखे हुए थे। कई लाशों की स्थिति काफी खराब थी और दो लाशों के सिर नहीं थे। इससे लगता है कि इन लोगों की मौत काफी समय पहले हुई होगी। सबसे हालिया घटना जापान के उत्तरी तट वाजिमा पोर्ट पर दर्ज की गई है। यहां पहुंची 40 फुट लंबी एक नाव में 10 सड़ चुके शवों के साथ, मछली पकड़ने के जाल और अन्य सामान पड़े हुए थे। यह पोर्ट कोरियाई प्रायद्वीप से करीब 530 मील (848 किमी) दूर है।

एक गांव में सिर्फ इशारों में ही करते हैं बात

इंडोनेशिया में एक गांव है बेंगकला। इस गांव के लोग पिछली सात पीढ़ियों से मुंह से बोलने की बजाए हाथों के इशारों से ही बातें करते हैं। इस गांव के लोगों को डीफ विलेज के नाम से भी जाना जाता है। साथ ही हैरान करने वाली बात ये भी है कि गांव के रहने वाले ही नहीं, बल्कि यहा कं कई ऑफिस में भी इसी तरह से हाथों के इशारों से ही कार्य चलता है। बाहरी लोग यहां कम ही आते हैं। इसलिए स्थानीय लोग ही यहा की सारी व्यवस्था संभालते हैं। बताया जाता है कि इस सांकेतिक भाषा को काटा कोलोक कहा जाता है। यह सांकेतिक भाषा सैकड़ों साल पुरानी है। इस गांव के अधिकतर लोग बोलने और सुनने में सझम नही हैं और ये समस्या यहां सामान्य से पंद्रह गुना ज्यादा है। यहां के बच्चे जन्म से ही सुनने और बोलने की बीमारी से ग्रस्त होते हैं। यहां कि भौगोलिक स्थिति को इसका कारण बताया गया है।

पंचायत समिति कामां एवं नगर के मतदान कार्यक्रम आगामी आदेश तक स्थगित

■ जलतेदीप निसं, भरतपुर

राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जिले की पंचायत समिति कामां एवं नगर के पंचायत राज आम चुनाव-2020 के तहत 17 जनवरी को पंच एवं सरपंच पद के लिए होने वाले मतदान कार्यक्रम को आगामी आदेश तक स्थगित कर दिया गया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी नथमल डिडेल ने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा पंचायत समिति कामां एवं नगर के 17 जनवरी को होने वाले चुनाव स्थगित होने के कारण पंचायत समिति कामां के निर्वाचन अधिकारी के मतदान दल संख्या 36 से 66 तक एवं 302 से 304 तक तथा मतदान दल संख्या 130 से 233 तक एवं 1063 से 1079 तक के कार्मिकों को 16 जनवरी को एमएसजे कॉलेज परिसर में उपस्थित नहीं होने के निर्देश दिये हैं। इसी प्रकार पंचायत समिति नगर के निर्वाचन अधिकारी के मतदान दल संख्या 104 से 144 तक एवं 309 से 313 तक तथा मतदान दल संख्या 349 से 485 तक एवं 1099 से 1110 तक के कार्मिकों को 16 जनवरी को एमएसजे कॉलेज परिसर में उपस्थित नहीं होने के निर्देश दिये हैं।

मतदान दिवस पर सवैतनिक अवकाश घोषित

■ जलतेदीप निसं, भरतपुर

राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जिले में पंचायतराज संस्थाओं (पंच एवं सरपंच) आम चुनाव-2020 के मतदान दिवस 17, 22 एवं 29 जनवरी को मताधिकार का उपयोग करने के लिए सवैतनिक अवकाश घोषित किया गया है। सम्भागीय श्रम आयुक्त ओपी सहारण ने बताया कि आगामी पंचायतराज संस्थाओं (पंच एवं सरपंच) आम चुनाव-2020 में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 135 (ख) के तहत प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए मतदान दिवस पर जिले में स्थित निजी औद्योगिक संस्थानों, राजकीय उपक्रमों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों तथा अन्य सभी प्रकार के स्थापन के नियोजकों में कार्यरत सभी व्यक्तियों का राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित मतदान के दिवस को सवैतनिक अवकाश घोषित किया जाता है। उन्होंने बताया कि किसी भी नियोजक द्वारा प्रावधानों की अवहेलना करने पर नियमानुसार दण्डात्मक कार्रवाई की जायेगी।

डी सी बैरवा का मनाया 41वां जन्मदिन

■ जलतेदीप निसं, दौसा

पंचायत समिति, दौसा के युवा प्रधान डीसी बैरवा का लोगों ने 41वां जन्मदिन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ प्रधायत समिति के अन्दर मनाया। इस अवसर पर पंचायत प्रसार अधिकारी सहित समस्त स्टाफ व वहाँ पर उपस्थित लोगों ने प्रधान का जन्मदिन केक काटकर व माला और साफा पहनाकर बड़े ही धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर प्रधान ने क्षेत्र की खुशहाली व समृद्धि सहित लोगों में आपसी भाईचारा व प्रेम बना रहे की बात कही।

सीसीए के समर्थन में हस्ताक्षर अभियान

■ जलतेदीप निसं, दौसा

केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा पारित सीसीए कानून के समर्थन में भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष उर्मिला जोशी के नेतृत्व में तिवाड़ी धर्मकांटे के पास हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष रतन तिवाड़ी, भाजपा युवा नेता महेन्द्र चांदा, मण्डल अध्यक्ष मुरारी धौंकरिया, विपित जैन, नरेन्द्र जोशी, कलावती गुप्ता, सरोज मीना, हेमलता जायसवाल, शशी जोशी, संतोष कंवर, कल्पना शर्मा, स्वाती खण्डेलवाल, सपना मीना सहित सैकड़ों लोगों ने बढ़-चढ़कर हस्ताक्षर अभियान में हिस्सा लिया।

निर्वाचन प्रक्रिया में आयोग के निर्देशों की करें अक्षरशः पालना, प्रशिक्षण उपरान्त करें शंका समाधान : प्रशिक्षण प्रभारी

■ जलतेदीप निसं, बूंदी

पंचायत चुनाव, 2020 के तहत जिले में सरपंच व पंच पदों के निर्वाचन के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत शुक्रवार को बूंदी पुलिस ऑडिटोरियम में रिटर्निंग अधिकारी, पीठासीन अधिकारी एवं प्रथम मतदान अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

इस दौरान प्रशिक्षण प्रभारी एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी मुरलीधर प्रतिहार ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रशिक्षण के दौरान प्रत्येक अधिकारी चुनाव की प्रत्येक प्रक्रिया की गहनता से जानकारी प्राप्त करें। प्रशिक्षण उपरान्त अपनी शंका समाधान भी आवश्यक रूप से कर लें। उन्होंने कहा कि निर्वाचन से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या के लिए जिला स्तर पर स्थापित कन्ट्रोल रूम में सम्पर्क किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया प्रारंभ होने के साथ ही प्रत्येक मतदान अधिकारी निर्वाचन आयोग के निर्देशों की अक्षरशः पालना सुनिश्चित करें। प्रत्याशियों के आवेदन प्राप्त कर, आवेदन समय समाप्ति उपरान्त नियमानुसार ही आगामी कार्यवाही करें। उन्होंने यह भी कहा कि प्रत्येक निर्वाचन अधिकारी वही कार्यवाही करे जैसा निर्वाचन आयोग द्वारा निर्देशित किया गया है।

पूनियां ने चूरू व राजस्थान को गौरवान्वित किया

■ जलतेदीप निसं, सादुलपुर

दो से 6 जनवरी 2020 तक मंगलोर (कर्नाटक) में आयोजित अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय एथलेटिक चैम्पियनशिप की 3 हजार मीटर स्टीपलचेज में अतुल पूनिया ने स्वर्ण पदक प्राप्त कर चूरू जिले के साथ-साथ राजस्थान का नाम रोशन किया है। जिला खेल अधिकारी ईश्वर सिंह लाम्बा ने बताया कि अतुल पूनियां ने 4 वर्षों एथलेटिक्स का अभ्यास कर रहा है। वर्ष 2016 में पुणे महाराष्ट्र में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में कास्य पदक, वर्ष 2019 में नेशनल क्रास कंट्री में रजत पदक जीता एवं पिछले 10 माह से कर्नाटक में तैयारी कर रहा है। अतुल पूनिया गांव बैरासर, तहसील राजगढ़ का निवासी है। अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय कि एथलेटिक चैम्पियनशिप 3 हजार मीटर स्टीपलचेज में मात्र 4 सैकेंड से नया कीर्तिमान बनाने से चूक गया। पूनिया का कहना है कि उसका सपना ओलम्पिक में पदक प्राप्त कर राष्ट्र का नाम रोशन करना है। जिला खेल अधिकारी ईश्वर सिंह लाम्बा ने होनहार एथलीट अतुल पूनिया के उज्जवल भविष्य कि कामना करते हुए बधाई देकर शुभकामनाएं दी।

पांडिया को राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त किया

■ जलतेदीप निसं, सादुलपुर

चूरू संसदीय क्षेत्र के विधानसभा नोहर शहर के सामाजिक कार्यकर्ता एवं स्वर्गीय प्रमोद पांडिया स्मृति संस्थान के अध्यक्ष सुरेश पांडिया को राष्ट्रीय गोरक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही उन्हें राजस्थान प्रदेश का सह प्रभारी भी बनाया गया है, राष्ट्रीय गौरक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजीव सिंह सेंगर व राष्ट्रीय चयन समिति की सहमति से पांडिया की नियुक्ति की गई है। इसके साथ ही सुरेश पांडिया को जल्द ही अपनी कार्यकारिणी का विस्तार कर संगठन को मजबूती प्रदान करने को कहा गया है।

सामाजिक कार्यकर्ता युवा समाजसेवी सुरेश पांडेय कि इस नियुक्ति पर नोहर उपखंड क्षेत्र के दो प्रेमियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे गौ हितार्थ की दिशा में किए जा रहे कार्यों को मजबूती प्रदान करने वाला कदम बताया है इस बोर के सामाजिक कार्यकर्ता सुरेश पांडिया समाज सेवा कार्यों में लंबे समय से सामाजिक क्षेत्र और गौ सेवा से जुड़े कार्यों में सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी निभा रहे हैं इसके साथ ही वे रक्तदान शिविर के माध्यम से रक्तदान को लेकर जनजागृति लाने का काम भी पांडिया द्वारा लगातार किया जा रहा है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री सुभाष गर्ग ने ली अधिकारियों की बैठक

अधिकारियों को दिये मेडिकल एवं अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश

■ जलतेदीप निसं, भरतपुर

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग की अध्यक्षता में गुरुवार को सचिवालय में भरतपुर जिले के आर बी एम हॉस्पिटल एवं मेडिकल कॉलेज की व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने एवं चुस्त-दुरुस्त बनाने के लिए राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

बैठक में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री ने अधिकारियों से कहा कि यह हॉस्पिटल पूर्वी राजस्थान का सबसे बड़ा हॉस्पिटल है तथा यहां मरीजों की संख्या काफी अधिक है इसलिए यहां आवश्यकता के अनुसार सभी प्रकार की मेडिकल सुविधाएं एवं व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि हॉस्पिटल में आने वाले मरीजों की सुविधा के लिए नई लिफ्ट की त्वरित व्यवस्था की जाए, जिससे उन्हें किसी प्रकार की परेशानी का सामना ना करना पड़े। उन्होंने कहा कि हॉस्पिटल में नई मशीनों को लगाया जाए जिससे जांच व इलाज के लिए मरीजों को अन्य हॉस्पिटल में नहीं जाना पड़े।

डॉ. गर्ग ने कहा की हॉस्पिटल की बाउंड्री वॉल काफी नीचे बनी हुई है, जो सुरक्षा की दृष्टि से सही नहीं है, उन्होंने बाउंड्री वॉल की लम्बाई बढ़ाने के साथ ही महिला हॉस्पिटल की तरफ फेंसिंग लगवाने के भी निर्देश दिये।

उन्होंने हॉस्पिटल में मुख्य यूनिट्स पर सीसीटीवी लगवाने के हॉस्पिटल में डॉक्टरों की संख्या बढ़ाने, सफाई के लिए ठेकेदारों पर सख्त कार्यवाही करने तथा अन्य व्यवस्थाओं को पुख्ता करने संबंधी निर्देश अधिकारियों को दिए।

इस अवसर पर नगर निगम भरतपुर के मेयर अभिजीत कुमार, चिकित्सा शिक्षा सचिव वैभव गालरिया सहित चिकित्सा शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

डॉ. गर्ग आज भरतपुर दौरे पर

तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) डॉ. सुभाष गर्ग 11 जनवरी को प्रातः 8 बजे जयपुर से रवाना होकर प्रातः 11.30 बजे भरतपुर पहुंचेंगे।

डॉ. गर्ग 11 जनवरी को दोपहर 12 बजे शहनाई मैरिज होम में श्री मित्र भारत समाज संस्थान द्वारा आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेंगे। डॉ. गर्ग दोपहर 1 बजे राष्ट्रीय वंचित लोक मंच, राजस्थान सफाई मजदूर कांग्रेस व वाल्मीकि समाज द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में भाग लेंगे तथा सांय 5 बजे दिल्ली के लिए रवाना होंगे।

ग्राम पंचायत निहालपुरा में जाजम बैठक का आयोजन

महिलाओं को भविष्य में कभी घूंघट नहीं करने की दिलाई शपथ

■ जलतेदीप निसं, दौसा

महिला अधिकारिता विभाग के द्वारा शुक्रवार को ग्राम पंचायत निहालपुरा के खानपुर ढाणी में प्रेमलता शर्मा साथिन ग्राम पंचायत निहालपुरा द्वारा जाजम बैठक का आयोजन किया गया। जाजम बैठक में महिलाओं के अधिकारों एवं घूंघट प्रथा उन्मूलन जागरूकता पर विस्तार से जानकारी दी गई। महिला शक्ति केन्द्र से महिला कल्याण अधिकारी नीरू कुन्द्रा ने बताया कि हमारे देश में घूंघट प्रथा एक कुरूती है महिलाओं को घूंघट नही करना चाहिए तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रह कर समाज के विकास के लिये आगे आना चाहिए क्योंकि घूंघट करने से महिलाओं को कई तरह की समस्या का सामना करना पड़ता है, जिससे उनके आत्मविश्वास एवं सामाजिक व मानसिक स्थिति में कमी आती है। इसलिए इस प्रथा को समाप्त किये जाने के प्रयास किये जाने चाहिए। उन्होंने सभी महिलाओं को भविष्य में कभी घूंघट नहीं करने की शपथ दिलाई गई।

जिला समन्वयक निरंजन लाल टूनलायत ने सभी को सीएम हेल्पलाईन एवं सखी केन्द्र के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। गांव के ही बीरबल जी वार्डपंच ने भी घूंघट प्रथा के बारे में महिलाओं को बताया कि ये मुगलों के समय में लागू हुआ जो आज तक जारी है, इसलिए सभी को घूंघट हटाना चाहिए। कार्यक्रम में प्रेमलता शर्मा साथिन, सुमेर देवी आशा सहयोगिनी, सहायिका तथा ग्राम पंचायत की अन्य महिलाएं उपस्थित थी।

दिव्यांगों ने मनाया स्नेह मिलन

■ जलतेदीप निसं, झुंझुनू

राजस्थान दिव्यांग सेवा संस्थान के सदस्यों ने शहीद स्मारक पर मासिक बैठक का आयोजन कर नववर्ष स्नेह मिलन मनाया। जिसके मुख्य अतिथि श्रवण कुमार गोयनका थे। अध्यक्षता कैलाशचन्द्र टेलर ने की वहीं विशिष्ट अतिथि राकेश सिरोवा, ओमप्रकाश जांगिड़, पूजा कुमारी थी। इस दौरान दिव्यांगों को दो सिलाई मशीन, पांच श्रवण यंत्र, पांच वैशाखी, रजाई, कम्बल, गर्म लोई, स्वेटर, कोट वितरित किये गये। संस्थान के प्रदेश महामंत्री हरचंद सिंह महला ने स्नेह मिलन में शुभकामनाएं देते हुए दिव्यांग हितकारी योजनाओं की जानकारी दी।

हिन्दी राजभाषा ही नहीं बल्कि राष्ट्रभाषा होनी चाहिए : लाम्बा

लाम्बा कोचिंग में विश्व हिन्दी दिवस मनाया

■ जलतेदीप निसं, झुंझुनू

जिला मुख्यालय स्थित लाम्बा कोचिंग कॉलेज में विश्व हिन्दी दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। संस्था निदेशक शुभकरण लाम्बा ने सेना भर्ती अभ्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यदि समस्त देश की सम्पर्क की भाषा एक ही हिन्दी होती और समाज जातियों में विभक्त नहीं होता तो विश्व गुरू कहलाने वाला भारत आज भी विश्व गुरु ही होता और सोने की चिड़िया भी होता और कभी भी किसी देश का गुलाम नहीं होता। इस देश में योग की, आध्यात्म विद्या और प्राकृतिक संसाधनों की शक्ति हमेश मौजूद रही है जो दुनिया के किसी भी अन्य देश में नहीं है इसलिए आज के दिन सरकार, राजनैतिक दलों और जनता को संकल्प लेना चाहिए कि देश में सम्पर्क की एक ही भाषा हिन्दी हो। विश्व में कोई देश ऐसा नहीं है जिसकी अपनी राष्ट्रभाषा नहीं हो इसलिए भारत की राष्ट्रभाषा भी हिन्दी होनी चाहिए।

हिन्दी वो भाषा है जो कि राष्ट्रीय एकता में और विश्व शान्ति की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। मुंशी प्रेमचन्द, कबीर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ आमजन में देश प्रेम की भावना भरती हैं और राष्ट्रीय चेतना जागृत करती हैं। कार्यक्रम में उपस्थित सभी वक्ताओं और श्रोताओं ने हिन्दी भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित करवाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में सेना भर्ती अभ्यर्थियों के साथ लांबा कोचिंग स्टाफ भी मौजूद रहा।

कलक्टर आनन्दी ने किया रोजगार मेले का अवलोकन

■ जलतेदीप निसं, उदयपुर

जिला कलक्टर आनन्दी ने जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग की ओर से एमएलएसयू के विवेकानन्द सभागार में आयोजित संभाग स्तरीय रोजगार मेले का अवलोकन किया। कलक्टर ने मेला स्थल पर लगी विभिन्न स्टॉल्स पर जाकर जानकारी प्राप्त की और संभाग भर से आए प्रतिभागियों से चर्चा करते हुए उन्हें इस प्रकार के अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाने की बात कही। उन्होंने इस वृहद स्तरीय आयोजन के लिए विभाग के प्रयासों को भी सराहा

टाटा ट्रस्ट एवं कल्प संस्था द्वारा सामूहिक रूप से चलाए जा रहे कार्यक्रम के तहत चलो-चल आंगनवाड़ी अभियान का एक दिवसीय प्रशिक्षण

■ जलतेदीप निसं, दौसा

जिले में टाटा ट्रस्ट एवं कल्प संस्था द्वारा सामूहिक रूप से चलाए जा रहे आओ सुनिश्चित कर कार्यक्रम के तहत चलो-चल आंगनवाड़ी अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिले की 40 आंगनवाडी केन्द्रों से संदर्भ व्यक्तियों को बुलाकर एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान संदर्भ व्यक्तियों को गाँव म 1000 दिवस के परिवारों को छांटकर गर्भवती माताओं व बच्चों का वजन लेना तथा पोषण सम्बंधित जानकारी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण में जिला कार्यक्रम अधिकारी पर्वत सिंह राठौड़ ने कुपोषण के दुष्प्रभाव के बारे म जानकारी देते हुए इसके रोकथाम के अलग अलग प्रकार के उपायों पर बातचीत की। कल्प के परियोजना समन्वयक हेमन्त शर्मा ने ग्रोथ निगरानी तथा ग्रोथ मोनेटरिंग चार्ट पर चर्चा की व समझाया।

इस दौरान संस्था से जुड़े अन्य प्रतिनिधियों म रामअवतार नकवाल,ललिता मीणा, सुनीता मीणा, खुशबू जांगिड़ व मित्री कंवर आदि उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय नानी बाई का मायरा कथा का हुआ समापन

■ जलतेदीप निसं, झालावाड़

संकट हरण बालाजी मन्दिर गायत्री नगर कालोनी में चल रही तीन दिवसीय नानी बाई का मायरा कथा के तीसरे दिन कथावाचक शिल्पा पारिक ने कहा भक्ति मे इतनी शक्ति है कि भक्त की परेशानी में भगवान स्वयं आकर भक्त की परेशानी दूर करते है।

कथा में नरसी जी की पुत्री नानी बाई के ससुराल में मायरा लेकर भगवान कृष्ण रुकमणी के साथ पधारे हीरे जवाहरात सोना चांदी कपड़े के साथ मायरा भरा नरसी भक्त की पुकार पर भगवान ने सभी को दर्शन दिये।

इस अवसर पर मुख्य यजमान रामदयाल शर्मा द्वारा सपरिवार के साथ कैलाश शर्मा, सुभाष शर्मा, हरिमोहन शर्मा, नारायण लाल शर्मा, राजकुमार शर्मा, हरिश कुमार, नन्दकुमार सभी ने मायरा पहनाया। इस अवसर पर कथावाचक ने भजन लाम्बी लाम्बी दाड़ी टूटी फूटी गाड़ी आई गयो नरसी रे भात कयया बरसी रे भजनो पर महिला पुरुष ने नृत्य किये।

केशोरायपाटन के पंचायत आम चुनाव 2020 के मतदान केन्द्रों की सूची जारी

185 मतदान केन्द्रों पर 17 जनवरी को होगा मतदाता

■ जलतेदीप निसं, बूंदी

पंचायत आम चुनाव 2020 के तहत केशोराय पाटन पंचायत समिति के अधीन वार्ड पंच एवं सरपंच पद के निर्वाचन हेतु 185 मतदान केन्द्र ग्राम पंचायत के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अथवा राजकीय माध्यमिक विद्यालय में बनाए गए है। इन पर 17 जनवरी को सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक मतदान होगा। मतदान समाप्ति के बाद मतगणना होगी। उपसरपंच का चुनाव 18 जनवरी को होगा।

जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) कलक्टर, बून्दी द्वारा जारी मतदान केन्द्रों की सूची के अनुसार ग्राम पंचायत चिताचा के मतदान केन्द्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चिताचा के कमरा नं.1 में वार्ड 1, 2 व 3, इसी भवन के कमरा नंबर 2 में वार्ड 4, 5 व 6, कमरा नंबर 3 में वार्ड 7, 8 व 9 के मतदाता मतदान कर सकेंगे। ग्राम पंचायत गुड़ली के मतदान केन्द्र राजकीय माध्यमिक विद्यालय गुड़ली के कमरा नंबर 1 में वार्ड संख्या 1 व 2, कमरा नंबर 2 में वार्ड संख्या 3, 4 व 5, कमरा नंबर 3 में वार्ड संख्या 6 व 7, कमरा नंबर 4 में वार्ड संख्या 8 व 9 के मतदाता मतदान कर सकेंगे। ग्राम पंचायत लेसरदा के मतदान केन्द्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन के कमरा नंबर 1 में वार्ड संख्या 1 व 2, कमरा नंबर 2 में वार्ड संख्या 3 व 4, कमरा नंबर 3 में वार्ड संख्या 5, 6 व 7, कमरा नंबर 4 में वार्ड संख्या 8, 9 व 10, कमरा नबंर 5 में वार्ड संख्या 11 व 12, कमरा नबंर 6 में वार्ड संख्या 13, 14 व 15 के मतदाता मतदान कर सकेंगे। ग्राम पंचायत भीया के मतदान केन्द्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन के कमरा नंबर 1 में वार्ड संख्या 1, 2 व 3, कमरा नंबर 2 के वार्ड संख्या 4 व 5, कमरा नंबर 3 के वार्ड संख्या 6 व 7, कमरा नंबर 4 के वार्ड संख्या 8 व 9 के मतदाता मतदान कर सकेंगे।

इसी क्रम में ग्राम पंचायत माधोराजपुरा के मतदान केन्द्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन के कमरा नबंर 1 में वार्ड संख्या 1 व 2, कमरा नबंर 2 में वार्ड संख्या 3 व 4, कमरा नबंर 3 में वार्ड संख्या 5 व 6, कमरा नबंर 4 में वार्ड संख्या 7 व 8 एवं कमरा नबंर 5 में वार्ड संख्या 9 मतदाता मतदान कर सकेंगे। ग्राम पंचायत सूनगर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन के कमरा नबंर 1 में वार्ड संख्या 1, 2 व 3, कमरा नबंर 2 में वार्ड संख्या 4, 5 व 6, कमरा नबंर 3 में वार्ड संख्या 7, 8, 9 व 10, कमरा नबंर 4 में वार्ड संख्या 11, 12 व 13 के मतदाता मतदान कर सकेंगे।

मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी ने सुनेल ब्लॉक की ली समीक्षा बैठक

■ जलतेदीप निसं, सुनेल

कार्यालय खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी सुनेल में मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर साजिद खान की अध्यक्षता में ब्लॉक की समस्त आशा सहयोगिनियों एवं चिकित्सा कर्मियों के साथ समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया।जिसमें सभी आशा सहयोगिनियों को जनवरी माह में परिवार कल्याण नसबंदी कार्यक्रम में दो-दो नसबंदी करवाने हेतु पाबंद किया गया। सीएमएचओ डॉ. साजिद खान द्वारा बताया गया कि परिवार कल्याण कार्यक्रम में विगत कई वर्षों से जिला राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर रहा है। एवं इसी स्थिति को बनाए रखने हेतु समस्त कार्मिकों द्वारा अतिरिक्त क्षमता के साथ किया जाए। जिससे कि जिला पीपीआईयूसीडी अंतरा इंजेक्शन पर भी विशेष जोर देने की आवश्यकता है टीकाकरण कार्यक्रम में प्रत्येक बच्चे को टीकाकरण करते हुए पूर्ण टीकाकरण के शत-प्रतिशत लक्ष्य अर्जित किए जावे। इस हेतु मिशन इंद्रधनुष कार्यक्रम में अतिरिक्त सूत्रों का आयोजन कर लक्ष्यों की प्राप्ति की जावे। आगामी 19 जनवरी से आयोजित होने वाली पल्स पोलियो कार्यक्रम के विशेष रणनीति बनाते हुए प्रथम दिवस 80 प्रतिशत बच्चों को दवा पिलाने का लक्ष्य अर्जित किया जावे। बैठक में चिकित्सा अधिकारी प्रभारी एवं सुपरवाइजर उपस्थित रहे।

कम उपलब्धि वाले कर्मियों को दिया गया नोटिस : उपकेन्द्र ओड़िया खेड़ी, माया खेड़ी, उन्हेल, माथनिया, सिरपुर खुर्द, काली तलाई, दारु खेड़ी, फतेहगढ़ एवं पिडावा शहरी क्षेत्र के कर्मियों को नसबंदी में कम उपलब्धि हेतु कारण बताओ नोटिस जारी करने हेतु निर्देशित किया गया। डॉ.साजिद खान द्वारा समस्त आशाओं को गांव वाइज संभावित मोतियाबिंद मरीजों का सूची बनाकर ऑपरेशन जिला अस्पताल में करवाने हेतु निर्देशित किया गया इस बाबत जल्द ही कार्य योजना बनाकर सूचित किया जाएगा। वहीं सीएमएचओ डॉ. साजिद खान द्वारा समीक्षा बैठक के दौरान सीएचसी सुनेल में आयोजित नसबंदी कैंप का भी निरीक्षण किया गया जिसमें सर्जन डॉक्टर भूपेश दयाल द्वारा 15 महिला नसबंदी के ऑपरेशन किए गए इस दौरान कैंप के प्रभारी डॉ. बालमुकुंद मीणा रहे।

सच्ची आस्था रखने वाली कमला देवी का निधन

■ जलतेदीप निसं, सादुलपुर

अखिल भारतीय खत्री. मोदी.अरोड़ा समन्वय समिति ने एक शोक सभा का आयोजन कर खत्राणि कमला देवी धोधावत का गत गुरुवार को बीकानेर में आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख जताया है। समिति के वरिष्ठ संरक्षक उनके पति राष्ट्रपति अवार्डेड प्रोफ़ एलएलएन खत्री को दिए गए शोक संदेश में समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र मोदी रायमलानी ने लिखा है कि कमला देवी एक मृदुभाषी, सनातन धर्म के प्रति सच्ची आस्था रखने वाली, अतिथियों का आदर करने वाली सत्य बोलने व सत्यता को स्वीकार करने वाली अद्भुत विलक्षणता की धनी देवी रूपी दयावान स्त्री थी।

अव्यवस्थित रूप से खड़े ठेले को हटाने की कार्रवाई

■ जलतेदीप निसं, झालावाड़

नगरपरिषद झालावाड़ द्वारा एन.एच-12 स्थित सर्विस लाईन से अव्यवस्थित रूप से थड़ी, ठेले, बैंचे, पानी की टंकी इत्यादि को हटाने की कार्यवाही की गई।

साथ ही संबंधित व्यवसायिकों को निर्देशित किया गया कि दौबारा सर्विस लाईन पर अव्यवस्थित रूप से दुकानों को लगा पाया गया तो नियमानुसार जुर्माना की कार्यवाही की जावेगी। साथ ही शहर के बस स्टेण्ड, जेल रोड, मंगलपुरा, बड़ा बाजार, मामा भान्जा चौराहा, जयराज पार्क इत्यादि सड़क व बाजारों में सभी व्यवसायियों से एनाउंसमेंट के जरिये अपील की गई की रास्ते पर किसी प्रकार का सामान, बोर्ड इत्यादि नहीं रखें साथ ही अपने व्यवसाय के आस-पास साफ-सफाई रखें एवं गीले व सूखा कचरा पात्र व्यवसाय के पास रखें। कचरे को नगरपरिषद के कचरा वाहन व निर्धारित स्थल में ही डालने की अपील की गई।

इसके साथ ही पतंग व्यवसायियों से चाईना मांझा को रोक होने के कारण दुकानों की निरीक्षण कर चाईना मांझा का उपयोग नहीं करने हेतु पाबन्द किया गया। कार्य के दौरान नगरपरिषद की टीम में महेश प्रकाश सेन, वैदराम सिंह चौधरी, प्रहलाद चन्देल राजू मालवीय, राकेश इत्यादि मौजूद थे। इसके साथ ही लगातार कार्यवाही जारी रहेगी।

बालीवॉल प्रतियोगिता का आयोजन

■ जलतेदीप निसं, झुंझुनू

हुक्मपुरा गांव में वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन समारोहपूर्वक किया गया। जिसमें ग्राम पंचायत के गणमान्य लोगों के साथ साथ विशिष्ट अतिथियों ने कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर शिरकत की। उदयपुरवाटी शिक्षा समिति के चेयरमैन रामावतार धींवा ने बताया कि हुक्मपुरा गांव की युवा टीम का यह विचार अत्यंत काबिले तारीफ है। हमें अगर स्वास्थ्य स्वस्थ रखना है तो इसके लिए खेलों को महत्व देना ही होगा।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक ठाकुर वीरेंद्र प्रताप सिंह रहे तथा अध्यक्षता पूर्व प्रधानाचार्य गुगनराम सोहू ने की।

इस आयोजन में संस्कार स्कूल और स्टेप अप डिफेंस एकेडमी के प्रबंध निदेशक वीरेंद्र प्रताप सोहू ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र का भविष्य युवा शक्ति है और उन्हें सही दिशा देने के लिए खेल प्रतियोगिताएं होनी जरूरी हैं।खेलों में रोजगार और कॅरियर की अच्छी संभावनाएं हैं।इस प्रकार के आयोजन से अच्छे स्वास्थ्य के साथ साथ आपसी भाईचारे को भी बढ़ावा मिलता है।कार्यक्रम संयोजक अनिल सोहू,महीपाल मीणा,सरवर अली व सुमेर शेखावत ने अतिथियों का साफा पहनाकर स्वागत किया।इस प्रतियोगिता में प्रथम विजेता टीम को इक्कीस हजार नगद रुपये व ट्रॉफी तथा उप विजेता टीम को ग्यारह हजार रुपये और ट्रॉफी दी जाएगी।

उद्घाटन मैच श्याम डिफेंस एकेडमी, नवलगढ़ और ताल के मध्य खेला गया जिसमें ताल टीम विजेता रही। प्रतियोगिता में फिलहाल 54 टीमें भाग ले रही हैं। कार्यक्रम में बामलास सरपंच संजू जाखड़, जयपाल जाखड़,दारा सिंह जाखड़,लीलाधर मीणा,श्याम सुंदर शर्मा, महासिंह मौठ,बलवीर सिंह, मोहनलाल, मूलचंद खेतान, रोहिताश बिजारणियां, राकेश जांगिड़, प्रमोद खरींटा, सुमेर सिंह, संजय सोहू,ईस खान, अकरम खान आदि मौजूद थे।

गृह रक्षक एवं स्वयंसेवक 13 को पुलिस लाइन में देंगे उपस्थिति

■ जलतेदीप निसं, भरतपुर

पंचायत राज आम चुनाव-2020 के लिए होमगार्डस, स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं की कानून व्यवस्था एवं ड्यूटी मतदान प्रक्रिया में लगाने के लिए 13 जनवरी को प्रातः 10 बजे जिला पुलिस लाइन पर उपस्थित होने के निर्देश दिये हैं। गृह रक्षा प्रशिक्षण केन्द्र के कमाण्डेंट ने बताया कि पंचायत राज आम चुनाव-2020 के लिए शहरी एवं ग्रामीण होम गार्डस, स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं की कानून व्यवस्था एवं ड्यूटी मतदान प्रक्रिया में लगायी जानी है। उन्होंने बताया कि सोमवार को निर्धारित समय पर उपस्थित नहीं होने वाले स्वयंसेवकों, होमगार्डस के विरूद्ध होमगार्डस अधिनियम 1963 की धारा 8 एवं 9 के तहत कार्रवाई की जायेगी जिसमें 250 रुपये जुर्माना एवं 3 माह की कैद तथा दोनों सजाओं का प्रावधान है तथा सदस्यता से पृथक किया जायेगा।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, राज. राज्य कृषि विपणन बोर्ड, वृत्त-पी.एण्ड.एम जयपुर एवं वृत्त जयपुर

क्रमांक :-1325-375 बिड आमन्त्रण सूचना संख्या 04/2019-20 दिनांक:- 08.01.2020

विभिन्न भवनों का नवीनीकरण एवं मरम्मत कार्य हॉफ-वे-होम, सेठी कॉलोनी, जयपुर, पंत कृषि भवन, जयपुर में विभिन्न मरम्मत कार्य (वर्ष 2019-20), विभिन्न कार्य कृ.उ.म.स. सीकर, झुन्झुनू एवं फल सब्जी सम्बन्धी कृ.उ.म.स. गंगापुर सिटी अनुमानित राशि क्रमशः 223.42, 71.91, 57.20, 23.94, 32.81, 101.47 लाख की ऑन-लाईन बिड ई-प्रोक्यूरमेन्ट (www.eproc.rajasthan.gov.in) के माध्यम से उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत बिडर्स से आमंत्रित की जाती है। बिड से सम्बंधित विस्तृत विवरण बोर्ड की वेबसाईट www.agriculture.rajasthan.gov.in/rsamb एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। (UBNNo. AGM1920WSOB00369 से 00374 है।)

राज.संवाद/सी/19/4565 अधीक्षण अभियन्ता, वृत्त-जयपुर

इंडिलूम ने राजस्थान में लांच किया अपना नया हैंडलूम कुर्तियों और साड़ियों का कलेक्शन

जलतेदीप, प्रेवि, जयपुर

इंडिलूम का नया कलेक्शन स्टाइल स्टेटमेंट इतिहास से प्रेरित है। कोटा भारत के उत्तरी भाग के तीन कपास उत्पादन वाले क्षेत्रों में से एक है। इसकी गुणवत्ता और शिल्प कौशल उत्कृष्ट है। इस संग्रह की साड़ियां और कुर्तियाँ में कॉटन का एक अनूठा मिश्रण हैं - यह कपड़े को ताकत प्रदान करता है, और रेशम- यह साडी और कुर्ती को नरम और चमकदार बनाता हैं। चौकोर चेक पैटर्न (खाट) प्रामाणिक रूप से हस्तनिर्मित है। महीन बनावट, जटिल विवरण, सुंदरता और हल्का वजन इस संग्रह की सुंदरता को और बढ़ाते हैं। नए संग्रह के शुभारंभ पर, इंडिलूम हैदराबाद स्थित सोशल इम्पैक्ट स्टार्टअप दुनिया भर में भारत की समृद्ध विरासत को आधुनिक दिनों के तत्वों के साथ भारत के बुनाई उद्योग को दुनिया के सामने लाने के लिए जाना जाता है । इंडिलूम का नया कलेक्शन कोटा डोरिया राजस्थान के कोटा में कैथून से लिया गया है जो पुरानी भारतीय बुनाई शैली से प्रेरित है। सुरेन चौधरी, सह-संस्थापक इंडिलूम ने कहा, हम ग्राहकों के लिए पुरानी भारतीय बुनाई शैली लाते हुए उत्साहित हैं। हम पूरे भारत के कारीगरों और बुनकरों के साथ सीधे काम करते हैं और उन्हें ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफार्मों पर प्राकृतिक रेशों और नरम कॉटन से बनी साड़ी और कुर्तियां बेचने में मदद करते हैं।

बुनकरों को बेहतर आजीविका प्रदान करने के उद्देश्य से, हमारी टीम क्रॉस ट्रेनिंग्स से उनके कौशल को बढ़ावा देती है और उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं का उपयोग करने के लिए शिक्षित करती है, जिनके बारे में उन्हें जानकारी नहीं होती है। हम उम्मीद करते है कि हमें राजस्थान के निवासियों से अच्छा रेस्पोंस मिलेगा ।

अमेजन ने की 'अमेजन ग्रेट इंडियन सेल' की घोषणा

जलतेदीप, प्रेवि, बेंगलुरू। अमेजन इंडिया की बहुप्रतीक्षित 'ग्रेट इंडियन सेल' वापस आ गई है, इसमें 19 से 22 जनवरी, 2020 तक बड़ी बचत की पेशकश की जा रही है। यहां प्राइम मेंबर्स को 12 घंटे का एक्सक्लूसिव अर्ली एक्सेस मिलेगा, इनके लिए यह सेल 18 जनवरी, 2020 को दोपहर 12 बजे से शुरू होगी। स्मार्टफोन, कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स, फैशन एवं सौंदर्य, घर एवं और रसोई, लार्ज अप्लाइंसेस, टीवी, दैनिक उपयोग की वस्तुओं आदि पर सेलर्स द्वारा दी जा रही शानदार डील्स के साथ, ग्राहक अमेजन. इन पर सैकड़ों कैटेगरी में 20 करोड़ से अधिक प्रोडक्ट्स की खरीदारी कर सकते हैं। ग्रेट इंडियन सेल के दौरान खरीदारी करने वाले ग्राहक एसबीआई क्रेडिट कार्ड और ईएमआई के साथ 10प्रतिशत का अतिरिक्त इंस्टेंट डिस्काउंट प्राप्त कर अधिक बचत कर सकते हैं। ग्राहक बजाज फिनसर्व ईएमआई कार्ड, अमेज़न पे आईसीआईसीआई क्रेडिट कार्ड और ईएमआई एवं चुनिंदा डेबिट और क्रेडिट कार्ड का उपयोग कर नो-कॉस्ट ईएमआई के साथ 12 करोड़ से अधिक उत्पादों की खरीदारी कर सकते हैं। यह ग्रेट इंडियन सेल में ग्राहक बड़े ब्रांड्स पर बड़ी बचत प्राप्त कर सकते हैं, इसमें मोबाइल ब्रांड जैसे वनप्लस, सैमसंग, शाओमी, एप्पल, वीवो, ओप्पो, नोकिया, ऑनर, हुवावे; फैशन ब्रांड जैसे यूसीबी, इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे ब्रांड शामिल है।

टाटा मोटर्स ने नए प्रोडक्ट पोर्टफोलियो के साथ किया वर्ष 2020 का आगाज

जलतेदीप, प्रेवि, मुंबई

टाटा मोटर्स, भारत के अग्रणी ऑटोमोबाइल विनिर्माता में से एक,वर्ष 2020 में नये उत्पाद पेश करने के लिये तैयार है। कंपनी ने शुक्रवार को घोषणा की है कि वह यात्री वाहनों के साथ अपने बीएसवीआई उत्पादों की नई श्रृंखला की पेशकश जनवरी 2020 से शुरू करेगी। इसका प्रदर्शन 4 वैश्विक आयोजनों में भव्यता से किया जाएगा और ग्रेटर नोएडा के आगामी ऑटो एक्सपो 2020 में 14 वाणिज्यिक और 12 यात्री वाहनों का प्रदर्शन होगा।

टाटा मोटर्स ने वर्ष 2020 में अपने 75वें वर्ष में कदम रखा है और इसके पास देश को अपना योगदान देने की समृद्ध विरासत है। कंपनी कनेक्टेड इंडिया के लिये आकांक्षापूर्ण और खोजपरक परिवहन समाधान प्रदान कर स्थायी भविष्य का निर्माण कर रही है। इस मंशा को टाटा मोटर्स के पैवेलियन में थीम के तौर पर प्रस्तुत किया जाएगा। इस अवसर पर टाटा मोटर्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं प्रबंध निदेशक गुएंटर बश्चेक ने कहा, ''हम ऑटो एक्सपो 2020 के लिये अपनी पैवेलियन की थीम 'कनेक्टेड इंडियाः रिस्पॉन्सिबल एंड सस्टेनेबल मोबिलिटी सॉल्यूशंस' की घोषणा करते हुए प्रसन्न हैं। यह थीम हमारी भविष्य की योजना सीईएसएस को जीवंत करेगा, जिसका पूर्ण रूप है- कनेक्टेड, इलेक्ट्रिक, शेयर्ड और सेफ। क्षमतावान, हरित, स्थायी परिवहन समाधानों के भविष्य को साकार करने की जरूरत है। एक जिम्मेदार कॉर्पोरेट के तौर पर हम इस एजेंडा में योगदान देने का भरसक प्रयास कर रहे हैं और बाजार में तेजी से उत्पादों की नई पीढ़ी लाने की तैयारी कर रहे हैं। हम ऑटो एक्सपो 2020 में भविष्य के उत्पादों की अपनी श्रृंखला का अनावरण करने को लेकर रोमांचित हैं, जो न सिर्फ बीएसवीआई के लिये तैयार हैं बल्कि उन्हें हमारे महत्वाकांक्षी ग्राहकों के महत्व को बढ़ाने के लिये डिजाइन और विकसित किया गया है।'' टाटा मोटर्स एक कॉमन कनेक्टेड व्हीकल आर्किटेक्चर का निर्माण कर रहा है, जो वाणिज्यिक, यात्री और इलेक्ट्रिक वाहनों की समूची उत्पाद सूची के लिये होगा, ताकि ग्राहकों के लिये डिजिटल पारिस्थितिक तंत्र का विस्तार हो। इलेक्ट्रिक वाहन भारत को स्वच्छ और हरित बनाने के सरकार के लक्ष्य को सहयोग देंगे।

श्रीराम ट्रांसपोर्ट फाइनेंस ने इंटरनेशनल बॉण्ड मार्केट्स से जुटाए 500 मिलियन अमेरिकी डालर

जलतेदीप, प्रेवि, मुंबई

भारत की सबसे बड़ी एसेट फाइनेंसिंग कंपनी श्रीराम ट्रांसपोर्ट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड ने 5.100 प्रतिशत की दर पर 3.5 वर्ष की अवधि के लिए फिक्स्ड रेट सीनियर सिक्योर्ड 144ए/आरईजी एस बॉण्ड के लिए सफलतापूर्वक 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कीमत हासिल की है।

एसटीएएफसी के इस बॉन्ड ट्रांजेक्शन के रूप में भारत की ओर से पहला अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक सामाजिक बॉण्ड जारी किया गया है। यह ईसीबी दिशानिर्देशों में छूट के बाद से कंपनी द्वारा चौथे सफल यूएस डॉलर बॉण्ड जारी करने का प्रतीक है। एसटीएएफसी का पहला सोशल बॉण्ड जारी करना कंपनी के सोशल फाइनेंस फ्रेमवर्क द्वारा निर्देशित है, जो आईसीएमए के सोशल बॉण्ड प्रिंसिपल्स से जुड़ा हुआ है।

बॉण्ड से प्राप्त आय का उपयोग एमएसएमई फाइनेंसिंग और माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से रोजगार सृजन के लिए किया जाएगा। एसटीएएफसी ने सस्टेनालिटिक्स से सैकंड पार्टी ओपिनियन हासिल की है, जिसमें सोशल बॉण्ड फ्रेमवर्क को 'विश्वसनीय और प्रभावशाली' और केपीएमजी से एक लिमिटेड एश्योरेंस रिपोर्ट के रूप में वर्णित किया गया है। कंपनी ने एक श्रृंखलाबद्ध कॉल के माध्यम से हांगकांग, सिंगापुर, लंदन और अमेरिका में निवेशकों को एंगेज किया। मजबूत निवेशक फीडबैक के साथ ट्रांजेक्शन को 5.375 फीसदी क्षेत्र के प्रारंभिक मूल्य मार्गदर्शन के साथ शुरू किया गया था। उच्च गुणवत्ता वाले लॉन्ग ओनली निवेशकों द्वारा समर्थित एक मजबूत बुक बिल्ड करने के बाद, कंपनी मूल्य निर्धारण को 27.5 एमबीपीएस से 5.100 फीसदी तक रोकने में सक्षम थी।

बॉण्ड को निवेशकों की तरफ से जबरदस्त रेस्पॉन्स मिला और अंतिम ऑर्डर बुक में 2.20 बिलियन अमेरिकी डॉलर अधिक हासिल हुए और 4 गुना से अधिक ओवरसब्स्क्रिप्शन मिला। ट्रांजेक्शन के दौरान 50 फीसदी भागीदारी अमेरिकी निवेशकों की रही, जबकि एशिया से 37 फीसदी और ईएमईए से 13 प्रतिशत भागीदारी रही।

85 प्रतिशत भागीदारी एसेट मैनेजर्स की ओर से, 5 फीसदी बैंकों की तरफसे, 5 प्रतिशत बीमा से और 5 फीसदी निजी बैंकों और अन्य की भागीदारी देखी गई। ऑर्डर बुक में बड़ी संख्या में सोशल बॉण्ड इनवेस्टर्स की ओर से ब्याज और मांग प्राप्त हुई।

टेक्नों ने सबसे बड़ी स्क्रीन वाला स्मार्टफोन 'स्पार्क गो प्लस' लॉन्च किया

जलतेदीप, प्रेवि, नई दिल्ली

वैश्विक प्रीमियम स्मार्टफोन ब्राण्ड टेक्नो ने शुक्रवार को भारतीय बाजार के लिए 2020 का पहला स्मार्टफोन 'स्पार्क गो प्लस' लॉन्च किया। नए उत्पाद के साथ, टेक्नो 5-7 हजार रुपये की कीमत वाले वर्ग में 6.52-इंच एचडी+ स्क्रीनन प्रदान करने वाली पहली कंपनी बन गई है। बड़ी स्क्रीन अब पहली बार के खरीदारों और स्मार्टफोन को अपग्रेड करने वालों को एक बेहतरीन व्यूईंग एक्सपीरिएंस देगी।

और बात यहीं खत्म नहीं होती! रुपये 6299 की कीमत में पेश टेक्नो स्पार्क गो प्लस में श्रेणी में कई अग्रणी फीचर्स शामिल किए गए हैं, जैसे- आधुनिक डॉट-नॉच डिजाइन, फुल विजन+फुल हॉरिजॉन(20 :9) एस्पेक्ट रेशियो, श्रेणी को परिभाषित करने वाली 480-निट्स की ब्राइटनेस, एक विशाल 4000 एमएएच बैटरी, ड्युअल फ्लैशलाइट के साथ एआई-पावर्ड 8 एमपी रियर कैमरा और फ्रंट फ्लैश के साथ 8एमपी का सेल्फी कैमरा, एक शक्तिशाली क्वाड-कोर 2.0 गीगाहर्ट्ज़ सीपीयू प्रोसेसर, फेस अनलॉक और स्मार्ट फिंगरप्रिंट स्कैनर, एंड्रॉइड 9.0-गो वर्जन के साथ 2 जीबी रैम और 32 जीबी रोम । उत्पाद को नए भारत की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। वे आकांक्षी, मूल्यों की चाह रखने वाले उपभोक्ता हैं, जो वाजिब कीमत पर प्रीमियम सुविधाओं का आनंद उठाना चाहते हैं।

लॉन्च पर अरिजीत तालापात्रा, सीईओ, ट्रांसियॉन इंडिया ने कहा, ''2020 में कदम रखते हुए, टेक्नो 'फॉर इंडिया' स्मार्टफोन पर फोकस करना जारी रखेगा ताकि भारतीय संवेदनाओं को बेहतर ढंग से संबोधित करने के लिए बनाए गए उत्पादों के साथ एंट्री लेवल और मिड-बजट बाजारों में हलचल मचाई जा सके।

इस नजरिये से, स्पार्क गो प्लस हमें अपने ग्राहक आधार तक एक ऐसे फोन के साथ पहुंचने में मदद करेगा, जो नए भारत के नागरिकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुकूलित है। यह फोन टीयर थ्री और नीचे के बाजारों में हर संभव ग्राहक तक पहुंचने के हमारे अथक प्रयासों का एक मूर्त रूप है, जहां से स्मार्टफोन क्रांति की अगली लहर निकलेगी। काउंटरपॉइंट की रिपोर्ट के अनुसार, 'स्पार्क' सीरीज के स्मार्टफोन के लॉन्च होने के बाद, टेक्नो 5,000-7,000 रुपये की श्रेणी में एलीट 'टॉप 5 स्मार्टफोन ब्रांड्स' क्लब में शामिल हो गया है। 2020 में, हम 5-15 हजार रुपये के स्मार्टफोन श्रेणी में एक मजबूत पोर्टफोलियो बनाने के लिए अपनी स्थिति को और मजबूत करेंगे, ताकि ग्राहकों को अलग-अलग कीमतों में व्यापक विकल्प मिल सकें।

हाइन्स और कंसिएंट ने टाटा प्रोजेक्ट्स 500 करोड़ का निर्माण कॉन्ट्रैक्ट प्रदान किया

जलतेदीप, प्रेवि, नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय रियल एस्टेट फर्म हाइन्स तथा कंसिएंट इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड जो कि भारत में रियल एस्टेट उद्योग क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम है, ने

भारत की एक सबसे तेजी से बढती और सबसे सम्मानित निर्माण कंपनी टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड को उनकी प्रीमियम आवासीय परियोजना 'एलिवेट' के लिए रु. 500 करोड का निर्माण कॉन्ट्रैक्ट प्रदान किया है। गुरुग्राम के गोल्फ कोर्स एक्सटेंशन रोड, सेक्टर 59 में एक एक्सक्लूसिव एन्क्लेव में स्थित इस प्रीमियम आवासीय परियोजना के निर्माण के लिए टाटा प्रोजेक्ट्स जिम्मेदार होंगे। यह परियोजना वर्ष 2023 तक पूरी हो जाएगी। प्राचीश वासुदेव, सीनियर डायरेक्टर, हाइन्स इंडिया ने कहा कि, ''हम भारत की सबसे बेहतरीन निर्माण कंपनियों में से एक को यह प्रतिष्ठित कॉन्ट्रैक्ट प्रदान कर प्रसन्न हैं। एलिवेट एक उच्च गुणवत्ता वाली परियोजना है और टाटा प्रोजेक्ट्स के रूप में हमें एक ऐसा साझेदार मिला है जो हमारे ग्राहकों के लिए उच्चतम संभव मूल्य तैयार करने के लिए गुणवत्ता, पारदर्शिता, सुरक्षा और समय पर डिलीवरी को लेकर हमारी प्रतिबद्धता साझा करता है।''एलिवेट ग्राहकों के लिए सोच-समझकर डिजाइन की गई, प्रीमियम आवासीय विकास विकल्प हैं, जिस की कीमत 2.4-4.0 करोड भारतीय रुपये निर्धारित की गई है। इस परियोजना में 556 अपार्टमेंट्स एक बराबर बिक्री योग्य क्षेत्रफल वाले होंगे जो लगभग 2,100 वर्ग फीट से 3,400 वर्ग फीट तक की रेंज में होंगे। कंसिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर इस परियोजना की विकासकर्ता है जबकि हाइन्स विकास सलाहकार और निवेश प्रबंधक है। 2000 करोड़ रुपये की अनुमानित मूल्य वाली आवासीय परियोजना, भारत में हाइन्स का पहला आवासीय उपक्रम है। राजेश जैन, डायरेक्टर, कंसिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड ने कहा, ''हमने टाटा प्रोजेक्ट्स को उनके निर्माण इंजीनियरिंग क्षमता और उच्च गुणवत्ता के कारण चुना, जो एक अंतरराष्ट्रीय वास्तुकला संबधी डिजाइन की आवश्यकता है।

डीलशेयर का संक्रान्ति महोत्सव आयोजित

जलतेदीप, प्रेवि, जयपुर

मकर संक्रान्ति शांति व समृद्धि का उत्सव है। इस संक्रान्ति, आपको आपाधापी से बचाने में मदद करने हेतु, प्रमुख सोशल कॉमर्स ब्रांड, डीलशेयर ने आपके लिए आकर्षक ऑफर्स के साथ संक्रान्ति स्पेशल प्रोडक्ट्स का व्यापक रेंज लाया है। डीलशेयर के संक्रान्ति स्पेशल रेंज में 30 से अधिक आवश्यक चीजें शामिल हैं, जैसे-तिल, गजक, मांजा, चकरी व अन्य। पतंगबाजी के इस मौसम में, ब्रांड ने इको-फ्रेंड्ली मांजाचरखी भी लाया है।

इन गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के साथ-साथ, डीलशेयर का उद्देश्य बाजारों में उपभोक्ताओं के लिए विशिष्ट एवं सुविधाजनक खरीदारी अनुभव प्रदान करना है। नये प्रोडक्ट्स और विभिन्न रेंजेज में 50 प्रतिशत तक की छूट के साथ अपनी संक्रान्ति के अनुभव को समृद्ध करें। नये लॉन्चेज पर टिप्पणी करते हुए, सीएफओ व संस्थापक, शौर्येन्दु मेद्दा ने कहा, ''संक्रान्ति राजस्थान का एक प्रमुख उत्सव है और हमें विभिन्न श्रेणियों में 30 से अधिक प्रोडक्ट्स को लॉन्च करने की खुशी है। हमारी कोशिश है कि हम हमारे उपभोक्ताओं के लिए सर्वोत्तम खरीदारी अनुभव प्रदान कर सकें और उन्हें किफायती दरों पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद उपलब्ध कर सकें।'

खेल दीप

रानी रामपाल 'वर्ल्ड गेम्स ऐथलीट ऑफ द इयर' के लिए नॉमिनेट

एजेंसी, नई दिल्ली। हॉकी की संचालन संस्था एफआईएच ने भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान रानी रामपाल को 'वर्ल्ड गेम्स ऐथलीट ऑफ द इयर' के लिए नॉमिनेट किया। हॉकी इंडिया ने बयान में कहा कि अंतरराष्ट्रीय महासंघों द्वारा इस पुरस्कार के लिए 25 खिलाड़ियों को नामांकित किया गया है और एफआईएच ने रानी के शानदार प्रदर्शन और उनकी अगुआई करने की काबिलियत को देखकर उनका नाम इस पुरस्कार के लिए शामिल किया। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष मोहम्मद मुश्ताक अहमद ने कहा, 'हॉकी इंडिया रानी के 'वर्ल्ड गेम्स ऐथलीट ऑफ द इयर 2019' के लिए नॉमिनेट किए जाने की खबर से बहुत खुश है। वह देश में कई के लिए प्रेरणास्रोत हैं।' विजेता का फैसला ऑनलाइन वोटिंग में किया जाएगा जो 30 जनवरी को समाप्त होगी। रानी ने भारत के पहली बार लगातार ओलिंपिक खेलों के लिए क्वॉलिफाइ करने में काफी अहम भूमिका निभाई।

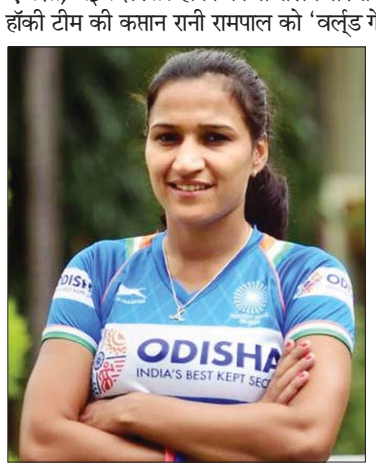

शेन वॉर्न की टेस्ट कैप 5 करोड़ में नीलाम, जंगलों में आग से प्रभावितों को देंगे मदद

एजेंसी, नई दिल्ली। दुनिया के महान लेग स्पिनर शेन वॉर्न की टेस्ट कैप बैगी ग्रीन शुक्रवार को 10 लाख, 7 हजार, 500 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (करीब 4 करोड़, 92 लाख, 8 हजार रुपये) में नीलाम हो गई। शेन वॉर्न ने अपनी यह ऐतिहासिक टेस्ट कैप ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी भीषण आग से प्रभावितों की मदद करने के लिए नीलाम करने का फैसला किया था। वॉर्न नीलामी में जुटाए गए इस फंड को यहां दान कर देंगे।ऑस्ट्रेलिया के इस दिग्गज स्पिन गेंदबाज ने अपने करियर में खेले 145 टेस्ट मैचों में इस कैप को पहना। इस दौरान वॉर्न ने अपनी फिरकी के जादू में 708 विकेट अपने नाम किए। इस नीलामी के बाद वॉर्न ने इस कैप के खरीदार का आभार भी जताया और उन्होंने इस नेक काम में सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद भी दिया। इस 50 वर्षीय स्पिन जादूगर ने आज ट्वीट करते हुए लिखा, जिन्होंने भी इस टेस्ट कैप के लिए बोली लगाई उन सभी का धन्यवाद और इस नीलामी में कामयाब बिडर (बोली लगाने वाला) को शुभकामनाएं- आपने अपनी उदारता दिखाते हुए मेरी खुशी को कई गुना बढ़ा दिया और यह अपेक्षा से बहुत ज्यादा है! यह पैसा सीधे ही रेड क्रॉस बुशफायर अपील को चला जाए।

विराट कोहली और स्टीव स्मिथ की राह पर चलना चाहते हैं लाबुशाने

एजेंसी, नई दिल्ली। फॉर्म में चल रहे ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज मार्नस लाबुशाने ने कहा कि उन्हें लगता है कि भारत के खिलाफ आगामी वनडे इंटरनैशनल सीरीज उन्हें विराट कोहली और स्टीव स्मिथ का अनुकरण करने की मुहिम में बड़ा मौका प्रदान करेगी।लाबुशाने ने पाकिस्तान के खिलाफ लगातार टेस्ट शतक जमाने के बाद न्यू जीलैंड के खिलाफ एक सैकड़ा और एक दोहरा शतक पूरा किया। अब वह भारत के वनडे दौरे पर देखना चाहेंगे कि वह छोटे प्रारूप में पर्दापण कर पाते हैं या नहीं। बीते साल वह टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे। वह 1000 से ज्यादा टेस्ट रन बनाने वाले 2019 के इकलौते बल्लेबाज रहे। बाईस वर्षीय यह खिलाड़ी अपनी लेग ब्रेक से अहम भूमिका निभा सकता है।

चार दिन के टेस्ट पर होगी चर्चा, कप्तान कोहली और कोच शास्त्री के साथ बीसीसीआई

■ एजेंसी, नई दिल्ली

आईसीसी की क्रिकेट समिति 4 दिन के टेस्ट मैच को लेकर चर्चा करेगी। लेकिन इस बात की पूरी संभावना है कि बीसीसीआई इस पर राजी नहीं होगा। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने इस मीटिंग में कप्तान विराट कोहली और कोच रवि शास्त्री के साथ जाने का फैसला किया है। ये दोनों पहले ही चार दिन के टेस्ट मैच वाले आइडिया का विरोध कर चुके हैं। कोच और कप्तान साफ तौर पर कह चुके हैं कि वे टेस्ट क्रिकेट के पारंपरिक परिवेश को बनाए रखने के पक्ष में हैं और नहीं चाहते कि इसे पांच दिन से घटाकर चार दिन का किया जाए। दोनों ने अंदेशा जताया था कि अगर इस फॉर्मेट से साथ छेड़छाड़ की गई तो यह अपनी चमक खो बैठेगा।

बीसीसीआई के एक अधिकारी ने कहा कि बीसीसीआई 12 जनवरी को मुंबई में होने वाले बोर्ड के अवॉर्ड समारोह के दौरान क्रिकेट आस्ट्रेलिया और इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड से इस पर चर्चा जरूर करेगा, लेकिन बोर्ड साफ तौर पर कप्तान और कोच के समर्थन में है। अधिकारी ने कहा, देखिए यह सही है कि आप इस मुद्दे पर सीए, ईसीबी और क्रिकेट साउथ अफ्रीका के साथ बात करें, और हम ऐसा ही करेंगे। लेकिन इस समय जैसी चीजें दिख रही हैं, हम कप्तान और कोच के साथ खड़े हुए हैं और टेस्ट मैच को पांच दिन से चार दिन का करने में हमें कोई तुक नजर नहीं आता। उन्होंने कहा, यह सिर्फ हमारे कप्तान और कोच इसका विरोध नहीं कर रहे हैं। आप इंग्लैंड के कप्तान जो रूट, साउथ अफ्रीका के कप्तान फाफ डु प्लेसिस के बयान भी इस मसले पर सुन चुके होंगे।

यह कम रैंक वाली टीमों के लिए एक विकल्प हो सकता है, लेकिन निश्चित तौर पर दो बड़ी टीमों के लिए नहीं। परंपरा से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। कोहली ने गुवाहाटी में श्रीलंका के खिलाफ खेले गए पहले टी20 मैच की पूर्व संध्या पर संवाददाता सम्मेलन में चार दिन के टेस्ट मैच का विरोध किया था। कोहली ने कहा था, आप टेस्ट क्रिकेट में ज्यादा से ज्यादा डे-नाइट टेस्ट का बदलाव कर सकते हैं। आप फिर सिर्फ आंकड़ों और नंबर की बातें कर रहे हैं। मुझे लगता है कि मंशा सही नहीं होगी, क्योंकि इसके बाद आप तीन दिन के टेस्ट मैच की बात कहने लगेंगे। आप कहां रुकेंगे? इसके बाद आप टेस्ट क्रिकेट को खत्म करने की बात कहेंगे।

सेरेना और वोज्नियाकी आकलैंड क्लासिक के सेमीफाइनल में

■ एजेंसी, आकलैंड

तेईस बार की ग्रैंडस्लैम विजेता सेरेना विलियम्स ने शक्रवार को यहां लौरा सिगमंड को हराकर डब्ल्यूटीए आकलैंड क्लासिक के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सिगमंड ने अमेरिका की युवा कोको गॉफ को हराकर अंतिम आठ में जगह बनायी थी लेकिन उन्हें सेरेना ने 90 मिनट तक चले मुकाबले में 6-4 6-3 से मात दी। अब सेरेना की निगाहें तीन साल में पहला खिताब हासिल करने पर लगी हैं। सेरेना ने पिछला खिताब 2017 आस्ट्रेलियाई ओपन में जीता था। अब उनका सामना तीसरी वरीय अमांडा एनीसिमोवा और यूज्नी बुकार्ड के बीच होने वाले मुकाबले की विजेता से होगा। वहीं दूसरे सेमीफाइनल में कैरोलिन वोज्नियाकी और जेसिका पेगुला की भिड़ंत होगी। पूर्व नंबर एक वोज्नियाकी ने गत चैम्पियन और टूर्नामेंट की चौथी वरीय जूलिया जार्जेस को क्वार्टरफाइनल में 6-1 6-4 से मात दी।

पेगुला ने एलीजे कार्नेट के खिलाफ 6-0 3-2 से आगे चल रही थीं लेकिन फ्रांस की खिलाड़ी जांघ की चोट के कारण रिटायर्ड हर्ट हुई जिससे पेगुला सेमीफाइनल में पहुंची।

मलेशिया मास्टर्स : पीवी सिंधु के बाद साइना नेहवाल भी हारीं, भारतीय चुनौती समाप्त

■ एजेंसी, कुआलालम्पुर

ओलिंपिक गोल्ड मेडलिस्ट कैरोलिना मारिन से शुक्रवार को साइना नेहवाल के हारते ही मलयेशिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारतीय चुनौती समाप्त हो गई है। साइना नेहवाल को महिला एकल के क्वॉर्टर फाइनल में जहां मारिन ने सीधे गेम में हराया तो उससे ठीक पहले विश्व चैंपियन पीवी सिंधु को भी हार का सामना करना पड़ा था। सिंधु को महिला एकल वर्ग के अंतिम-8 के मुकाबले में चीनी ताइपे की ताइ जु यिंग ने मात दी थी।

बीते साल खराब फॉर्म से जूझने वाली सिंधु से नए साल में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद थी, लेकिन यिंग ने सिंधु को साल के पहले टूर्नामेंट के अहम मुकाबले में 21-16, 21-16 से हरा निराश कर दिया। यह मैच 36 मिनट तक चला। यह सिंधु की यिंग के खिलाफ 12वीं हार है। सिंधु सिर्फ पांच बार ही पूर्व नंबर-1 के सामने जीत हासिल कर सकी हैं। उल्लेखनीय है कि सिंधु ने विश्व चैंपियनशिप के क्वॉर्टर फाइनल में यिंग को ही हराया था।

सिंधु बनाम यिंग

यिंग ने दमदार शुरुआत करते हुए सिंधु पर बढ़त ले ली थी। सिंधु ने कुछ देर बाद वापसी करते हुए स्कोर 7-7 कर दिया। यिंग यहां से लगातार चार अंक लेकर 11-7 के स्कोर के साथ ब्रेक में गईं। ब्रेक के बाद भी यिंग ने अपनी फॉर्म जारी रखी और पहला गेम 17 मिनट में अपने नाम कर ले गईं। दूसरे गेम में यिंग ने सिंधु पर सात अंकों की बढ़त ले ली थी। सिंधु ने हालांकि कुछ देर बाद वापसी की और पांच मैच पॉइंट बचाते हुए यिंग को थोड़ा परेशान कर दिया, लेकिन चीनी ताइपे खिलाड़ी ने अंततः गेम अपने नाम किया।

साइना बनाम मारिन

सिंधु की हार के बाद साइना से उम्मीद थी, लेकिन वह स्पेन धाकड़ खिलाड़ी कैरोलिना मारिन से पार नहीं पा सकीं। मारिन ने अपने आक्रामक खेल से दोनों गेम एकतरफा कर दिया। पहला गेम जहां उन्होंने 21-8 से हराया तो दूसरा 21-7 से अपने नाम करते हुए सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया।

मुगुरूजा शेनजेन ओपन से बाहर

एजेंसी, शंघाई। दो बार की ग्रैंडस्लैम चैम्पियन गार्बाइन मुगुरूजा शुक्रवार को शेनजेन ओपन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में इकेटरीना एलेक्सांद्रोवा से सीधे गेम में हारकर बाहर हो गयीं। रूस की पांचवीं वरीय एलेक्सांद्रोवा ने 77 मिनट तक चले मैच में मुगुरूजा पर 6-4 6-3 से जीत हासिल कर फाइनल में प्रवेश किया। अब उनका सामना सातवीं वरीय कजाखस्तान की एलीना रिबाकिना और गैर वरीय चेक गणराज्य की क्रिस्टना प्लिस्कोवा के बीच होने वाले मुकाबले की विजेता से होगा।

राज्य में खुलेगा पहला जैव प्रौद्योगिकी पार्क व इक्यूबेशन सेन्टर : डॉ. रेणू

बायो इन्फोर्मेटिक्स तकनीक से निरोगी राजस्थान को किया जाएगा मजबूत

जलतेदीप नसं, जयपुर

जैव प्रौद्योगिकी सचिव, भारत सरकार डॉ. रेणू स्वरूप ने कहा कि राजस्थान में जैव प्रौद्योगिकी पार्क एवं जैव प्रौद्योगिकी इक्यूबेशन सेन्टर खोला जाएगा। इसके लिए जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान के मध्य एमओयू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इससे राजस्थान को जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान तथा युवाओं को रोजगार से जोड़ने के बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। डॉ. रेणू स्वरूप शुक्रवार को राज्य में बायोटेक्नोलॉजी का कोर्स संचालित करने वाले सभी विश्वविद्यालयों के वाइस चांसलर, डायरेक्टर एवं डीन तथा बायोटेक में शोध करने वाले संस्थान एवं इससे जुड़े स्टार्टअप के प्रतिनिधियों की स्टेट बायोटेक कोहोर्ट मीटिंग को संबोधित कर रही थी। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की ओर से राजस्थान में बायोटेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने के लिए पूर्ण सहयोग दिया जाएगा। बायोटेक्नोलॉजी पार्क एवं इक्यूबेशन सेन्टर को भारत सरकार की सरकारी कंपनी बायरेक्स (बायोटेक्नोलॉजी इण्डस्ट्री रिसर्च असिस्टेंस कांउसिल) के सहयोग से पूरा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी की उपयोगिता आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में (चिकित्सा, कृषि एवं कृषि उत्पादन, उद्योग, अखाद्य पदार्थ इत्यादि) में बढ़ती जा रही है। ऐसे में बायोटेक्नोलॉजी को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बायोटेक्नोलॉजी को बढ़ावा मिलने से औद्योगिक विकास एवं अनुसंधान को भी गति मिलेगी।

बायोटेक्नोलॉजी के ईको सिस्टम व स्टार्टअप को मजबूत किया जाएगा

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की शासन सचिव मुग्धा सिन्हा ने कहा कि राज्य में बायोइन्फार्मेशन, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग एवं नैनो मेडीसन इत्यादि के सहयोग को बढ़ावा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने निरोगी राजस्थान योजना को लांच किया है तथा इसको मजबूती प्रदान करने के लिए बायो इन्फोर्मेटिक्स के माध्यम से हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य में बायोटेक्नोलॉजी के ईको सिस्टम एवं स्टार्टअप को भारत सरकार से सहयोग के द्वारा उन्नत किया जाएगा। सिन्हा ने कहा कि बायोटेक्नोलॉजी से जुड़े वैज्ञानिकों एवं युवाओं को प्रोत्साहन देने के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग से होने वाली भर्ती परीक्षा में जैव प्रौद्योगिकी विज्ञान में स्नातक करने वालो को मान्यता दिलाने हेतु प्रयास किए जाएंगे।

बीदासर में इंटरलॉक सड़क का लोकार्पण

सरकार की कथनी और करनी में फर्क नहीं: मेघवाल

जलतेदीप नसं, चूरु

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल ने कहा कि सरकार की कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं है। मास्टर मेघवाल शुक्रवार को चूरू के बीदासर के गणगौरी चौक में 20 लाख रुपए एवं खाखीजी चौक में 30 लाख रुपए की लागत से बनी इंटरलॉक सड़क के लोकार्पण अवसर पर बोल रहे थे। इस मौके पर उन्होंने लोगों से संवाद किया और उनके अभाव अभियोग भी सुने। उन्होंने कहा कि बीदासर नगर पालिका क्षेत्र में विकास के लिए धन की कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने इस दौरान गणगौरी चौक में पुराने बने कुआं का सौंदर्यीकरण करवाने का आश्वासन भी दिया। मेघवाल ने कहा कि बीदासर में उचित स्थान देखकर कचरा संग्रहण केंद्र में परिवर्तन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि समाज के प्रत्येक तबके के उत्थान को ध्यान में रखकर योजनाओं का संचालन किया जा रहा है और उसका भरपूर लाभ प्रदेशवासियों को मिल रहा है।

योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे

मास्टर मेघवाल ने इस मौके पर अधिकारियों से कहा कि वे योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंचाएं तथा पिछड़ी बस्तियों के लोगों को सड़क, पेयजल, बिजली, चिकित्सा, शिक्षा सुविधाएं मुहैया कराने के लिए प्रयास करें। उन्होंने कहा कि पारदर्शी एवं जवाबदेह सुशासन के लिए प्रतिबद्ध राज्य सरकार प्रत्येक वर्ग के विकास के लिए व्यापक स्तर पर काम कर रही है तथा एक साल की अल्प अवधि में राज्य सरकार ने प्रदेश के आमजन को बड़ी राहत दी है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने प्रदेश में विकास के नए आयाम स्थापित किए हैं। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की ओर से 132 योजनाओं का संचालन कर लाखों लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है। आर्थिक आधार पर सामान्य वर्ग के आरक्षण में भी राज्य सरकार ने समस्त बाधाएं हटाकर सरलीकरण करते हुए आठ लाख रुपए वार्षिक को आधार बनाया है, जिसके बाद इसका लाभ अधिक लोगों को मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को जल एवं ऊर्जा बचत, बालिका शिक्षा जैसे मसलों की तरफ जागरुक होना चाहिए तथा कानून का पालन करते हुए अपने क्षेत्र के विकास के विषय में योगदान देना चाहिए। इस मौके पर नगर पालिका अध्यक्ष श्री खालिद बाल्की ने बीदासर में हुए विकास कार्यों की जानकारी दी और कहा कि भविष्य में भी कस्बे में विकास के लिए सबको साथ लेकर समुचित प्रयास किए जाएंगे।

विगत - मुकेश मांडण

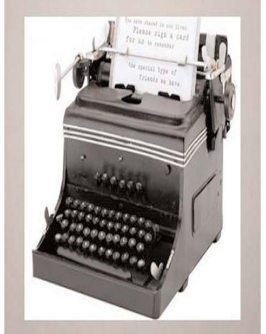

'टाइप रायटर या टंकण मशीन'! एक समय यह भी बहुत महत्वपूर्ण थीं। इस 'मैनुअल' मशीन से टाइप करवाने के लिये भी लोग प्रतीक्षारत रहते थे। विद्यार्थी इसका प्रशिक्षण लेते थे। रोज़गार का ज़रिया भी थीं यह। अब इतिहास है।

मुख्यमंत्री सम्पर्क पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का शीघ्रता से निस्तारण किया जाए: जूली

जलतेदीप नसं, जयपुर

श्रम राज्य मंत्री टीकाराम जूली ने कहा है कि प्रदेश में संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिए श्रम विभाग की बी.ओ.सी.डब्ल्यू योजना एवं पंजीयन लाभकारी योजनाओं के तहत प्राप्त आवेदन पत्रों का आगामी तीन माह में तथा मुख्यमंत्री सम्पर्क पोर्टल एवं राज्य मानवाधिकार आयोग से प्राप्त प्रकरणों की समीक्षा कर यथा सम्भव 30 जनवरी, 2020 तक सभी शिकायतों का समय पर निस्तारण किया जाए। जूली शुक्रवार को शासन सचिवालय में आयोजित बैठक में विभाग द्वारा चलाई जा रही योजना बी.ओ.सी.डब्ल्यू एवं श्रम विभाग को राजस्थान सम्पर्क पोर्टल एवं राज्य मानवाधिकार आयोग से प्राप्त प्रकरणों की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में श्रम सचिव नवीन जैन एवं श्रम आयुक्त डॉ. समित शर्मा भी उपस्थित थे। श्रम राज्य मंत्री ने सम्पर्क पोर्टल, सूचना का अधिकार, लोक सेवाओं के गारंटी अधिनियम तथा मुख्यमंत्री कार्यालय से प्राप्त पत्रों के निस्तारण की स्थिति की भी समीक्षा करते हुए सभी लंबित प्रकरणों को 31 जनवरी 2020 तक निस्तारित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा उपकर (सैस) संग्रहण पर अर्जित की गई उपलब्धि पर सभी विभागीय अधिकारी साधुवाद के पात्र है। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा उपकर संग्रहण में वर्ष 2019 में 400 करोड़ से अधिक संग्रहण कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया गया है, जो विभाग के लिए एक उपलब्धि है। उन्होंने विभिन्न योजनाओं में प्राप्त आवेदन पत्रों की स्वीकृति के साथ ही लाभार्थी को तुरंत सहायता राशि जारी किये जाने के निर्देश भी है।

सभी योजनाओं के बकाया प्रकरणों की होगी समीक्षा बैठक

बैठक में श्रम सचिव नवीन जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि सभी योजनाओं के बकाया प्रकरणों को आगामी 15 दिनो में विभाग के अधिकारियों के साथ बिन्दुवार समीक्षा कर ली जाएगी। उन्होंने राज्य में विभिन्न श्रम सलाहकार बोर्डों के गठन पर भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विभाग के अधिकारियों द्वारा गत दिनों में सामाजिक अंकेक्षण और औचक निरीक्षण के दौरान अपात्र पाए गए श्रमिकों की आई.डी. को निलंबित (ब्लॉक) करने तथा भुगतान की स्थिति में रिकवरी करने के लिए कार्य योजना बनाई गई है। श्रम आयुक्त डॉ. समित शर्मा ने बताया कि विभाग की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जनसाधारण में प्रचार प्रसार के लिए फरवरी, माह में आई.ई.सी. विभिन्न गतिविधियां की जाएंगी।

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय का भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में एक्रीडेशन

जलतेदीप नसं, जयपुर

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने प्रदेश के स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति रक्षपाल सिंह, शिक्षकों, कर्मियों और छात्र-छात्राओं को बधाई दी है। राज्यपाल मिश्र ने कहा है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के नेशनल एग्रीकल्चर एज्यूकेशन एक्रीडेशन बोर्ड द्वारा विश्वविद्यालय और उसके सम्बद्ध महाविद्यालयों को पांच वर्ष के लिए एक्रीडेशन दिया जाना सराहनीय है।

राज्यपाल मिश्र ने कहा है कि विश्वविद्यालयों को गुणवत्तापरक शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में निरंतर उन्नति के लिए भरसक प्रयास करने होंगे।

विप्र फाउंडेशन का कुरीति उन्मूलन एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण अभियान

मुख्यमंत्री ने विफा के समाज सुधार कार्यक्रमों को सराहा

संस्कारोदय नामक मुख्य समारोह के लिए मुख्यमंत्री को न्योता

जलतेदीप नसं, जयपुर

विप्र फाउंडेशन सर्व-समाज में संस्कारों के पुनर्जागरण हेतु राजस्थान भर में सघन अभियान चलायेगा। विप्र फाउंडेशन ने इसके लिए एक वृहद प्रदेश स्तरीय समागम के लिए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को न्योता हैं। मुख्यमंत्री ने विप्र फाउंडेशन के अन्य कार्यक्रमों की भी सराहना की और समागम को लेकर अपनी मौखिक स्वीकृति देते हुए कहा कि सर्व समाज को लेकर संगठन की सोच सराहनीय हैं। उन्होंने कांग्रेस घोषणा पत्र में विप्र समाज के लिए किए वादों की शीघ्र क्रियान्वयन के संकेत दिए। विप्र फाउंडेशन के इस प्रदेश स्तरीय संस्कारोदय के सफल आयोजन का जिम्मा राष्ट्रीय मंत्री विष्णु पारीक को सौपा गया हैं। विप्र फाउंडेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आर.के. ओझा के नेतृत्व में शुक्रवार को मुख्यमंत्री से मिलने गए प्रतिनिधि मंडल ने सरकार की ओर से आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्ण वर्ग के लिए उठाए गए राहत भरे कदमों के लिए गहलोत का आभार भी प्रकट किया। मुख्यमंत्री से मिले विप्र फाउंडेशन के प्रतिनिधि मंडल में पवन पारीक, विनोद अमन, सुनील तिवाड़ी, राजेन्द्र शर्मा, देवीशंकर शर्मा, राजेश कर्नल, सतीश शर्मा, केदार शर्मा, सुनील उदेइया और विमलेश शर्मा शामिल थे।

राजपत्रित अवकाशों में भी चुनाव ड्यूटी तामील कराने के आदेश

पंचायत आम चुनाव 2020

जलतेदीप नसं, जयपुर

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर डॉ. जोगाराम ने जयपुर जिले में स्थित सभी राजकीय कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्षों को यह सुनिश्चित करने के आदेश दिए हैं कि वे उनके कार्यालयों के कार्मिकों को राजपत्रित अवकाशों में भी पंचायत आम चुनाव 2020 से सम्बन्धित

उनके ड्यूटी ऑर्डर आदेश तामील कराए जाने की व्यवस्था करें। आदेशानुसार कार्यालयाध्यक्षों को मतदान दलों में लगाए जाने वाले कर्मचारियों, अधिकारियों के ड्यूटी आदेश की प्राप्ति करने एवं इसे सम्बन्धित को तामील कराने हेतु 10 से 15 जनवरी तक एवं इस दौरान आने वाले राजपत्रित अवकाशों में भी जिम्मेदार कर्मचारियों को पाबन्द करना होगा। ये कर्मचारी कार्यालय समय से पूर्व एवं पश्चात् कार्यालय में उपस्थित रहते हुए सम्बन्धित कार्मिक को इन आदेशों की तामील कराएंगे। आदेश की अवहेलना करने पर कार्यालयाध्यक्ष एवं सम्बन्धित अधिकारी, कर्मचारी के विरूद्ध कार्यवाही की जाएगी।

हिमाचल में फिर बर्फबारी के आसार, दिल्ली समेत 7 राज्यों में शीतलहर

एजेंसी, नई दिल्ली

हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में पहाड़ों पर बर्फबारी के बाद दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और चंडीगढ़ में शुक्रवार को भी शीतलहर की स्थिति बनी रही। सुबह उत्तरी राज्यों में घना कोहरा छाया। आगरा में दृश्यता 25 और दिल्ली में 50 मीटर रही। हिमाचल के शिमला समेत कई स्थानों पर तापमान शून्य से नीचे दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने अगले एक दो दिन में फिर से बर्फबारी की संभावना जताई है। वहीं, आपदा प्रबंधन विभाग ने कुल्लू और लाहौल-स्फीति जिले में एवलांच की चेतावनी दी है। मौसम विभाग के मुताबिक सर्द हवाओं और कोहरे के

बीच राजधानी में हवा की गुणवत्ता में गिरावट आई। शुक्रवार को एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 215 दर्ज हुआ। यह प्रदूषण की खराब स्थिति है। पालम केंद्र पर न्यूनतम तापमान 7ए और नई दिल्ली में 7.4ए रिकॉर्ड हुआ। मौसम विभाग ने 12 और 13 जनवरी को बारिश के आसार हैं। शुक्रवार को भी राजधानी शिमला समेत कई शहरों का तापमान शून्य से नीचे रहा। वहीं दिल्ली समेत सात राज्यों में शीतलहर जारी है।

जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने की मांग

याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को जारी किया नोटिस

एजेंसी, नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया है। इस याचिका को भाजपा नेता और वरिष्ठ वकील अश्विनी उपाध्याय ने दायर की थी। गौरतलब है कि अश्विनी उपाध्याय पीएमओ में जनसंख्या नियंत्रण को लेकर साल 2018 में प्रजेंटेशन भी दे चुके हैं। वहा उन्होंने वेंकटचलैया आयोग का भी उल्लेख किया था।

जनसंख्या नियंत्रण कानून के लिए पहले भी गठित हो चुका है वेंकटचलैया आयोग

जनसंख्या नियंत्रण के लिए अटल बिहारी सरकार की ओर से 2000 में गठित वेंकटचलैया आयोग ने जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने की सिफारिश की थी। इस आयोग के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस वेंकटचलैया थे जबकि जस्टिस सरकारिया, जस्टिस जीवन रेड्डी

और जस्टिस पुन्नैया इसके सदस्य थे। इस आयोग के अन्य सदस्यों में पूर्व अटॉर्नी जनरल केशव परासरन तथा सोली सोराब, लोकसभा के महासचिव सुभाष कश्यप, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष संगमा, तत्कालीन सांसद सुमित्रा, वरिष्ठ पत्रकार सीआर ईरानी और अमेरिका में भारत के राजदूत रहे वरिष्ठ राजनयिक आबिद हुसैन भी शामिल थे। वेंकटचलैया आयोग ने 31 मार्च 2002 को अपनी रिपोर्ट केंद्र सरकार को सौंपी थी।

दिल्ली हाईकोर्ट खारिज कर चुका है याचिका

सितंबर 2019 में जनसंख्या नियंत्रण को लेकर दायर याचिका को दिल्ली हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया था। कोर्ट ने कहा था कि हम सरकार के कार्यों को अंजाम नहीं दे सकते।

जनसंख्या नियंत्रण कानून पर अमल करवाना अदालत का कार्यक्षेत्र नहीं

न्यायमूर्ति डीएन पटेल और सी हरी शंकर की पीठ ने कहा था कि इस याचिका पर सुनवाई करने करने का कोई वजह नहीं है, इसलिए इस याचिका को खारिज किया जाता है। न्यायपालिका सरकार के कार्यों को नहीं कर सकती है और अदालत संसद और राज्य विधानसभाओं को निर्देश जारी नहीं करना चाहती है।

संक्षिप्त खबरे

ईरान में यूक्रेन प्लेन क्रैश की जांच में शामिल होगा अमेरिका, 176 लोगों की हुई थी मौत

वाशिंगटन/एजेंसी। ईरान की राजधानी तेहरान में हुए यूक्रेन के एक प्लेन क्रैश हादसे की जांच में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका शामिल होगा। अमेरिकी नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड ने कहा कि यह यूक्रेन के बोइंग विमान हादसे की जांच में शामिल होगा, जो ईरान की राजधानी तेहरान में क्रैश हुआ था। दरअसल, बुधवार को ईरान की राजधानी तेहरान में यूक्रेन का प्लेन क्रैश हो गया था, जिसमें करीब 176 यात्रियों की मौत हो गई थी। अपने ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट किए गए एक बयान में अमेरिकी परिवहन सुरक्षा एजेंसी राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड ने कहा कि उसके रिस्पोंस ऑपरेशंस सेंटर को यूक्रेन अंतराष्ट्रीय एयरलाइंस की उड़ान पीएस752 के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद ईरान के नागरिक उड्डयन संगठन द्वारा विमान दुर्घटना जांच बोर्ड से औपचारिक अधिसूचना प्राप्त हुई है।

अमेरिकी ठिकानों पर हमले और यूक्रेन विमान हादसे के बाद ईरान पर नजर रखेंगे रूसी सेटेलाइट

मॉस्को/एजेंसी। रूस की अंतरिक्ष एजेंसी रोसकॉसमोस इराक में अमेरिकी एयरबेस पर हमले और यूक्रेन का हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद ईरान पर नजर रखेगा। संस्था की बेवसाइट के द्वारा बयान जारी कर इसकी जानकारी दी गयी। बयान में कहा गया है कि एजेंसी ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग, इंडोनेशिया, इजरायल और वीन्स में आयी बाढ़ पर भी अपनी नजर रखेगी।

कुछ शर्तों के साथ दुबई में मिल सकेगा तत्काल पासपोर्ट

दुबई/एजेंसी। दुबई और उत्तरी अमीरात में रहने वाले भारतीय अब कुछ शर्तों के तहत एक ही दिन में जारी किए जाने वाले पासपोर्ट प्राप्त कर सकेंगे, जिसमें उच्च शुल्क भी शामिल है। इसकी घोषणा यहां वाणिज्य दूतावास ने की है। मीडिया सूत्रों ने एक रिपोर्ट में कहा कि दुबई में भारत के महावाणिज्यदूत विपुल ने गुरुवार को घोषणा की कि वाणिज्य दूतावास तत्काल पासपोर्ट (आपातकालीन मामलों में) जारी करना शुरू करेगा। विपुल ने यह घोषणा प्रवासी भारतीय दिवस (नॉन रेजिडेंट इंडियन-एनआरआई डे) समारोह के दौरान की। उन्होंने कहा कि तत्काल पासपोर्ट के लिए उसी दिन सेवा जारी की जा सकती है, जब बीएलएस इंटरनेशनल के कार्यालय में दोपहर से पहले आवेदन जमा किया जाए। बीएलएस अल खलीज सेंटर, बुर दुबई स्थित भारतीय पासपोर्ट और वीजा आवेदनों के लिए आउटसोर्स सेवा प्रदाता है। महावाणिज्यदूत ने कहा कि हम पहले से ही 24 घंटे में तत्काल पासपोर्ट जारी करते हैं। हम उससे एक कदम आगे जा रहे हैं। हम उसी दिन तत्काल पासपोर्ट जारी करने जा रहे हैं, अगर इसके लिए दोपहर 12 बजे से पहले आवेदन किया जाता है। शाम तक हम तत्काल पासपोर्ट जारी कर सकते हैं।

माली में शांति सैनिकों पर हमला

संयुक्त राष्ट्र/एजेंसी। उत्तरी माली में एक सैन्य अड्डे पर हुए एक हमले में चाड के 18 संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिक घायल हो गए। मीडिया सूत्रों के अनुसार संयुक्त राष्ट्र के एक प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने कहा है कि माली में संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन ने बताया कि किदल क्षेत्र के टेसलिट में इसके कैम्प पर कई मोर्टार/या रॉकेट दागे गए। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र मिशन, माली और अंतर्राष्ट्रीय बलों के साथ शिविर साझा करता है। दुजारिक ने कहा कि शुरुआती रिपोर्ट दर्शाते हैं कि चाड के 18 संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिक घायल हुए हैं, जिनमें 6 गंभीर रूप से घायल हैं।

भारत, पाकिस्तान की यात्रा करेंगी एलिस जी वेल्स

संयुक्त राष्ट्र/एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप प्रशासन में दक्षिण एवं मध्य एशिया मामलों की शीर्ष राजनयिक एलिस जी वेल्स द्विपक्षीय बैठकों तथा रायसीना वार्ता के लिए अगले सप्ताह भारत जाएंगी। विदेश मंत्रालय ने बताया कि वेल्स 15-18 जनवरी तक भारत में रहेंगी और रायसीना वार्ता में हिस्सा लेंगी। इसके बाद वह 19-22 तक इस्लामाबाद में होंगी। दक्षिण एवं मध्य एशिया मामलों की प्रमुख उपसहायक विदेश मंत्री भारत जाने से पहले 13 जनवरी से 14 जनवरी तक श्रीलंका की राजधानी कोलंबो की यात्रा पर होंगी। मंत्रालय ने कहा कि पिछले महीने भारत और अमेरिका के बीच टू प्लस टू मंत्री स्तरीय वार्ता की सफलता के बाद वेल्स अमेरिका-भारत रणनीतिक वैश्विक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात करेंगी।

शाहीन बाग से नहीं हटेंगे प्रदर्शनकारी, बैरिकेडिंग हटाने की याचिका खारिज

एजेंसी, नई दिल्ली

दिल्ली के शाहीन बाग में बीते करीब एक महीने से नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लोग अपना धरना आगे भी जारी रखेंगे। दरअसल दिल्ली हाईकोर्ट ने शुक्रवार को शाहीन बाग से बैरिकेडिंग हटाने की इजाजत मांगने वाली एक याचिका पर सुनवाई से इनकार करते हुए खारिज कर दी है।

भाजपा नेता कपिल मिश्रा दिल्ली पुलिस को लीगल नोटिस देने वाले हैं। उन्होंने ट्वीट कर कहा है कि अगर दिल्ली पुलिस ने शाहीन बाग से बैरिकेडिंग नहीं हटाई तो वह अदालत का रुख करेंगे। कपिल ने लिखा है कि शाहीन बाग में प्रदर्शनकारियों ने कब्जा कर रखा है। एक महीने से दिल्ली, यूपी बॉर्डर, कालिंदी कुंज, साउथ दिल्ली की सड़कें बंद हैं। यहां तक कि अस्पताल, दफ्तर, स्कूल जाने वाले लोग परेशान हैं। फिर भी प्रदर्शनकारी हटने को तैयार नहीं है। दिल्ली हाईकोर्ट में डाली गई इस याचिका में कहा गया था कि बीते 15 दिसंबर से शाहीन बाग इलाके में बैरिकेडिंग की गई है, जिसके कारण ट्रैफिक को परेशानी आ रही है।

दीपिका उन लोगों के साथ खड़ी हुईं, जो सीआरपीएफ जवान की मौत पर जश्न मनाते हैं: स्मृति

एजेंसी, बेंगलुरु

एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण की मंगलवार रात जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) में छात्रों से मुलाकात पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की। बेंगलुरु में एक कायक्रम के दौरान स्मृति ने कहा कि दीपिका जेएनयू में उन लोगों के साथ खड़ी हुईं, जो हर सीआरपीएफ जवान की मौत पर जश्न मनाते हैं। महिला एवं बाल

विकास मंत्री ने कहा कि दीपिका ने अपनी राजनीतिक पसंद 2011 में ही जाहिर कर दी थी कि वे कांग्रेस का समर्थन करती हैं। जिसने भी यह खबर पढ़ी होगी, वह जानता होगा कि दीपिका किसके साथ खड़ी होंगी। मैं निश्चित तौर पर उनके राजनीतिक जुड़ाव के बारे में जानना चाहूंगी। मैं उनके इस अधिकार से इनकार नहीं करती कि वे उन लोगों के साथ खड़ी हो सकती हैं जो दूसरी लड़कियों को पीटते हैं।

क्या यही उनकी स्वतंत्रता है? भारत तेरे टुकड़े है कहनों वालों के साथ खड़ा होना ही उनका अधिकार है। स्मृति ने दीपिका के एक पुराने इंटरव्यू का जिक्र किया था।

प्रधानमंत्री मोदी का दो दिवसीय कोलकाता दौरा आज से

एजेंसी, कोलकाता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को दो दिन के दौरे पर कोलकाता पहुंचेंगे। इस दौरान भाजपा की पश्चिम बंगाल इकाई से उनकी मुलाकात संभव है। भाजपा के सूत्रों के मुताबिक, प्रधानमंत्री को राज्य की ममता सरकार और तृणमूल कांग्रेस की तरफ से नागरिकता कानून को लेकर फैलाए गए भ्रम की जानकारी दी जाएगी। भाजपा इस कानून पर अपनी रणनीति के बारे में भी बताएगी। प्रधानमंत्री कार्यालय के मुताबिक, शनिवार को मोदी चार ऐतिहासिक इमारतों का लोकार्पण करेंगे, जिनकी हाल ही में मरम्मत की गई है। वहीं, कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट के कई कार्यक्रमों में भी शामिल होंगे। वे पेशंनरों को राहत राशि का वितरण भी करेंगे। शनिवार को कोलकाता में प्रधानमंत्री ओल्ड करंसी बिल्डिंग, बेलवेडरे हाउस, मेटकाल्फ हाउस और विक्टोरिया मेमोरियल हॉल का लोकार्पण करेंगे।

सीएए देश और संविधान को तोड़ने वाला कदम : प्रियंका

विरोध कर रहे छात्रों से पुलिस ने किया दुर्व्यवहार

बाबा विश्वनाथ के किए दर्शन

एजेंसी, वाराणसी

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी शुक्रवार को वाराणसी पहुंचीं। प्रियंका ने कहा कि सरकार ने जो किया है, वह संविधान को तोड़ने वाला, देश को तोड़ने वाला है। बच्चे उसके खिलाफ खड़े हैं। मैं उनकी आभारी हूं। उन्होंने कहा- पुलिस ने सीएए का विरोध कर रहे छात्रों से दुर्व्यवहार किया है। मासूम बच्चों पर गलत धाराएं लगाईं। पीड़ित

बच्चे यूनिवर्सिटी के छात्र हैं न कि दंगाई। छात्र शांतिपूर्वक तरीके से प्रदर्शन कर रहे थे। मुझे इन पर गर्व है। इससे पहले प्रियंका ने एयरपोर्ट से राजघाट के रास्ते में गाड़ी रोककर स्थानीय लोगों से मुलाकात की। रविदास मंदिर में पूजा की। वे श्रीमठ से निकलकर नाव से ललिताघाट पहुंचीं। लोगों से मुलाकात की और बाबा विश्वनाथ के दर्शन किए। हालांकि, इस दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं और मीडिया को मंदिर से दूर रखा गया, जिसका कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने विरोध किया। कार्यकर्ताओं ने अपनी ही पार्टी के नेताओं पर आरोप लगाया कि वे उन्हें प्रियंका से मिलने नहीं दिया। प्रियंका ने कहा- पुलिस ने मासूम बच्चों को 15 दिन तक जेल में रखा। मैं चंपक के पिता रवि और मां एकता से भी मिली। डीएम और पुलिस अधिकारियों का कैसा बर्ताव रहा, यह भी बताया। वे कौन सा नारा उस समय उपयोग कर रहे थे। यह भी सुनाया। छात्रों ने संघर्ष किया है और करते रहेंगे। वे देश की आवाज उठा रहे हैं।करीब आधे घंटे मंदिर में रहने के बाद प्रियंका नाव से पंचगंगा घाट स्थित श्रीमठ पहुंचीं। यहां उन्होंने सीएए विरोध के दौरान गिरफ्तार चंपक के माता-पिता एकता और रवि से मुलाकात की।

स्वतत्वाधिकारी मैसर्स जलतेदीप (जयपुर) की ओर से मुद्रक, प्रकाशक पदम मेहता द्वारा दीपक ऑफसेट प्रिंटर्स, एफ-77, करतारपुरा, सुदर्शनपुरा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित तथा जलतेदीप (जयपुर) कार्यालय ई-287, लालकोठी, जयपुर से प्रकाशित फोनः 2742116, फैक्सः5102727 संपादकः पदम मेहता